राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक–फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्.
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ९०

मेदपाटेश्वर श्री कुम्भकर्ण ग्रथित

पाठ्यरत्नकोश

(संगीतराज-ग्रन्थान्तर्गत)



प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

(२६)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ९०

मेदपाटेश्वर श्री कुम्भकर्ण ग्रथित

पाठ्यरत्नकोश

(संगीतराज-ग्रन्थान्तर्गत)

सम्पादक

श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए.

भूतपूर्व उपनिदेशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

१९६८ ई०

प्रथमावृत्ति १०००   मूल्य ३.५०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थानराज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ९०

मेदपाटेश्वर श्री कुम्भकर्ण ग्रथित

पाठ्यरत्नकोश

(संगीतराज-ग्रन्थान्तर्गत)

प्रकाशक
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)
१९६८ ई०

वि० सं० २०२४ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८९

प्रधान - संपादकीय

प्रस्तुत ग्रन्थ को प्रकाशित करते हुए हमें बहुत हर्ष और संतोष का अनुभव हो रहा है। ग्रन्थ के प्रकाशन में जो विलम्ब हुआ है उसका स्पष्टीकरण विद्वान् सम्पादक ने अपने सहज सौजन्य के साथ कर दिया है। इस विलम्ब के लिए प्रतिष्ठान की ओर से मैं विद्वानों से क्षमायाचना करता हूँ।

यह ग्रन्थ महाराणा कुंभा के महाग्रन्थ संगीतराज का एक अंश है जिसका प्रकाशन दो बार पहिले भी हो चुका है। अतः यह प्रश्न हो सकता है कि इसी अंश को फिर प्रकाशित करने की क्या आवश्यकता थी, विशेषकर उस समय जब कि संगीतराज के दो अन्य भाग वाद्यरत्नकोश और रसरत्नकोश अभी तक नितान्त अप्रकाशित हैं। इस प्रश्न का सांगोपांग उत्तर सम्पादक महोदय ने अपनी पाण्डित्यपूर्ण भूमिका में अत्यन्त सुन्दर शब्दों में व्यक्त कर दिया है। उन्होंने बतलाया है कि इस प्रति के उपलब्ध होने पर यह स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि ग्रन्थ की पाण्डुलिपियों में किस प्रकार कुम्भकर्ण के स्थान पर कालसेन के नाम का आगमन महाराणा कुंभा की मृत्यु के लगभग ४० वर्ष उपरान्त हुआ और उससे पूर्व की प्रतियों में (जिनमें से एक के आधार पर प्रस्तुत ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है) कुम्भकर्ण तथा उसकी वंशावली अक्षुण्ण एवं स्पष्ट रूप से विद्यमान है। इसके अतिरिक्त भी ग्रन्थ-सम्पादक श्रीगोपालनारायण बहुरा ने कई नये तथ्यों को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने जिस लगन और परिश्रम के साथ इस कार्य का सम्पादन किया है उसके लिए प्रतिष्ठान की ओर से वे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। इस ग्रन्थ के सम्पादन और प्रकाशन में श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी और महोपाध्याय विनयसागर ने भी बहुत परिश्रम किया है अतः उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ।

फतहसिंह

माघ शुक्ला अष्टमी, सं० २०२४
जोध र

प्रास्ताविक परिचय

महाराणा कुम्भकर्ण कृत सङ्गीतराज के प्रथम रत्नकोष अर्थात् पाठचरत्न-कोष के अब तक दो संस्करण निकल चुके हैं। प्रथम संस्करण, 'गङ्गा ओरियण्टल सिरीज' बीकानेर के ग्रन्थाङ्क ४ के रूप में, सन् १९४६ ई० में प्रकाशित हुआ था। इसके सम्पादक कीर्तिशेष डॉ० सी. कुन्हन राजा थे। यह संस्करण अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर में उपलब्ध संगीतराज की १२ प्रतियों में से दो प्रतियों के आधार पर तैयार किया गया था, जिनमें पाठचरत्नकोष का पूरा पाठ प्राप्त हो सका। विद्वान् सम्पादक ने अपनी प्रस्तावना में स्पष्ट स्वीकार किया है कि यद्यपि ग्रन्थ का प्रकाशन मेवाड़पति महाराणा कुम्भकर्ण की रचना के रूप में हुआ है, परन्तु इसमें कहीं भी उनका नाम नहीं आता है; यही नहीं, कृति के कर्ता का 'कालसेन' नाम से उल्लेख है और ग्रन्थ में कर्तृ-प्रशंसा के रूप में जो वंशावली दी गई है वह भी कुम्भकर्ण की प्रसिद्ध वंशावली से सर्वथा भिन्न है। ग्रन्थ के वस्तु-भाग और पुष्पिकाओं में भी जो विवरण दिए गए हैं वे भी कुम्भ-कर्ण के ज्ञात विवरणों से मेल नहीं खाते। परन्तु, ऐसी बहुत सी हस्तलिखित प्रतियां (पाठचरत्नकोष की नहीं) मौजूद हैं जिनके मूलपाठ में कुम्भा का नाम है और कालसेन का बिलकुल नहीं है। इनकी पुष्पिकाओं में भी उन्हीं तथ्यों का उल्लेख है जो महाराणा कुम्भकर्ण के विषय में विश्रुत हैं। परन्तु, ऐसी सभी पाण्डुलिपियां अपूर्ण एवं खण्डित हैं; ऐसी एक भी प्रति नहीं है जिसमें ग्रन्थ का आदिभाग उपलब्ध हो। यदि कोई ऐसी प्रति मिल जाय जिसमें ग्रन्थ का आद्य भाग प्राप्त हो और जिसमें ग्रन्थकर्ता का नाम कुम्भा दिया गया हो तो, निस्सन्देह, उसके पद्यों में महाराणा के पूर्वजों के नाम भी यथावत् मिल जावेंगे। अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर में संगीतराज की एक ही सम्पूर्ण प्रति है, जिसका लिपि संवत् १४२४ शाके (१५०२ ई०) है और लिपिकार रामेश्वर-सुत म्हालसा भट्ट है। यह प्रति कामगिरि स्थान में राजा कालसेन की नाटचशाला-स्थित नर्तकियों के पठनार्थ लिखी गई थी। शेष सभी प्रतियां, जिनमें कुम्भकर्ण-कृत पाठ वाली प्रतियां भी शामिल हैं, अपूर्ण एवं त्रुटित हैं।

दूसरा संस्करण 'हिन्दू विश्वविद्यालय नेपाल राज्य संस्कृत ग्रन्थमाला' के के अन्तर्गत सन् १९६३ ई० में निकला है। इसका सम्पादन डॉ० कुमारी प्रेम-

प्रास्ताविक परिचय

महाराणा कुम्भकर्ण कृत सङ्गीतराज के प्रथम रत्नकोष अर्थात् पाठ्यरत्नकोष के अब तक दो संस्करण निकल चुके हैं। प्रथम संस्करण, 'गङ्गा ओरियण्टल सिरीज' बीकानेर के ग्रन्थाङ्क ४ के रूप में, सन् १९४६ ई० में प्रकाशित हुआ था। इसके सम्पादक कीर्तिशेष डॉ० सी. कुन्हन राजा थे। यह संस्करण अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर में उपलब्ध संगीतराज की १२ प्रतियों में से दो प्रतियों के आधार पर तैयार किया गया था, जिनमें पाठ्यरत्नकोष का पूरा पाठ प्राप्त हो सका। विद्वान् सम्पादक ने अपनी प्रस्तावना में स्पष्ट स्वीकार किया है कि यद्यपि ग्रन्थ का प्रकाशन मेवाड़पति महाराणा कुम्भकर्ण की रचना के रूप में हुआ है, परन्तु इसमें कहीं भी उनका नाम नहीं आता है; यही नहीं, कृति के कर्ता का 'कालसेन' नाम से उल्लेख है और ग्रन्थ में कर्तृ-प्रशंसा के रूप में जो वंशावली दी गई है वह भी कुम्भकर्ण की प्रसिद्ध वंशावली से सर्वथा भिन्न है। ग्रन्थ के वस्तु-भाग और पुष्पिकाओं में भी जो विवरण दिए गए हैं वे भी कुम्भकर्ण के ज्ञात विवरणों से मेल नहीं खाते। परन्तु, ऐसी बहुत सी हस्तलिखित प्रतियां (पाठ्यरत्नकोष की नहीं) मौजूद हैं जिनके मूलपाठ में कुम्भा का नाम है और कालसेन का बिलकुल नहीं है। इनकी पुष्पिकाओं में भी उन्हीं तथ्यों का उल्लेख है जो महाराणा कुम्भकर्ण के विषय में विश्रुत हैं। परन्तु, ऐसी सभी पाण्डुलिपियां अपूर्ण एवं खण्डित हैं; ऐसी एक भी प्रति नहीं है जिसमें ग्रन्थ का आदिभाग उपलब्ध हो। यदि कोई ऐसी प्रति मिल जाय जिसमें ग्रन्थ का आद्य भाग प्राप्त हो और जिसमें ग्रन्थकर्ता का नाम कुम्भा दिया गया हो तो, निस्सन्देह, उसके पद्यों में महाराणा के पूर्वजों के नाम भी यथावत् मिल जावेंगे। अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर में संगीतराज की एक ही सम्पूर्ण प्रति है, जिसका लिपि संवत् १४२४ शाके (१५०२ ई०) है और लिपिकार रामेश्वर-सुत म्हालसा भट्ट है। यह प्रति कामगिरि स्थान में राजा कालसेन की नाट्यशाला-स्थित नर्तकियों के पठनार्थ लिखी गई थी। शेष सभी प्रतियां, जिनमें कुम्भकर्ण-कृत पाठ वाली प्रतियां भी शामिल हैं, अपूर्ण एवं त्रुटित हैं।

दूसरा संस्करण 'हिन्दू विश्वविद्यालय नेपाल राज्य संस्कृत ग्रन्थमाला' के के अन्तर्गत सन् १९६३ ई० में निकला है। इसका सम्पादन डॉ० कुमारी प्रेम-

लता शर्मा ने बड़े परिश्रम और योग्यता के साथ किया है। इस संस्करण को तैयार करने में भी अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर की बारहों प्रतियों को टटोला गया है, परन्तु पाठ-ग्रहण में उपयोग तीन ही प्रतियों का किया गया है। इनके अतिरिक्त 'भाण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट', पूना की एक अपूर्ण प्रति सं० ३६५ का पाठान्तर भी परिशिष्ट में दिया गया है। यह अपूर्ण प्रति बहुत काम की है। इसमें मूलपाठ शुद्ध है और कर्ता का नाम सर्वत्र कुम्भकर्ण ही लिखा है, कालसेन नहीं। पुष्पिकाओं में भी कुम्भकर्ण के पराक्रम और उसकी उपलब्धियों का ही उल्लेख है। प्रति में प्रायः पड़ी मात्राओं का ही प्रयोग किया गया है। बीकानेर की कालसेन-पाठ वाली प्रति में ऐसा नहीं है, अतः यह अपूर्ण प्रति उससे पुरानी होनी चाहिए। दुःख इसी बात का है कि यह पूरी नहीं है। इस संस्करण में पाठ्य और गीत दोनों रत्नकोषों का प्रकाशन हुआ है। जहाँ तक पाठ्यरत्नकोष का प्रश्न है, प्रायः डॉ० कुन्हन राजा वाले संस्करण का ही पाठ ग्रहण किया गया है; यत्र तत्र विदुषी सम्पादिका ने अपनी ओर से सम्भावित पाठ भी सूचित किए हैं और पाद-टिप्पणी में K. संकेत देकर डा० कुन्हन राजा द्वारा सुझाया गया पाठ भी अङ्कित कर दिया है।

इस प्रकाशन से बात इतनी ही आगे बढ़ी कि पाठ्यरत्नकोष की एक ऐसी प्रति का पता चल गया जो अन्य प्रतियों की अपेक्षा प्राचीन है और जिसके मूलपाठ और पुष्पिकाओं से कर्ता के रूप में महाराणा कुम्भकर्ण के नाम तथा उनके अभीष्ट वास्तविक पाठ का पता चलता है, और इसके आधार पर यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि पाठ और नाम-परिवर्तन में किस कला से काम लिया गया है। परन्तु, यह प्रति अपूर्ण है और इसके आधार पर उक्त संस्करण के परिशिष्ट में जो पाठान्तरों की तालिका दी गई है उससे विदित होता है कि इस प्रति में प्रथम अनुक्रमणिकोल्लास के 'आरम्भ-समर्थन नाम द्वितीय परीक्षण' के १३ वें पद्य से तृतीय छन्द उल्लास के ३ रे पद्य तक का ही पाठ प्राप्त है। इस अंश में सब मिलाकर सात पुष्पिकाएं हैं जिनमें ग्रन्थकर्ता के स्थान पर कुम्भकर्ण, महीमहेन्द्र कुम्भकर्ण या राजाधिराज श्री कुम्भकर्ण नाम आता है। परन्तु, यह सब होते हुए भी प्रथम अनुक्रमणिकोल्लास का 'कर्तृ प्रशंसा नाम प्रथम परीक्षण' इसमें उपलब्ध नहीं है, जिसमें ग्रन्थकर्ता महाराणा कुम्भकर्ण की वंशावली और प्रशस्ति-पद्य दिए हुए हैं। यही इस ग्रन्थ का कर्तृ विषयक-समस्या का निर्णायक अंश है। अतः ऐसी प्रति की प्राप्ति की इच्छा का प्रबल हो जाना स्वाभाविक था।

पिछले कई वर्षों से प्रतिष्ठान की 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' में संगीतराज के तृतीय रत्नकोष अर्थात् 'नृत्यरत्नकोष' के प्रकाशन का कार्य चल रहा था। इसके सम्पादक भारतीय विद्या के सुप्रसिद्ध विद्वद्वरेण्य प्रो. रसिकलालजी पारिख हैं। पुस्तक का प्रथम भाग, जिसमें मूलपाठ है, सन् १९५७ में ग्रन्थमाला के २४ ग्रन्थाङ्क के रूप में प्रकाशित हो चुका है। दूसरा भाग, जिसमें सम्पादक की सारगर्भित भूमिकादि सम्मिलित है, शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है। इस संस्करण में भी अनूप संस्कृत पुस्तकालय की तीन हस्तप्रतियों का उपयोग किया गया है और उन्हीं के आधार पर पाठ-सम्पादन हुआ है। विस्तृत भूमिका में नृत्यरत्नकोष (सामान्यतः संगीतराज) के कर्ता के रूप में कालसेन की वंशावली पर समसामयिक साक्ष्य और स्थलनाम-परीक्षण के आधार पर विचार किया गया है; इसी प्रकार महाराणा कुम्भकर्ण के जीवन, कृतित्व और ऐतिहासिक एवं सामरिक उपलब्धियों पर भी विशद विवेचन हुआ है। भूमिका के परिशिष्ट १ में सेन्ट्रल लायब्रेरी, बड़ौदा की हस्तलिखित प्रति सं० ९९३२, ९९३३ और ९९३४ में से पाठ्यरत्नकोष, रसरत्नकोष और वाद्यरत्नकोष के विविध उल्लासों के विभिन्न परीक्षणों की पुष्पिकाएं भी उद्धृत की गई हैं, जिनमें अविकल रूप से सभी पुष्पिकाएं महाराणा कुम्भकर्ण के नाम से समन्वित हैं। इससे विदित हुआ कि बड़ौदा ओरियण्टल इंस्टीटयूट की सेन्ट्रल लायब्रेरी में भी संगीतराज के कोषों की प्रतियाँ मौजूद हैं, जिनमें पाठ्यरत्नकोष की भी प्रति है।

१९६४-६५ ई० के सत्र की प्रतिष्ठान की ग्रंथ-क्रय-समिति की बैठक में जब सदस्य-रूप में श्री रसिकलालजी पारिख और ओरियण्टल इंस्टीटयूट, बड़ौदा के निदेशक, श्री भोगीलालजी साँडेसरा जोधपुर आए तो प्रतिष्ठान के तत्कालीन सम्मान्य सञ्चालक, मुनि श्री जिनविजयजी ने इन दोनों ही विद्वानों से उक्त प्रतियों के विषय में बात की। परिणामतः प्रतिष्ठान से माँग करने पर बड़ौदा के पुस्तकालय से 'पाठ्यरत्नकोष' की प्रति नियमानुसार प्राप्त हो गई और पूर्व-प्रकाशित दोनों संस्करणों से पाठ मीलान करके इस प्रति का सम्पादन करने का कार्य मुझे सौंपा गया। अपनी सुविधानुसार कार्य पूरा करके मैंने १९६६ ई० में सम्मान्य संचालकजी को प्रस्तुत कर दिया। उनका विचार इस पर बहुत कुछ विस्तार से लिखने का था, परन्तु अन्यान्य कार्यों में व्यापृत रहने के कारण वे इस कार्य को हाथ में न ले सके। अन्त में, जब १ जुलाई, १९६७ ई० से मैं और वे दोनों कार्य-निवृत्त हुए तो चलते समय उन्होंने 'पाठ्यरत्नकोष' का भी किंचित् प्रास्ताविक लिख कर कार्य पूरा कर देने का आदेश दिया। मैंने यह

सूचना नव-नियुक्त निदेशकजी को दी श्रौर उन्होंने सहर्ष इसे स्वीकार कर लिया। पाठ्यरत्नकोष के पहले से दो-दो संस्करण होते हुए भी तीसरा अभिनव संस्करण प्रकाशित करने का यही उद्देश्य श्रौर प्रकरण है।

बड़ौदा से प्राप्त ९९३२ संख्या वाली ८७ पृष्ठात्मक प्रति में पाठ्यरत्नकोष श्रौर गीतरत्नकोष दोनों कृतियाँ हैं। पाठ्यरत्नकोष पत्र ४० B पर समाप्त हो जाता है।

इस प्रति के विषय में एक विशेष बात यह है कि इसके अन्तिम पत्र सं० ८७ के पृष्ठ भाग पर यह उल्लेख है—

संगीतराजं

८७ श्रीसर्वविद्यानिधान कवीन्द्राचार्य्य सरस्वतीनां संगीतराज पाठ्यरत्नकोश-पुस्तकम् ०राम ८७

अर्थात् यह प्रति काशी के महान् विद्वान् सन्यासी कवीन्द्राचार्य के पुस्तकालय की है। कवीन्द्राचार्य शाहजहाँ के समकालीन थे। महान् विद्वान् होने के साथ-साथ वे बड़े धनवान् भी थे। उन्होंने बनारस में एक बहुत बड़े पुस्तकालय की स्थापना की थी। कृष्णभट्ट नामक ब्राह्मण उनका भण्डारी एवं कार्यकर्ता था। स्वयं कवीन्द्राचार्य श्रौर कृष्णभट्ट दोनों ही गोदावरी-तट पर किसी स्थान के रहने वाले थे। जब शाहजहाँ ने निजामशाही के अवशिष्ट परगनों को साम्राज्य में मिला लिया तो वे बनारस चले आये। कवीन्द्राचार्य के जीवनकाल में उनका पुस्तकालय निरन्तर समृद्ध होता रहा श्रौर देश-देश के पण्डित वहां आकर लाभान्वित होते रहे। सन्यासी होने के कारण कवीन्द्राचार्य के कोई बाल-बच्चा या उत्ताराधिकारी तो था नहीं, इसलिए उनकी मृत्यु के बाद वह पुस्तकालय छिन्नभिन्न हो गया। कुछ प्रतियाँ तो बनारस की गवर्नमेंट संस्कृत लाइब्रेरी में चली गईं श्रौर अन्य कई संस्थाओं तथा व्यक्तियों ने भी बहुत-सी प्रतियाँ प्राप्त कर लीं। यह भी असम्भव नहीं है कि बहुत सी प्रतियाँ विविध माध्यमों से विदेशों में भी चली गईं क्योंकि उन दिनों वहां के लोग ढेर-की-ढेर पुस्तकें यहां से खरीद-खरीद कर ले जाया करते थे। ऐसा महामूल्यवान् साहित्य का विपुल भण्डार उनकी आँखों से कैसे बच सकता था ?

सैण्ट्रल लायब्रेरी, बड़ौदा के श्री आर. अनन्तकृष्ण शास्त्री को इस पुस्तकालय की सूची स्व० महामहोपाध्याय गङ्गानाथ झा के पास १९१९ ई० में देखने को मिली। झा महोदय इसको अखिल प्राच्यविद्या सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में पूना ले जाने वाले थे। श्री शास्त्री ने इसकी रातों-रात नकल कर ली श्रौर

बाद के वर्षों में जहाँ भी मिलीं इस पुस्तकालय की प्रतियों को बड़ौदा की सेण्ट्रल लायब्रेरी के लिए प्राप्त कर-करके उन्हें सुरक्षित करते रहे। उन्हीं के प्रयत्नों के अन्तर्गत यह संगीतराज की प्रति भी उक्त लायब्रेरी में आकर जमा हुई।

परन्तु, अब यह विचारणीय है कि ये प्रतियाँ चित्तौड़ से कवीन्द्राचार्य के संग्रह में कैसे पहुँचीं ? आश्चर्य की बात तो यह है कि मेवाड़ के महाराणाओं के वंशपरम्परागत संग्रह में अर्थात् सरस्वती-भण्डार, उदयपुर में संगीतराज की कोई पूर्ण या अपूर्ण प्रति प्राप्त नहीं है; केवल एक गुटके में, जो वि० सं० १६९४ में लिपीकृत है, रसरत्नकोष का एक अंश गीतगोविन्द की टीका के साथ ही लिखा मिलता है।

संगीतराज के अन्तिम रसरत्नकोष के अन्त में ग्रन्थ के सम्पूर्ण होने की तिथि इस प्रकार सूचित की गई है—

> श्रीमद्विक्रमकालतः परिगते नन्दाभ्रभूतक्षितौ (९ ० ५ १)
> वर्षेऽक्षाद्रिचनेन्दुशाकसमये संवत्सरे च ध्रुवे। (४ ७ ३ १)
> ऊर्जे मासि तिथौ हरे रविदिने हस्तर्क्षयोगे तथा
> योगे चाभिजिति स्फुटोऽयमभवत् सङ्गीतराजाभिधः ॥१५॥

> ग्रन्थेऽत्र पञ्चोत्तररत्नकोशा, उल्लाससंज्ञा(ख्या) खलु विंशतिश्च।
> परीक्षणानां गदिता ह्यशीतिः, संख्या सहस्राणि च षोडशाऽत्र ॥१६॥

इसके अनुसार संगीतराज विक्रम संवत् १५०९ में कार्तिक मास कृष्णपक्ष की ११, रविवार को तदनुसार शक संवत् १३७४ में समाप्त हुआ था। अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय में लिपि-समयोल्लिखित प्रति में लिपिकर्ता का पुष्पिकोत्तार लेख इस प्रकार है—

> शाके वेदकराम्बुधिक्षितिमिते संवत्सरे दुन्दुभौ
> चैत्रे मासि सिते रवौ फणितिथौ ब्राह्मे तथायुष्मति।
> योगे वालवसंज्ञके तिथिदले कामेश्वरीपर्वते
> कामाक्षावनदेवपादयुगलध्यानाप्तराज्यश्रियः॥
> लक्ष्मीपङ्कजभूभुवोरनुदिनं सम्पादयन्नैक्यतां
> स्वयंभू(स्वभू)योनिपुरेषु लोकमहितं विस्फारयन् सद्यशः।
> आस्ते यो तामराजतनयः श्रीकालसेनो विभु-
> स्तद्भाण्डारनिकेतनस्थितममुं सङ्गीतराजं सुधीः॥
> श्रीमद्गार्ग्यकुलप्रजो निधिकुलावासालया देवता-
> पादद्वन्द्वविराजितैकसुमनाः श्रीरामचन्द्रात्मजः।

सद्विज्ञाननरेश्वराञ्चितगुणः सन्मानशाली लसद्-
युक्तिः प्रोद्भवचातुरीचतुरवाक् श्रीम्हालभट्टोऽलिखत् ॥

स्वस्ति श्रीनृपशालिवाहनशके १४२४ दुन्दुभीसंवत्सरे चैत्र शुद्ध ५ रवौ रोहिणीनक्षत्रे आयुष्मान् (मति) नाम योगे बालवकरणे एतस्मिन् दिने कामगिरिस्थाने राज्ञः श्रीकालसेनस्य नाट्यशालास्थितनर्त्तकीनां पठनार्थे निधिवासस्थितरामेश्वरभट्टसुतम्हालसाभट्टेन पुस्तकं लिखितम् ॥

इस पुष्पिकोत्तर लेख में निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं—

(१) यह प्रति शक संवत् १४२४ (विक्रम संवत् १५५९; १५०२ ई०) में लिखी गई थी अर्थात् संगीतराज के रचनाकाल से ५० वर्ष बाद और महाराणा कुम्भकर्ण की मृत्यु के ३४ वर्ष बाद।

(२) यद्यपि बीच-बीच के वस्तुभाग में रचयिता के रूप में अथवा उदाहरण के श्लोकों में प्रायः सर्वत्र ही कुम्भकर्ण के स्थान पर कालसेन, कृष्णराज, कालुजि आदि नाम लिख दिये गये हैं, परंतु इस अंतिम लेख में यह नहीं लिखा गया है कि सङ्गीतराज का कर्ता कालसेन था अथवा लिपिकर्ता ने कालसेन-कृत संगीतराज की ही प्रतिलिपि तैयार की है।

(३) तामराज के पुत्र श्री कालसेन के भण्डार निकेतन में स्थित संगीतराज की प्रति को लिपिकार ने लिखा है; अर्थात् कालसेन नृप के भण्डार (पुस्तकागार) में पहले से ही संगीतराज की प्रति मौजूद थी और उसी से यह प्रति तैयार की गई है।

(४) लिपिकर्ता गार्ग्यकुलोत्पन्न रामचन्द्रात्मज म्हालभट्ट है जो अपने आपको युक्तिः 'लसद् प्रोद्भवचातुरीचतुरवाक्' कहता है अर्थात् वह जुगत बैठाने और चतुराई से बातचीत करने में तेज़ था।

(५) यह प्रति कालसेन की नाट्यशाला-स्थित नर्तकियों के पठनार्थ लिखी गई थी।

कालसेन कौन था, कहाँ का राजा था और ग्रन्थ में वर्णित उसके पूर्वजों और स्थल-नामों की संगति बैठाने के लिए विद्वान् अपने-अपने अनुमान लगा रहे हैं, परन्तु वे इस बात पर एकमत हैं कि वह दक्षिणदेश का था; वह पण्डितों का सम्मान करने वाला और कलाप्रेमी भी रहा होगा। उसकी नाट्यशाला भी थी, जिसमें कितनी ही नर्तकियाँ नियमित रूप से नियत थीं। उनके लिए सम्बद्ध विषय के पठन-पाठन की भी व्यवस्था थी। राजा का विद्वन्मण्डल भी होगा और उसी के सदस्य म्हालभट्ट ने अपनी चतुराई से जुगत बैठा कर महाराणा कुम्भकर्ण-कृत संगीतराज की प्रति को कालसेन के नाम का जामा पहना दिया

होगा। एक प्रति पूरी तैयार कर दी और शेष अधूरी प्रतियों में भी यथावसर हरताल फेर कर कालसेन का नाम लिख दिया गया; नई प्रति में कहीं-कहीं रिक्त स्थान भी छोड़ दिया गया, जैसा कि प्रत्यक्ष निरीक्षण करने वाले विद्वानों ने लिखा है। ऐसा करने का उद्देश्य यह रहा होगा कि चित्तौड़ अथवा कुम्भलगढ़ से, जहाँ भी मूल प्रतियां रही होंगी, हटाने वाले ने सब-की-सब प्रतियां हटाई थीं। अब, उस बात को ३०-४० वर्ष हो चुके थे और परिवर्तनकारियों ने सोचा होगा कि हरताल फेर कर कुम्भकर्ण का नाम सहज ही भुलावे में डाला जा सकेगा और उनके अभिभावक कालसेन की योग्यता प्रदर्शित करके राजनर्तकियों को आसानी से अभिभूत किया जा सकेगा। इसी भावना के वशीभूत होकर उन 'युक्तिप्रोद्भव-चातुरी-चतुरों' ने इतना बड़ा छद्म कर डाला।

दुर्भाग्य से महाराणा कुम्भकर्ण के अन्तिम दिन अच्छे नहीं बीते। उलझनभरी राजनीति ने उनके मन और मस्तिष्क को अस्वस्थ कर दिया था। उनकी राज्य-लोलुप संतान ने स्थिति का संतुलन बिगाड़ कर अनुशासन को उतार फेंका था। ऐसे अवसरों पर अवसरवादी सब कुछ भूल-भुला कर स्वार्थ-साधनतत्पर हो जाते हैं। महाराणा की पण्डितमण्डली विच्छिन्न हो गई होगी; जिसके जो कुछ हाथ लगा, ले भागा। इसीलिए तो, शायद, उदयपुर के शास्त्र-(सरस्वती) भण्डार में कुम्भकर्ण की इतनी रचनाओं में से इक्की-दुक्की की ही प्रतिलिपि प्राप्त होती है, बाकी सब इधर-उधर हो गईं। हाँ, शिलोत्कीर्ण अक्षरों को उठा कर ले जाना आसान नहीं था और, इन्हीं के सहारे उस महान् साहित्यकार की कतिपय कृतियों का धीरे-धीरे पता भी लग रहा है।

अस्तु, किसी भी तरह ये प्रतियां दक्षिण में पहुँच गईं और कुछ वहाँ के विद्वत्परिवारों में यथावत् रहीं और कुछ उक्त प्रकार से विकृत की हुई भी वहीं रहीं। कवीन्द्राचार्य और उनका भण्डारी कृष्णभट्ट भी दाक्षिणात्य थे। उनके संग्रह में ऐसी महत्त्वपूर्ण प्रामाणिक और अविकलित कृतियों का संग्रह होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

जैसा कि ऊपर लिखा गया है, कवीन्द्राचार्य के निधन के उपरान्त उनके पुस्तकालय की सामग्री इधर-उधर हो गई थी। बीकानेर के अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय में भी उक्त संग्रह की अनेक प्रतियां हैं, जिन पर कवीन्द्राचार्य का नाम लिखा हुआ है। बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह (१६६९-१६९८ ई०) बड़े विद्वान्, विज्ञ और विद्या एवं विद्वत्प्रेमी थे। उनके यौवराज्यकाल में ही वे पण्डितों और कवियों से घिरे रहते थे और उनको निवाजते रहते थे। वे

बादशाह शाहजहाँ और औरंगजेब के समकालीन थे। विद्वान् शाहज़ादा दाराशिकोह से भी उनका सम्पर्क रहा होगा। कवीन्द्राचार्य दाराशिकोह के गुरु थे। उनके संग्रह के ग्रन्थों का बीकानेर के पुस्तकालय में आने का एक यह भी स्रोत हो सकता है।

महाराजा अनूपसिंह बादशाह औरंगजेब की दक्षिण की मुहिम में साथ रहे थे। उन्होंने गोलकुण्डा के किले को फ़तह किया था और वे गोलकुण्डा, बीजापुर, सागर, अडोनी तथा औरंगाबाद के सूबेदार भी रहे थे। जब शाही सेना ने इन इलाकों पर अधिकार कर लिया तो, कहते हैं, अडोनी के ब्राह्मणों ने, इस भय से कि उनके पवित्र शास्त्र यवनों के हाथों पड़ेंगे, अपने संग्रहों को नर्मदा में प्रवाहित करने का विचार किया। उनके इस संकल्प की जब महाराजा अनूपसिंह को खबर मिली तो उन्होंने उन विप्रों के मुखियाओं को बुला कर समझाया और उनकी शास्त्र-सम्पदा को सुरक्षित रखने का आश्वासन देकर वह विपुल संग्रह हस्तगत कर लिया। अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय का एक बड़ा भाग इसी सम्पदा से समृद्ध है। इस तथ्य की पुष्टि में यह प्रमाण भी प्रत्यक्ष है कि इस पुस्तकालय के अधिकांश ग्रन्थों के निर्माता महाराष्ट्र हैं। बहुत सम्भव है, संगीतराज की जो बारह प्रतियां अब इस पुस्तकालय में प्राप्त हैं वे अनूपसिंहजी की इसी उपलब्धि का परिणाम हों। इन महाराजा का देहान्त १६९८ ई० में अडोनी में ही हुआ था।

संगीतराज की प्रतियों के इस प्रकार विकृत हो जाने और बिखर जाने की यही कहानी है। अब तक प्रकाशित संस्करणों के विद्वान् सम्पादकों ने महाराणा के जीवन, चरित्र, निर्माण-कार्यों और पराक्रमों पर पर्य्याप्त प्रकाश डाला है; साथ ही, कालसेन के मुकाबले में संगीतराज का कर्तृत्व उनका ही सिद्ध करने में भी कोई कसर नहीं उठा रखी है।[1] परन्तु, इन सभी के मन में यह कसमसाहट अवश्य रही है कि यदि पाठ्यरत्नकोश की कोई ऐसी पूर्ण अविकृत प्रति मिल जाती कि जिसमें कुम्भकर्ण रचित मूलपाठ और उनकी सही वंशावली प्राप्त होती तो इस प्रश्न पर दिवास्फीत प्रकाश पड़ता और प्राप्त प्रतियों में परिवर्तन होने के छद्म का भी पर्दा फाश हो जाता। बड़ौदा की लाइब्रेरी में संगृहीत प्रति प्रायः इन सभी की दृष्टि से बची रह गई। इसी की पूर्ति के लिए यह संस्करण प्रकट करना आवश्यक हुआ। इसमें मूलपाठ का आधार तो बड़ौदा

१. कालसेन कौन था, इस विषय में बीकानेर की पत्रिका 'विश्वम्भरा' के 'रेऊ विशेषांक' में प्रकाशित श्री व्रजमोहन जावलिया, एम. ए., साहित्यरत्न का लेख पठनीय है।

वाली प्रति को रखा गया है (जिसका विवरण ऊपर दिया जा चुका है) और पाठान्तर डॉ० कुन्हन राजा एवं डॉ० प्रेमलता वाले संस्करणों से दिए गए हैं, जो अनूप संस्कृत लाइब्रेरी की उन सभी प्रतियों पर आधारित हैं जिनमें कालसेन के पक्ष में पाठ-परिवर्तन किया गया है। इससे यह सहज ही ज्ञात हो जायगा कि मूल पाठ क्या था और उसको किस प्रकार परिवर्तित किया गया है। डॉ० कुन्हन राजा द्वारा स्वीकृत या संभावित पाठ K. अक्षर से सूचित करते हुए डॉ० प्रेमलता शर्मा ने तीन प्रतियों को आधार बना कर पाठ-सम्पादन किया है और गृहीत पाठ का अतिरिक्त दो प्रतियों के A. और B. संकेतों से सूचन किया है। इसके अतिरिक्त डॉ० शर्मा ने भाण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीटच्यूट, पूना वाली त्रुटित प्रति के पाठान्तर अपनी पुस्तक के परिशिष्ट १ में दिए हैं। हमने इस संस्करण में पाठान्तरों के जो संकेत दिए हैं उनकी तालिका इस प्रकार है—

P. डा० प्रेमलता के संस्करण में स्वीकृत पाठ
A. डॉ० प्रेमलता द्वारा A प्रति का पाठान्तर
B. " " B " "
K. डॉ० कुन्हन राजा द्वारा स्वीकृत या संभावित पाठ
BO. डॉ० प्रेमलता द्वारा भाण्डारकर प्रतिष्ठान की खंडित प्रति से दिया हुआ पाठान्तर

इस प्रकार इस संस्करण में पाठ्यरत्नकोष के यावत्प्रकाशित पाठों को मूल पाठ से मिलाया जा सकेगा। प्रति में जो पाठ अशुद्ध या अग्राह्य लगा वह भी प्रतिस्थित पाठ के रूप में नीचे सूचित किया गया है।

संगीतराज का कर्तृत्व महाराणा कुम्भकर्ण के पक्ष में सिद्ध करने के लिए यह संस्करण अपने आप में एक अकाट्य प्रमाण है। इसके अनुक्रमणिकोल्लास नामक पहले उल्लास के कर्तृप्रशंसा-संज्ञक प्रथम परीक्षण में ग्रन्थकर्ता महाराणा कुम्भकर्ण की प्रशस्ति में एवं अलंकारोल्लास में उदाहरण के रूप में जो श्लोक दिए गए हैं उनमें से बहुत से 'एकलिंग माहात्म्य' (उदयपुर सरस्वती भण्डारस्थ प्रति सं० १४७७) में मिलते हैं। जैसे कर्तृप्रशंसा के पद्य सं० ३४ से ३८ तक के इस एकलिंग-माहात्म्य में राजवर्णन के पद्य १९९ से २०३ तक हैं। एकलिंग-माहात्म्य का सङ्कलन महाराणा कुम्भकर्ण के समय में ही हुआ था और इसमें महाराणा मोकल तथा कुम्भकर्ण की विविध शिलोत्कीर्ण प्रशस्तियों एवं अन्य रचनाओं में से भी श्लोकों को सङ्कलित किया गया है। अन्य श्लोकों की भी शब्द-रचना एवं वस्तु में ऐसा साम्य है कि उनको महाराणाओं के महनीय वंश के कीर्ति-परक ही मानना पड़ेगा। इसी प्रकार गीतगोविन्द-व्याख्या-रसिकप्रिया' और चण्डीशतक व्याख्या में से भी बहुत से प्रशस्ति-पद्य एकलिंग-माहात्म्य में मिलते हैं।

इसके अतिरिक्त पाठ्यरत्नकोष में ही एक श्लोक अन्त:साक्ष्य के रूप में गूढरीत्या गुम्फित है जो 'युक्ति-प्रोद्भवचातुरी-चतुरों के भी चक्षुर्गत नहीं हो सका और अपने मूलस्वरूप में उन सभी प्रतियों में यथावत् बना रहा जिनमें कुम्भकर्ण के नाम को कालसेन में बदला गया है। यह चतुर्थ उल्लास के द्वितीय परीक्षण का अन्तिम पद्य (७१; पृ. ७८) है—

न्यस्य लक्षणसङ्घातं यस्मिन् मेने कृतार्थताम् ।
समुद्रः स्वस्य तेनायं कृतो लक्षणसंग्रहः ॥

'समुद्र ने जिसमें अपने लक्षणसङ्घात को रख कर अर्थात् कुम्भ में रख कर अपने को कृतार्थ माना उसके द्वारा यह लक्षण-संग्रह रचा गया।

स्पष्ट है कि सन्दर्भित न्यसन-क्रिया कुम्भसम्भवा ही हो सकती है' काल-सम्भवा नहीं।

पाठ्यरत्नकोष के वस्तु-विवेचन एवं अन्य विषयों पर पूर्व-प्रकाशनों में सविस्तर विचार हुआ है, जिनकी प्रस्तावनाएं पठनीय हैं। इस संस्करण का उद्देश्य, जैसा कि पहले निवेदन किया गया है, पाठ्यरत्नकोष के मूल अविकृत पाठ को प्रस्तुत करने मात्र का है, जो संगीतराज के कर्तृत्व का निर्णायक मुद्दा है। 'चण्डीशतक वृत्ति' के प्रास्ताविक में महाराणा कुम्भकर्ण की साहित्यिक प्रवृत्तियों एवं अन्य बातों का विवरण हम दे चुके हैं। इस आवेदन में उन सब को दोहराना चर्बितचर्वण मात्र होगा।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के निवृत्त सम्मान्य सञ्चालक मुनि श्री जिनविजयजी महाराज ने कृपा करके मुझे इस प्रति के सम्पादन का कार्य देकर अध्ययन का अवसर दिया, अत: मैं उनको परम श्रद्धा सहित प्रणामाञ्जलि अर्पित करता हूँ। वर्तमान निदेशकजी ने भी इस कार्य को पूरा करने में जो सहयोग और सौहार्दपूर्ण व्यवहार किया तदर्थ उनको भी धन्यवाद प्रस्तुत करता हूँ। मेरे कार्यकाल में और निवृत्युपरान्त जिन विभागीय सहयोगियों ने मुझे अपेक्षित सहायता दी उनका आभारी हूँ।

आशा है, यह पुस्तक विद्वान् गवेषकों के लिए सहायक सिद्ध होगी। इति

जोधपुर
कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा;
वि०सं० २०२४

विनिवेदक
गोपालनारायण बहुरा

विषयानुक्रम

ओरिएन्टल इन्स्टीटयूट, बड़ौदा के संग्रह की प्रति का आदि पत्र

श्रीराजाधिराजश्रीरिराजमत्तगजसिंहेन मेदपाटसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन अभिनवभरतेन अश्वप
तिनरपतिगजपतिराजत्रयतोडरमल्लेन राजगुरुचायगुरुसेलगुरुइत्यादिविरुदावली विराजमानेनम
हीमहेंद्रश्रीकुंभकर्णेन विरचिते संगीतराजे षोडशसाहस्र्यां संगीतमीमांसायां पाठ्यरत्नकोशे अलंकारो
ल्लासे दोषगुणोल्लासः पाठ्यरत्नकोशश्च समाप्तिं समगादिति विततमतीनामन्तिमतसिद्धिः

नित्यं यः सनकादिभिः स्वहृदये ध्येयः परो निर्गुणो नादो नादतसंज्ञकः परमचिद्रूपः स्वतो वाकलः ॥ सो
व्याद्वः सगुणाद्भुतश्च तनया श्रुत्यादिगम्यात्मतो बिन्दुरूक्तेन वाद्विहतपरशिवस्तन्मूर्तिरापतत्कुलात्
पाठ्यात्मकत्वाङ्गीतस्य अ धन्यात्वाद्यन्तयोः ॥ तस्मादनुततः पूर्वं तन्निरूपणमिष्यते ॥ आद्यतत्स्वरूपं
परं ज्ञात्वा वितन्वे परमश्नुते ॥ चिदात्मा तमहं वंदे नादं ब्रह्मादिवंदितं ॥ अहरिहरहिरण्यगर्भो यस्य विव
र्तः पुरा पुराविदा गदितः ॥ वाचामविषयरूपः स कथं नादो विदां गम्यः ॥ ४ ॥ तत्र तत्स्थानसमाहतिः

ओरिएन्टल इन्स्टीटच्यूट, बड़ौदा के संग्रह की प्रति का अन्तिम पत्र

संगीतराजे.

श्रीसर्वविद्यानिधानकवीन्द्राचार्यसरस्वतीनां संगीतराजे पाठ्यरत्नकोशपुस्तकम्

ओरिएन्टल इन्स्टीटच्यूट, बड़ौदा के संग्रह की प्रति के अन्तिम पत्र का पृष्ठ भाग

मेदपाटेश्वर राजराजेन्द्र श्रीकुम्भकर्ण विरचित

सङ्गीतराज

ग्रन्थान्तर्गत प्रथम

पाठयरत्नकोश

१. अनुक्रमणिकोल्लास–कर्तृप्रशंसा नाम प्रथम परीक्षण

॥ श्रीगणेशशारदाभ्यां* नमः ॥[1]

उद्यद्भास्वच्छतप्रख्यं महो माहेश्वरं नुमः ।
यत्प्रकाशे प्रकाशन्ते भक्तराजीवराजयः ॥ १ ॥
यो गीतानुगतौघतत्त्वपरमो[2] वाद्यावनद्धानना[3]–
नन्दा[4]द्येकघनोक्तरूपशुषिरो नृत्यप्रधानोऽव्ययः ।
भास्वत्सर्वरसैकगम्यमहिमा विभ्राजते योगिभिः
सङ्गीताय शिवाय शुद्धमहसे तस्मै परस्मै नमः ॥ २ ॥
निर्मथ्यागमसागरं परिलसद्विज्ञानमंथाद्रिणा
सङ्गीतामृतमुज्जहार जगतामत्यद्भुतानन्ददम् ।
स्फूर्ज्जन्मोहमहाहिदष्टजनतातापापनुत्यै नम–
स्तस्मै श्रीभरताय दिव्यमुनये स्याच्चन्द्रचूडात्मने ॥ ३ ॥
यो वेदांश्चतुरोऽवगाह्य चतुरो वक्त्रैश्चतुर्भिश्चतु–
र्वर्गाप्त्यै चतुरस्रमुख्यरुचिरं वर्णैश्चतुर्भिर्युतम् ।
विज्ञानैकनिकेतनाय भरताचार्याय राजोचिता[5]–
चारार्हं चतुरङ्गनृत्यमदिशत्तस्मै नमो ब्रह्मणे ॥ ४ ॥

प्रतिस्थित पाठ— *गणेशसारदाभ्यां ।

1. P. श्रीगणेशाय नमः। श्रीवनचामुण्डायै नमः । श्रीदत्तात्रेयाय नमः । श्रीकामाक्ष्यै नमः । श्रीभरताचार्याय नमः । संगीताधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः । स्वस्ति शारदायै नमः ।
B. श्रीगणेशाय नमः । दत्तात्रेयाय नमः ।

2. P. गीतानुगतौ (तो) घनत्वपरमो । 3. P. नद्धाननो । 4. P. नन्दा (न्द्या) द्यैक-ततोक्तरूपसुखि(षि)रो; B. ··· शिखरो । 5. P. राज्ञोचिता ।

श्रुत्यादिस्वविभूतिभिर्ज्जगदिदं व्याप्यैव नित्यस्थिता[1]
दुःखो[१B]न्मूलनमूलहेतुरखिल[2]स्वर्वासिवन्द्यप्रिया ।
ब्रह्मानन्दरसातिशायिसुखदा ब्रह्मादिभिः संस्तुता
विद्या काचन नूतना विजयते सङ्गीतरूपा शिवा ॥ ५ ॥

अस्त्येकलिङ्गाप्तवरप्रसादः[3]
श्रीबैजवापान्वयदुग्धसिन्धुः[4] ।
यो बिभ्रदत्युज्ज्वलधामराज–
रत्नानि रत्नाकरतां बिभर्त्ति ॥ ६ ॥

तत्रोदितो मन्दिरमिन्दिराया–
[5]श्चित्रं स बप्पो[5] द्विजराज आसीत् ।
तत्तत्[6]क्षमाभृत्कमलाकरस्य
प्रकाशने भासुरवासरेशः ॥ ७ ॥

तस्मिस्ततः पल्लवितः प्रतापैः
प्रभूतशोभी[7] यशसां प्रतानैः ।
वनीयकप्रत्तधनैः[8] फलाढ्यो[9]
हमीर[10] नामाऽजनि कल्पवृक्षः ॥ ८ ॥

अमुष्योर्वीभर्त्तुः* प्रतिभटचमूः सङ्गरमुखे
समुल्लासिप्रासप्रमुखधृततत्तत्प्रहरणा* ।
कराग्रप्रोद्भूता[11] चिररुचिसकाशासिफलके–
ऽनुबिम्बव्याजेन प्रविलयमगादद्भुतमहो ॥ ९ ॥

तन्नन्दनो निन्दितचन्दनेन्दुः[12]
कुन्दावदातैर्यशसां कदम्बैः ।
श्रीक्षेत्रसिंहः[13] प्रबलारि[२A]वर्ग–
स्वर्गार्गलाभेदनकृन्नृसिंहः ॥ १० ॥

प्रतिस्थित पाठ— ९. *अमुष्योर्बीभर्त्तुः । *प्रहरण ।

---

1. P. नित्यं स्थिता । 2. P. रखिलं (ल) । 3. P. श्रीवत्सदेवाप्तवरप्रसादो । 4. P. ऽस्ति व्याघ्रचामीकरवंशसिन्धुः । 5.–5. P. श्रीतामराजो । 6. P. चित्रं । 7. P. प्रसूनशोभी । 8. P. विनायक०; A. वनीयेक०; B. वनयक० । 9. फलाढ्य 10. P. आमोद । 11. P. प्रोद्धु (द्धू)ता । 12. K. शारदेन्दुः । 13. P. श्रीरामनामा ।

स्वच्छन्दोद्धत[1]चण्डवेगपवनप्रख्यातिविख्यातिभृत्-
खड्गाग्रप्रविघूर्णनाऽनवरतप्राज्यापितोद्घट्टनम्[2] ।
क्षत्राकृत्युड*सङ्घमुज्ज्वलयितुं श्रीमेदपाटाम्बर[3]-
व्यापिम्लेच्छघनाभ्रसङ्घमनघः प्रभ्रंशयामास यः ॥ ११ ॥

[4]लक्षस्तदीयस्तनयो वलक्ष-
पक्षक्षपा*[4]जीवितकृत्सदृक्षः ।
[5]त्र्यक्षप्रसादाप्तविपक्षपक्ष-
च्छेदैकदक्षः[6] क्षणयुक्सपक्षः ॥ १२ ॥[7]

निर्दूषणस्यापि सतोऽस्य नून-
मिदं जना वाच्यमुदाहरन्ति ।
प्रत्यर्थिकीर्त्तिप्रमदाहृतौ यन्-
मृधे मृधे*कर्म[8] जगत्प्रसिद्धम् ॥ १३ ॥

यः प्रत्यहं तुल्यसुवर्णराशि-
दानेन देवैश्चकितं व्यलोकि ।
कदाचिदाच्छिद्य नु नो निवास-
गिरिं द्विजेभ्यः ख [लु]* दास्यतीति ॥१४॥

अमुं गयाया जगतीविमुक्ति-
*हेतोर्विमुक्तेर्यवनानुरोधात् ।
शशंसुरस्यान्वयिनः परेऽपि
जेष्यन्ति देवा यवनानिति[9] द्राक् ॥ १५ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ११. *क्षत्राकृत्युदु । १२. *क्षिपा । १३. *मृधै । १४. *'लु' नहीं है । २५. *हेंतो ।

---

1. P. कल्पान्तोद्धत । A. कल्पातोद्धत । 2 A. प्रज्यापितो०; B. प्रज्यापितोद्घटनं; K. प्रज्ञापितोद्घाटनं । 3. P. श्रीब्रह्मशैलाम्बर० । 4-4. P. श्रीपेडराजस्तनयस्तदीयः शुक्लक्षपा० । 5. P. अक्ष० । 6. P. दाक्ष्यः (दक्षः) । 7. इस पद्य के आगे P. और K. में निम्न पद्य है, जो प्रति में नहीं है ।

ततोऽवनिं पूर्वजराजगुप्ता*मुल्लासयन् द्राक्फलिनीं* प्रतापैः ।
श्रीम्हाङ्गराजः क्षितिपालपालः पद्मावतीप्राणपतिः समासीत् ॥ १३ ॥

8. P. मे सु० । 9. P. यवनानति ।

---

*–*A. B. मुल्हास्यधान्द्रीफलिनीं ।

[1]ततो मोकलो लोकपालानुभावो[1]
भुवो भारजातस्य वोढाऽऽविरासीत् ।
जगन्मङ्गलश्रीशसे[२B]वानुभावा–
ज्जगन्मङ्गलं यं जगुर्ज्जन्मतोऽपि ॥ १६ ॥
दिग्दन्तावलदन्ति[2]कान्तिहरणप्रावीण्य*वित्[3]कीर्त्तिना
तत्तद्राजगुणैकदेशमिलनप्रेप्सेष्टसन्मूर्तिना ।
के वाऽन्ये सदृशा भवन्तु गुणिनानेन क्षमापालका
ग्रामीणीकृतराजकेन[4] कवयः किं साम्यतः[5]श्राम्यथ ॥ १७ ॥[6]
पूर्वराजगुणान् सर्वान् एकत्रस्थान् दिदृक्षुणा ।
निर्मितो विधिनाऽतोऽयं[7] सर्वराजगुणातिगः ॥ १८ ॥
कृतेऽमुना कृते सम्यक् कलिना* लुप्तकेलिना ।
न कालोऽस्य चिरं स्थातुमिति स्वर्गातिथिः कृतः ॥ १९ ॥
ततस्तं तं विनिर्जेतुकामः काम इवापरः ।
कुम्भकर्णोऽस्ति[8] तत्पुत्रो राजा साम्राज्यभाजनम् ॥ २० ॥
गर्ज्जन्मदोत्सिक्तगजोर्मिमालि[9]–
तौरुष्क[10]सैन्यार्णवमध्यसंस्थम् ।[11]
श्रीमेदपाटावनिमुद्धरन्तं[12]
वाराहमाद्यं[13] यमिह स्तुवन्ति ॥ २१ ॥
अपूर्वा दूतिका काचित् खड्गावल्यस्य* भूपतेः ।
अनघान्[14]निशि या[15] चित्रं तत्परान् कुरुते परान् ॥२२॥

प्रतिस्थित पाठ— १७. *प्राविण्य । १७. *ग्रामीणि । १९. *केलिना । २२ *खड्गाव-ल्लयस्य ।

1–1. P. ततस्तामराजोऽष्टदिक्पानुभावो । 2. P. दन्त । 3. B. प्राविण्य॰ 4. B. ग्रामणी॰ । 5. B. शाम्यतः । 6. P. में पद्य १७ के बाद निम्न पद्य और है, जो प्रति में नहीं है ।

यस्मिन् शासति काश्यपीं नयपरे श्रीरामचन्द्रो नु किं
लोकोक्तिः परयोषिदीक्षणकृतभ्रातृत्वमेतीत्ययम् ।
किं सत्सत्यतया त्रिशङ्कुतनयः श्रीजामदग्न्यो नु किं
प्रत्यर्थि(प्र)नरेश्वरान्तकरणं शार्दूलविक्रीडितम् ॥ १९ ॥

7. P. तोयं(सोऽयं) । 8. P. कालसेनोऽस्ति । 9. P. गजोर्मिमाल॰ । 10. B. तौरष्क । 11. P. सैन्यार्णवमध्यमग्नाम् । 12. P. श्रीब्रह्मशैला॰ । 13. P. वराहमाद्यं । 14. P. अनम्रान् । A. अनमान हि भियया । 15 P. हि भिया ।

अपकुर्वन्नयं बिभ्रन्नुपकर्त्ता[1] रिपुष्वपि [३A]।
त्याजयन् पूर्ववनिताः संयोजयति तान् भिया ॥ २३ ॥
मत्सैन्यैर्लुण्ठमानेऽस्मिन्[2] मालवे[3] मालवोऽपि किम् ।
[4]इति सारङ्गनगरं[4] निःशेषं[5] कृतवानमुम् ॥ २४ ॥
[6]मालवाधिपति*दन्तिवक्त्रतः तत्तदम्बुनिवहस्य[6] निभेन ।
चित्रमेष भुवने निजकीर्त्तेबीजवापनविधिं विदधाति ॥ २५ ॥
[7]यः पुरा सुपर्वण*(?)मन्दीभूत[7]कोष्ठचहुतभुक्सुरसङ्घान् ।
प्रेष्ठनूत्नयवनाहुतिदीव्यत्तन्मुखान्[8] वितनुते* रणयज्ञे ॥ २६ ॥
यः सुरान्[9] सुखयतीह गुग्गुलु*क्लृप्त[10]धूपनिवहेन धूपितान् ।
[11]दह्यमानरिपुराजवेश्मग-गुर्जरीयघनसारचन्दनैः*[11] ॥ २७ ॥
चैतन्यं यदि संश्रयेत् सुरतरुः स्वर्गौः[12] पशुत्त्वं त्यजे-
च्चिन्ताश्मापि सुरत्त्वमेति फणिनामीशः सुरेज्यो* भवेत् ।
पुंस्त्वं वागधिदेवता यदि भजेदीशो[13] विवादाऽतिग*-
श्चेत्तत्तद्गुणसाम्यतः[14]क्षितिपतिः कुम्भो* लभेतोपमाम्[14] ॥ २८ ॥
स राजराजः करदीकृतान्यनरेश्वरः शासितदृप्तराजः ।
तनोति तुष्टयै[15] शिवयोः शिवात्मा सङ्गीतकं दिक्पतिगीतकीर्त्तिः ॥२९॥ [३B
द्रष्टव्यं[16]कृतकृत्यतामुपगते[17] नेदं विधातुं तथा-
ऽऽधीत्याशेष[18]महागमान्वसुमतीं कृत्वा वशे चाखिलाम् ।
दानौघैः[19] परितर्पयन् द्विजवरानर्च्चन् सुपर्वव्रजं
कामं याचककामदो वितनुते सङ्गीतमुर्वीश्वरः ॥ ३० ॥

प्रतिस्थित पाठ—२५. *मालवाधिपतिं । २६. *इस पंक्ति में दो लघु अक्षर कम हैं; 'सुपर्वण' शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं है । संभवतः 'पुराऽसुरपचर्वण' पाठ हो । *वितपुते । २७. *गुग्गुल; *रिपुराजवेश्मगागुर्जरोयपनसार-चन्दनैः । २८. *सुरेज्या । *विवादो । *कुम्भे ।

1. P. चित्रमुपकर्त्ता । 2. P. सैन्यैर्लुट्यमानेऽस्मिन् । 3. P. गौर्जरे । 4-4. P. दहत्यस्तं पुरं । A.B. इत्यास्तंलपुरं । 5. P. निश्शेषी । 6-6. P. गुर्जराधिपति-दन्तवक्त्रतः कृत(ता)दन्तनिवहस्य । 7-7. P. यः पुराणतिलचर्वणमन्दीभूत० । 8. A. तन्मुखे । 9. B. सुखान् । 10. P. क्लृप्त (स्निग्ध) । यहाँ कोष्ठगतपाठ K. समर्थित है । A. क्लृप्त । 11-11. P. दह्यमानरिपुराजवेश्मगा(न्)गुर्वमेयघनसारचन्दनैः । 12. B. स्वर्गैः । B. में यह पद्य दो पद्यों में विभक्त है । 13. B. भुजेदीशो । 14. P. तदुपमां श्रीकालसेनो भजेत् । 15. P. पुष्ट्यै । 16. P. दृ(द्र)ष्टव्यं । 17. P. कृतकृत्यतामुपगत(ते) । 18. A. धीत्योशेष । 19. B. दानोघैः ।

केचिद्दानैकनिष्ठाः [1]कतिचन रणभूलम्पटाः*[1] केऽपि दक्षाः[2]
केचित् कामैकतानाः क्वचन कतिपयेऽगण्यनैपुण्यपण्याः ।
[3]*श्रीमान् कुम्भोऽत्र[3] तत्त [4]नृपतिगुणगणार्णोधिरीशप्रसत्त्यै
सङ्गीतं तत्त्वभाजां[5] जनिरिति तनुते विश्वविश्वोपकृत्यै ॥ ३१ ॥

दाक्ष्यं साक्षादिहास्ति व्यवहृतिरतुला राजकार्यविधार्या
नार्यश्चेष्टात्र चेष्टा नयविनयनयौ* सप्ततिर्द्वे[6] कलाश्च ।
औदार्यस्थैर्य[7]धैर्याकरनिधिर[8]खिलज्ञानविज्ञानविज्ञः[8]
[9]कुम्भः क्ष्मापालचूडामणिरिति तनुतेऽदभ्रसंदर्भमेतत्[9] ॥ ३२ ॥

कामं सन्ति परःशताः क्षितिभुजो भूताः परे भाविन-
स्तैस्तैः स्वाचरणक्रमैः स्वसमयप्रोद्यत्*प्रभाभास्कराः ।
जातः कोऽप्यतुलप्रभावविभव[10]प्राग्भारविश्वम्भरो
जीयान्निर्जितपूर्वराजचरितः श्रीकुम्भकर्णो[11] विभुः ॥ ३३ ॥

यः पूर्वं भरताय नाट्यनिगमं पद्मोद्भवप्रीतितः
साङ्गं शम्भुरदीदिशत्[12]स स[४A]मयादुच्छन्न[13]कल्पोऽभवत् ।
लोकानां हितकाम्यया स भगवान् श्रीकुम्भकर्णक्षमा-[14]
धीशव्यासमुपेत्य[15] वीतविषयं तं वक्ति[16] भूयोपि सः[17] ॥ ३४ ॥

ग्रंथात्[18] सम्यगधीत्य [19]बुद्धिविषयान्कृत्वाऽनुभूयार्थतः[19]
कृत्वा दर्शनगोचरानभिनवैर्नृत्या*ऽभिनेयाश्रितैः[20] ।

प्रतिस्थित पाठ— ३१. *रणलंपटाः । *श्री श्रीमान्, 'श्री' अधिक है । ३२. *नयवि य) नहीं है । ३३. *स्वसमयोद्यत । ३५. *नृत्यो

1-1. P. कति च (वितरणे) लम्पटाः । A. तरणभुलंपटाः । B. तरणलंपटा । B में 'ण' के बाद एक अक्षर का स्थान रिक्त है । 2. P. केचिदूक्षाः; A. केचिदक्षाः । 3-3. P. श्रीमान् कालाख्यसेनो । 4. P में 'तत् तत्' नहीं है । 5. P. तद्रसानां । 6. P. सप्ततिद्वे । 7. P. औदार्यस्थै(र्य) । 8. P.···खिलविध(?) ज्ञानविज्ञानवेज्ञं । 9-9. P. श्रीमत्कालाख्यसेनो नृप इति तनुतेऽदभ्रसन्दर्भमत्र । B. ० दर्भसंदर्भ । 10. P. विभवं (व) । 11. P. श्रीकालसेनो । 12. P. शम्भुरदीदृशत् । 13. P. समयादुत्सन्न । 14. P. श्रीकालसेनक्षमा । 15. P. व्याजमुपेत्य । 16. P. वक्ति प्र (?) । 17. P. भूयो वशी । 18. P. ग्रन्थान् । 19-19. P. बुद्धिविषयं नीत्वाऽनुभूयार्थतः । 20. P. नानाभिनेयाश्रितैः ।

तान् शिष्यप्रतिशिष्यलक्षणपथं[1] नेतुं यथावस्थितान्*
श्रीकुम्भः पृथिवीश्वरः[2] प्रतनुते[3] स्वोपज्ञसंदर्भतः ॥ ३५ ॥

यः पूर्वं चतुराननेन चतुरः [संस्मृत्य वेदांस्तत-
स्तत्त्रैवर्णिकताऽ] भिधानपरतां[4] चावेक्ष्य सम्यक् पदैः[5] ।
[6]श्रीकुम्भः सकलागमा [ब्धिमथनः शास्ताऽ]* खिलक्ष्माभृतां[6]
[7]भर्त्ता[वक्ति स][7]सार्ववर्णिकमिमं वेदं विदामग्रणीः ॥ ३६ ॥

यः श्रुत्वा[8] भरतं चतुर्भि*रखिलैर्भाष्यैश्च[रत्नाकरं]
सोपायं बहुशोऽवलोक्य[9] निखिलान्नाटयागमान् वीक्ष्य च ।
[गौरीनन्दि] [10]मते मतङ्गकथिते सङ्गीतशार्दूलके[10]
दृष्ट्वा [11]दन्तिलदुर्गशक्तिभणिते ता[11] नारदोक्तीरपि ॥ ३७ ॥

[वायुस्वा]तिमहेन्द्रकश्यप[मरुत्सून्व]*र्जुनाद्यैः कृतान्
रम्भातुम्बुरु[12]कम्बलाश्वतररक्षोराजसंदर्शितान्[13] ।
श्रीसोमेश्वरभोजराचरचितान् ग्रंथान् विलोक्य त्वमुं
तत्सारेण समुद्धृ[४B]तेन[14] कुरुते [15]कुम्भो नृपग्रामणीः[15] ॥ ३८ ॥

सङ्गीतरत्नानि गवेषितुं वो
यद्यस्ति काङ्क्षा सुधियस्तदानीम् ।
तेषां [16]प्रदाने नितरां[16] प्रवीणः
सङ्गीतराजः क्रियतां सुसेव्यः ॥ ३९ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ३५. *यथा वक्ति तान्। ३६. *प्रति में यहां 'स' अक्षर मात्र है और इससे पूर्व स्थान रिक्त है। ३७. *भरतश्चतुर्भिः। ३८. *प्रति में 'मरुत्' के स्थान पर 'गुरु' लिखा है; आगे दो वर्णों का स्थान रिक्त है; यहाँ P. के अनुसार पाठ दिया गया है।

---

1. P. शिष्य(क्ष)णपथं। 2. P. श्रीमत्कालुजिभूपतिः। 3. P. प्रयतते। 4. P. विधानपरतां। 5. P. स्थितः, A. स्मृतः। 6-6. P. श्रीमत्कालुजिभूपतिः शिवपरः शास्ताखिलक्ष्माभृतां। 7-7. P. सं (बध्नाति हि)। A. 'संदृ' के बाद दो वर्णों का स्थान रिक्त है, फिर 'तकि सार्ववर्णिकमिमं' पाठ है। 8. A. श्रुत्वा। 9. A. विलोक्य। 10-10. P. मतङ्गशिवसङ्गीते सशार्दूलके। 11-11. P. दत्तिलदुर्गशक्तिभणितीस्ता। 12. P. तुम्बुर(रु)। 13. P. सन्दर्भितान्। 14 P. समुच्चितेन। 15-15. P. श्रीकालसेनो नृपः। 16-16. P. प्रदानेऽतितरं।

यान्यज्ञानमदान्धराजसदने[1] शास्त्रौघकोशान्तरे
[2]गुप्तान्यक्षिपथं न यान्ति[2] सुधियां[3] सङ्गीतरत्नान्यहो !
तेषां [4]चिन्तितमात्रमर्थमथ[4]चेदिच्छास्ति तत् सेव्यतां
[5]श्रीमत्कुम्भनरेश्वरेण रचित:[5] सङ्गीतराजोऽन्वहम् ॥ ४० ॥[6]

भरतमतमतीवदुर्गमं यन्* –
मतिविमतेरवगाहितुं प्रवृत्त: ।
तदखिलमपि मे महानुभावा–
स्स्खलितमपि क्षमयोरुरीकुरुध्वम्[7] ॥ ४१ ॥

[8]यस्मात् स्थावरजङ्गमात्मकमिदं धृत्वानुरागादिदं[8]
तत्सापेक्षमतोऽतिमात्रगहनं दुर्ज्ञेयमस्मादृशै: ।
किन्तु स्वानुभवाय बालिशतया संदर्भितं यन्मया
तत् सर्वत्र समानदृष्टय इदं संशोधयध्वं बुधा:[9] ॥ ४२ ॥

दुस्तरं भारताम्भोधिं[10] तरीतुं तरिरेकिका ।
[11]जडान् प्रवचनान् कर्त्तुं क्षमेयं मत्कृति: सताम्[11] ॥ ४३ ॥

न प्रार्थयेऽहं सुधियो युक्तायुक्तं[12][कृतिं प्रति
[स्व]तस्त उपकुर्वन्तु यतश्चन्दनवृत्तय:[13] ॥ ४४ ॥

अथवा सर्वभावेन [14]जाग्रत्सहृदयान् यत: ।[14]
ते स्वभावे [५A]न कुर्वन्ति[श्रयन्तं स]ममात्मना ॥ ४५ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ४१ *थान् ।

---

1. A. 'या' के बाद कुछ लिख कर काट दिया है। दो खड़ी पाई के बाद 'न्य' लिख कर पंक्ति समाप्त है। दूसरी पंक्ति के आरम्भ के अक्षर त्रुटित हैं। फिर 'आ' अन्त में है और उसके बाद 'न' है। 'यान्यज्ञानमदान्ध'[या न्य···आ न]। B. यान्य···मदान्ध। K. यान्यत्यन्तमदान्धराजसदने। 2-2. P. गुप्तान्याप्तिपथां (थं) न ति (यान्ति)। 3. P. सुधिय:। 4-4. P. चिन्तितमात्रमाप्तुमथ। 5-5. P. श्रीमत्कालुजिभूभुजा विरचित: B. श्रीमत्कालुजिभूभुजा···चेत:। 6. B. यह दो पद्यों में विभक्त है। 7. P. क्षमयोररीकुरुध्वम्। B. क्षमयोरुरी कुरुध्वम्। 8-8. P. यस्मात् स्थावरजङ्गमात्मजगतो वृत्तानुकारादिदम्। B. यस्मान्मया स्थावर०। 9. P. संशोधयन्तूत्तमा:। 10. P. भरताम्भोधिं। 11-11. P. जडान् प्रवचनं (नान्) कर्त्तुं यद्रामानुकृति: सताम्। 12. P. सुधियोऽयुक्तयुक्त। 13. P. उपकुर्वन्ति यत्त(त)श्चन्दनवृत्तय:। 14-14. P. श्रये सहृदयाम्य(न्य) त:।

ननु सति गणनानोपकार[··············]*शास्त्रं
किमिह तव न [·····························]* से ।
इति खलु नमिते ························]*त्रातिरुद्धै-
र्वदत निमनु स्यात् कौस्तुभ[··············]* ॥ ४५ ॥
[विचार्यमाणमत्रैव तत्त्वं ग्रन्थान्तरे न तत्[1] ।
मथ्यमाने हि दुग्धाब्धावमृतं न मरुस्थले]* ॥ ४६ ॥
[यत्किञ्चिद्भरतादिभिर्निजनिजे ग्रन्थेऽस्ति सन्दर्भितं,
यच्चान्यद्विवृतं विशेषविदुषां वृन्दैः स्ववृत्तिष्वपि ।
यन्न्यस्तं क्वचिदेव किञ्चिदपि चातज्ज्ञैः स्वमत्याहृतं
सर्वं चर्वितचर्वणेन रहितं तद्वस्त्विहा]*लोक्यताम् ॥ ४७ ॥
क्वचिल्लक्ष्म*परीक्षार्थमुक्त[स्यातिशयाय वा ।
सम्बन्धस्मारणार्थं वा]*पुनरुक्तिर्न दुष्यति ॥ ४८ ॥

[2]इति श्रीराजाधिराजश्रीकुम्भकर्णविरचिते सङ्गीतराजे पाठ्यरत्नकोशेऽनुक्रमणिकोल्लासे कर्तृप्रशंसानाम प्रथमं परीक्षणम् ॥ छ ॥[2]

प्रतिस्थित पाठ— ४५. *कोष्ठान्तर्गत स्थान सर्वत्र रिक्त है। P.-में यह पद्य इस प्रकार है—

ननु सति गणनातोऽगोचरे नाट्यशास्त्रे
किमिह तव नवोद्यत्तद्विधानप्रयासे ।
इति खलु न नियोज्यं तत्र तत्त्वानिरुक्ते-
र्वदति खनिमनुष्यात् (न्) कौस्तुभः किं मणीन्द्रः ॥ ४८ ॥

४६. *पूरे पद्य के वर्णों के लिए पांच पंक्तियाँ रिक्त हैं। ४७. *पूरे पद्य के वर्णों का कोष्ठकान्तर्गत स्थान रिक्त है, केवल अन्तिम तीन वर्ण 'लोक्यताम्' लिखे हैं। ४८. *लक्ष्मी । *कोष्ठकान्तर्गत वर्णों का स्थान रिक्त है ।

1. A. B. K. ग्रन्थान्तरेण तत् । 2. इति श्रीसरस्वतीरससमुद्भूतकैरवोद्याननायकेन अभिनवभरताचार्येण गुर्जराम्भोधिनाथमन्थमहीधरेण त्रिसंध्याक्षेत्रसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन अरिराजमत्तमातङ्गपञ्चाननेन प्ररूढपत्रयवनदवदहनदावानलेन प्रत्यर्थिपृथ्वीपतितिमिरततिनिराकरणप्रौढप्रतापमार्तण्डेन वैरिवनितावैधव्यदीक्षादानदक्षोद्दण्डकोदण्डदण्डमण्डिताखण्डभुजदण्डेन भूमण्डलाखण्डलेन श्रीब्रह्माद्रिविभुना[1] अध्युष्टतमनरेश्वरेण गजनरतुरङ्गाधीशराजत्रितयतोडरमल्लेन वेदमार्गस्थापनचतुराननेन याचककल्पनाकल्पद्रुमेण वसुन्धरोद्धरणादिवराहेण परमभागवतेन जगदीश्वरीचरणकिङ्करेण भवानीपतिप्रसादाप्तवरप्रसादेन[2] राजगुर्वादिबिरुदावलीविराजमानेन राजाधिराजश्रीकालसेनेन विरचिते सङ्गीतराजे पाठ्यरत्नकोशे[3] अनुक्रमणिकोल्लासे कर्तृप्रशंसानाम प्रथमं परीक्षणं समाप्तिं समगात् ॥

॥ इति विततमतीनामभिमतसिद्धिरस्तु ॥

१. ब्रह्मादिविभुना । २. B. प्रसादाप्ताप्रसादवरप्रसादेन । ३. B. रत्नाकरे ।

आरम्भसमर्थन नाम द्वितीय परीक्षण

आरम्भणीयं किल[1] शास्त्रमेतन्
 माङ्गल्यरूपं*जगतोऽखिलस्य ।
आनन्ददं पुष्टि[2][५B]करं परं च
 सुरासुराणां भुवि भूपती [नाम्] ॥ १ ॥*

आरम्भणीयं[3] न हु[4] धर्मशास्त्र–
 विरोधतो नाटकशास्त्रमेतत् ।
प्रयोजनाभावतया * प्रवृत्तिः
 प्रेक्षावतामत्र न[5] जाघटीति ॥ २ ॥

[न शास्त्रतामुष्य तु शङ्कनीय
 विना प्रवृत्तीतरतापदेशात्[6] ।
महाजनानाम [परिग्रहाच्च]
 मूल [प्रमाणप्रविहाण]तश्च* ॥ ३ ॥

नो धर्माय विधायकोक्तिविरहान्नार्थाय[7]तत्कुतसना*
[नो कामाय चिरादनन्य] मनसोर्यू नोः स पुंभिः* स्मृतः ।
ज्ञानादेव [तु साव] धारणवचो [गुम्फैरिति ज्ञानतो]
सान्यस्मादिह[8] मुक्तिरित्यनुचितं सं[गीतसंकीर्तनम्]* ॥ ४ ॥

[ऊचुः प्राग्विद एकजाति] विषयं धर्मं त्वमुं नो ततः
प्रायोऽयं विषयो द्विजा*[ति जनु]षां धर्मोऽस्तु[गानादिकः] ।

प्रतिस्थित पाठ— १.* प्रति में प्रथम परीक्षण से आगे की पद्य-संख्या चालू रखी है परन्तु यह क्रम आगे के उल्लासों में नहीं चला है । अतः यहाँ प्रत्येक परीक्षण में पद्य-संख्या १ से लगाई गई है ।*मंगल्यरूपं । २.*तदु ।* प्रीत्याजनाभावतया ३. *'मूलप्रधा' और 'तश्च' के बीच का स्थान रिक्त है । ४. *'विरहान्नार्थायतः' के बाद दो वर्णों का स्थान छोड़ कर 'त्सनातनोक्ता' । *पद्य में कोष्ठगत वर्णों का स्थान सर्वत्र रिक्त है । *पुभि । *'सङ्गीत' के स्थान पर 'संमात' है, आगे स्थान रिक्त है । ५. *निजा ।

---

1. P. B. ननु । 2. P. तुष्टि । 3. P. B. नारम्भणीयं । 4. P. ननु । 5. B. 'न' नहीं है । 6. P. प्रवृत्ती(त्ति)भरतोपदेशात् । 7. P. विरहाना(न्ना)र्थाय । 8. P. नान्यस्मादिह ।

[गाने प्र]त्युत तन्निषेधवचनान्युक्तानि मन्वादिभिः
[1]तत्सर्वाण्यविचारचारुमतिभिस्तत् स्वास्थ्यमालम्ब्यताम्[1] ॥ ५ ॥

किं चात्र श्रवणं[2] प्रमाणपदवीमाटीकते ब्रूत तत्[3]
तन्मूलश्रुतिबाधितं क्वचन* किं निर्मूलमुन्मीलति ।[4]
इत्या[६A]द्युक्तनयेन चातिनिपुणं संरूप्यमाणं* त्विदं
शास्त्रं नैव विचारचारुतरतामारोहतीह स्फुटम्* ॥ ६ ॥

ब्रूमोऽथ प्रतिपक्षपक्षविलसत्[5] तत्तत्तदीयोल्लसद्
वाचो युक्तिपिशाचिकाभ्रमिभरप्रोद्धूनन*ध्वंसकृत् ।
तन्त्रं तु प्रसरीसरीति सरणिः सत्पक्षकक्षागिरा-
मङ्गीकारिधुरीणकुम्भवसुधा[6]वागीशवाक्योत्करः ॥ ७ ॥

नारम्भणीयं यदवोचदेतत् कश्चिद्विपश्चिन्न विचारचारु ।
तदत्र चित्रं तदहो यदस्य [7]जगत्प्रसिद्धोऽप्यपलापलापः[7] ॥ ८ ॥

[8]यद्धर्मशास्त्राच्च*विरुद्धमेत[8]-दुक्तं तदज्ञानविजृम्भितं[9] ते ।
निदानता धर्मतरोरमुष्य मन्वादिभिर्यद् गदिताऽभियुक्तिः[10] ॥ ९ ॥

उपवीणयता मयोदितं*[11] स च योगिप्रवरोऽभ्यभाषत ।
अमृतं भवितेति[12] तद्वचः कथमाविःकुरुते न मानताम्* ॥ १० ॥

निःप्रयोजनता योक्ताभियुक्तैरस्य मा क्रुध[13] ।
सुखाप्तेर्दुःख[14]हानेश्च मुख्यत्वे मतिर्नो* वृथा[15] ॥ ११ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ६. *कचन । *सरूप्यमाणं । *स्फुतं । ७. *प्रोद्धूनन । ९. *यद्धर्मशास्त्रादविरुद्ध० । १०. *उपवीणयता मदुदितं । *मानता । ११. *मति नो ।

1-1. P. °स्तत्प्रामाण्यविचारचारुमतिभिर्माध्यस्थ्यमालम्ब्यताम् ।; B. माध्यस्थमालम्ब्यताम् । 2. P. स्मरणं । 3. P. ब्रूतत (ब्रूत चेत्); P. का पाठ K. सम्मत है । 4. P. निमू-(र्मू)लमुन्मीलति । 5. P. विसरत् । 6. P. कालुजिधरा०; B. कालुजधरा । 7-7 P. जगत्प्रसिद्धेऽप्यपलापलापः । 8. P. यद्धर्मशास्त्रेण विरुद्धमेत० । 9. A. B. विजृंभनं । 10. P. गदिताभियुक्तैः । P. के अनुसार A. B. में ८ और ९ पद्य एक ही में लिखे हैं । 11. P. उपवीणयतो(ता) मखद्विषं । 12. P. अमृताभरणस्य । A. B. अमृतां (B. अमृताभरण); K. अमृताभरणं ज्ञ तद्वचः । 13. P. सा कथम् । 14. A. दुख । 15 P. सति नो वृथा ।

ब्रह्मद्वयानन्द[1]रसातिरेक–सहोदरास्यन्द[2]सुखानुभूतेः ।
परात्मतुष्टिः परमास्ति काचित् सा चेत्स्वयं नो मनु[६B]षे[3] मनीषिन्
॥ १२ ॥

राजैवात्रोपदेश्यो* रघुपतिकुणपाधीशवृत्तोक्त्य[4]नुक्ता–
चारप्राप्ति[4]प्रकर्षेतरफलविभवादत्र* हेयाप्ततत्त्वः[5] ।
[6]अर्थो धर्मोऽनुषङ्गादतनुरपि* गतो रङ्गकोत्तीर्णनर्त्त–[6]
[7]क्यन्वेषात्तत् प्रवृत्त्यै* न हि घटति[8] कथं शास्त्रमेतन्निवृत्त्यै ॥ १३ ॥

[9]आह च भगवान् याज्ञवल्क्यः—
हंहो विप्रा गुह्यमेतच्छृणुध्वं
तत्त्वं द्रष्टुं वोऽस्ति यद्यत्र वाञ्छा ।
*नानारूपैर्भावितां भावलेशै
रङ्गोत्तीर्णां नर्त्तकीं कामयध्वम् ॥ १४ ॥ इति[9]

तस्मादेतदुपासनास्य[10] नियता तच्छासनाशंसनाद्[11]
ब्रह्माद्याप्तपरिग्रहाच्च ननु[12] भो नामूलमाकाङ्क्षति ।[13]
वेदत्वादिह निर्मितेर्निगमता* धातुः प्रमाणीकृता
तत्सारेण तु सार्ववर्णिकममुं* निर्मित्सतः* संभ्रमम्[14] ॥ १५ ॥
किञ्चोपवेद[15] एवायं साम्नः सामैव वा पुनः ।
सामाख्या गीतिषु प्रोक्तेऽन्यतो[16]ऽस्माच्च प्रमाणता ॥ १६ ॥
[17]वेदेनाप्यात्ममूलत्वादिह मोहाद्यपेक्षितम् ।[17]
[18]स्वरजातमुदात्तादि यदायत्तं[18] यतः स्मृतम् ॥ १७ ॥

प्रतिस्थित पाठ— १३. *देशो ।* दग्र । *धर्मोनुसङ्गादतनुरपि । ० *क्यन्वेषत्तत् प्रवत्यै ।
१४. * ० र्नाना । १५. *निर्मिते निगमना । *सार्वर्कणिकममुं ।
*निर्मित्सता ।

---

1. P. ब्रह्माद्वयानन्द । 2. P. सहोदरास्वाद । 3. B. मानुषे । 4-4. P ० नुक्त्याचार-प्राप्त० । 5. P. ०देयहेयाप्ततत्त्वः । 6-6. P. अर्थो धर्मानुषङ्गात(त्त)दनुरपि(भि)मतो रङ्गकोत्तीर्णनर्त्त० । 7-7. B. ०क्यन्वेषाततप्रवृत्यै । 8. P. भवति । 9-9. यह अंश B.O. के अतिरिक्त अन्य किसी प्रति में नहीं है । 10. P. तस्मादेव तु शास्त्रतास्य । 11. A. तछासनाशंसना । 12. P. न तु । 13. P. नो मूलमाकांक्षति । 14. P. पञ्चमम् । 15. P. किं रूपवेद; K. वेदरूप । 16. P. प्रोक्तेत्यतो । 17-17. P. वेदेनाप्यात्ममूल-त्वादिदमेव ह्यपेक्षितम् । 18-18. P. स्वरजातमुदात्ताद्यस्वि(स्मि)न्नायत्तं ।

तथा हि नादधर्मोऽयमुदा[त्तादिः स्मृतः स च ।]
नादः[७A]प्राणान्न[1]संयोगाज्जातः श्रुत्यादि[2]भेदभाक्[3] ॥ १८ ॥

श्रुतिभ्यः[4] स्युः स्वराः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः ।
पञ्चमो धैवतश्चाथ निषाद इति तेषु च ॥ १९ ॥

उदात्ताः समपाः प्रोक्ताः स्वरितौ च रिधौ स्वरौ ।
अनुदात्तौ तत[5]स्तस्माज्जगतोऽप्यस्य हेतुता[6] ॥ २० ॥

अङ्गत्वेनाथवाऽस्यास्तु[7] प्रामाण्यं तत्त्वमृत्विजाम्* ।
चार्यापक्रान्तया[8] होमविधानात् षट्केन*[9] च ॥ २१ ॥

मानान्तरमधिगतेगायितीति[10] विधिः स्फुटः ।
औद्गात्रस्य विधानाच्च त्रैकाल्ये नाट्यदर्शनात् ॥ २२ ॥

अश्वमेधक्रतौ गानविधानमपि दृश्यते ।
ब्राह्मणस्य दिवारात्रौ राजन्यस्य च शासनात् ॥ २३ ॥[11]

नरेशस्यानुगामित्वं[12] यन्निषेधस्य तत्र हि ।
नृदेवो न निषिध्येत[13] नृमात्रस्य निषेधनात् ॥ २४ ॥

शाम्येद्यथाहिदष्टस्य विषेण विषमुल्बणम् ।
तथाऽस्मिन् विषया[14]ऽकाङ्क्षा विषयासक्तचेतसाम्[15] ॥ २५ ॥

जीमूतवाहनदधीचिमुखाधिपानां
नाट्ये विलोक्य चरितं स्वभिनीयमानम् ।
प्राणैर[पि प्रयतते न] हितं परस्य[16]
कर्त्तुं मनः खलु नरस्य लघीयसोऽपि [७B]* ॥ २६ ॥

प्रतिस्थित पाठ— २१. *मृत्विजां । *षटकेन । २६. *"स्य लघीयसोपि ॥७३॥', यह अंश पृ. ८ A में भी दोहराया गया है।

---

1 P. प्राणाग्नि । 2. A. श्रुत्यावि । 3. B. भेदभाग् । 4. B. श्रुतिभ्यः । 5. P. गनी । 6. B. हेतुतां । 7. P. स्यात् (तत्); A. का पाठ प्रति के समान । 8. P. चार्याध्य(ा)क्रांतया । 9. P. खटकेन; K. कठकेन । 10. P. ०गतेगा(र्गा)यतीति । 11. B. में 22-23 पद्य एक में ही दिए गए हैं । 12. P. नाराशंस्यनुगामित्वं । 13. P. निषेध्येत । 14. B. तथास्मिन्निविषया । 15. P. चेतसः । 15. K. प्रयतते(ऽभि)हितं परस्य ।

न नृत्येदिति यन्नृत्यनिषेधः कामवर्त्तिनः[1] ।
तद्ब्रह्मचारिविषये वचनं पर्यवस्यति ।। २७ ।।

द्विजातिविषयो गाननिषेधो यस्तु[2] कुत्रचित् ।
तद्विदां स्यादपात्रत्वं[3] तत्त[4]द्विद्योपजीविनाम् ।। २८ ।।

अस्येतिहासवदयं समयः प्रदिष्टो-
ऽनध्यायरूप ऋषिणा निगमानुरोधात्* ।
[5]आसारितादिवरगीतकसंप्रयोगात्[5]
धर्माद्यवाप्तिरुदितेह परा मुनीन्द्रैः ।। २९ ।।

प्रचुराणि[6] प्रमाणानि यथायथमिहार्थतः ।
अष्टावपि विलोक्यानि पुराण इव सूरिभिः ।। ३० ।।

अप्रस्तुतत्त्वात्तल्लक्ष्म न वयं व्याहरामहे ।
प्राकट्यमुपयास्यन्ति प्रयोगादेव तानि यत् ।। ३१ ।।

[7]इति श्रीराजाधिराजमहीमहेन्द्रश्रीकुम्भकर्णविरचिते पाठ्यरत्नकोशेऽनुक्रमणिकोल्लासे आरम्भसमर्थनं नाम द्वितीयं परीक्षणम् ।।[7]



प्रतिस्थित पाठ—२९. *निगमोनुरोधात् ।

1. P. कामवर्गतः । 2. P. यत्र । 3. P. यदपात्रत्वं । 4. B. में 'तत्' नहीं है । 5-5. P. आसादिता० । 6. P. प्रत्यक्षादि । 7-7. P. इति श्रीराजाधिराजमहेन्द्र-श्रीकालसेनविरचिते सङ्गीतराजे षोडशसाहस्र्यां सङ्गीतमीमांसायां पाठ्यरत्नकोशे अनुक्रमणि-कोल्लास आरम्भसमर्थनं द्वितीयं परीक्षणम् ।

सङ्गीतस्तुति नाम तृतीय परीक्षण

सिद्धप्रमाणभावस्य सङ्गीतस्य निरूप्यते ।
स्वरूपस्य विचारोऽथ कुम्भकर्णेन[1] भूभुजा ॥ १ ॥*

ऐक्यं* जीवपरात्मनोर्दिशति यद्* बालेश्वरौ* सङ्गतं[2]
तुल्यं लम्भयदद्भुतं[3] विगलिता*शेषेन्द्रियार्थग्रहौ ।
मा[दA]यान्तःपतितं मदादविरमं[4] सम्मोहयेन्मायिनं
[5]लोकातीतचमत्कृतिश्रुतिगतं[5] गीतं परं तत् स्तुमः ॥ २ ॥

जीवातुर्गदिनां [6]प्रियं विरहिणां[6] ध्येयं परं योगिनां
दीनानामतिदुःखिनामपि नृणां विश्रान्तिभूमिः परा ।
निःस्वानां [7]परमो निधिर्नवनवो नार्मोत्करो भोगिनां[7]*
गीतं किञ्चिदमेयरूपमहिमप्राग्भारमुज्जृम्भते ॥ ३ ॥

गीतमेव वशीकारकार्मणं वशिनां नृणाम्[8] ।
त्यक्तान्यत्कार्यसम्भारा[9] मुनयो यदुपासते ॥ ४ ॥

स्वर्गतं पुनरानेतुं शक्तिर्यस्य जगत्त्रये ।
अगोचरः* कविगिरां* तद्गीतं केन वर्ण्यते ॥ ५ ॥

[10]इति श्रीराजाधिराजमहीमहेन्द्रविरचिते सङ्गीतराजे पाठ्यरत्नकोशेऽनुक्रमणिकोल्लासे सङ्गीतस्तुतिर्नाम तृतीयं परीक्षणम् ।[10]

प्रतिस्थित गाठ— १. *प्रति में संख्या ७६ से चलती है । २. *एको । *यो । *बालेथरौ । *विगलितः । ३. * ०भँवनयोर्नामोत्करो । *भागिनां । ५. *आगोचरः । *कति गिरां ।

---

1. P. कालसेनेन ० । 2. P. संमवं । 3. P. लम्भय(ब)द्भुतं; A. B. लंभययद्भुतं । A. B. शेषेन्द्रया । 4. P. म(य)दत्यविरतं । 5-5. P. लोकातीतचमत्कृतं श्रुतिगतं । A. में 'चमत्कृ' के पश्चात् एक अक्षर का स्थान रिक्त फिर 'तिश्रुतिगतं' है । 6-6. P. प्रियाविरहिणां । 7-7. P. परशेवधिर्नवनवो भोगोत्करो भोगिनां । 8. P. वशिनामपि । 9. P. त्यक्तान्यकार्यसम्भारा । 10-10. P. में 'महीमहेन्द्र' के बाद 'कालसेन', शेष यथावत् ।

अनुक्रमणिका नाम चतुर्थ परीक्षण

यस्तु निर्यवनं[1] कर्त्तुमवतीर्णोऽस्ति[2] भूतलम्[3] ।
तेन श्रीकुम्भकर्णेन[4] क्रियते गीतनिर्णयः ।। १ ।।*

सम्यग्गीतं तु सङ्गीतं गीतादित्रितयं नु[5] वा ।
समष्टिव्यष्टिभावेन शब्देनानेन गीयते ।। २ ।।

[6]त्रिविक्रम*क्रमासक्तचेतसा कुम्भभूभुजा[6] [८B]
उपक्रमक्रमं[7] तस्य विधातुं संविधीयते ।। ३ ।।

[8]प्राज्यं राज्यतनु[:][8] परेति परमादृग्वेदतः सामतो
गीतं गीतमनोहरात् कमलभूरादाय वै सृष्टवान् ।
नेपथ्याभिनयौ [9]यजुर्भिरुदितो[9]ऽथाथर्वणस्तान्[10] रसान्
गम्भीर[11]स्थितपाठ्यगीतविवरे वाद्यं पुनस्तद्द्वयात् ।। ४ ।।

पाठ्यं वाक्यात्मकं वाक्यं सर्वाभिनयमूर्द्धनि ।
भरतेनाभिषिक्तं तद्वाचि *य[12][त्नं विधि]त्सताम्[13] ।। ५ ।।

[14]प्रबोधकाद्भुतं कालं[14] विशेषादस्य हेतुतः[15] ।
आदावतो नरेन्द्रेण सर्वस्यैव[16] विविच्यते ।। ६ ।।

सङ्गीतराजे तत्र स्यू* रत्नकोशाः* क्रमादमी[17] ।
[18]पाठ्यगीतवाद्यनृत्यसरसा*स्तत्त्वतः[18] क्रमात् ।। ७ ।।

प्रतिरत्नकोशमुक्ता उल्लासा वेद*सम्मिताः[19] ।
परीक्षणानि चत्वारि प्रत्येकं* तेषु च क्रमात् ।। ८ ।।

प्रातस्थित पाठ—१. *केवल इसी पद्य पर सं. १ दी गई है आगे ८४ से चालू है। ३* त्रित्रिक्रम।
५. *तद्वादि। ७. *स्यु। *रत्नकोश। *वाद्यादिपरसास्तत्त्वतः।
८. *उल्लासावेव। *प्रयोगां।

---

1. P. निर्वचनं। 2. P. ० तीर्णोस्तु(स्ति)। 3. P. भूतले। 4. P. श्रीकालसेनेन। 5. P. तु। 6-6. P. त्रिविक्रमक्रमासक्तचेतसा तामराजिना। 7. P. उपक्रमः क्रमं। 8-8. P. पाठ्यं नाट्यतनुः। 9. P. यर्जुनिगमतो। 10. P. ०थर्वतस्तान्। 11. P. संगीत। 12. A. B. यत्नं। 13. P. विधित्सता। 14-14. P. प्रबोधस्य प्रबन्धानां। 15. P. हेतुता। 16. P. सर्वस्यैतद्। 17. P. रत्नकोशाः क्रमादमी। 18-18. P. पाठ्यगीतवाद्यनृत्यरसाह्वास्तत्र च। 19. B. वेदसम्मताः।

अनुक्रमणिका वाद्य[1]स्वरूपं पदवाक्ययोः ।
छन्दांसि भूषणानीह पाठ्योल्लासाः स्फुटा[2] अमी ॥ ९ ॥

स्वरोत्पत्तिस्तथा रागाः प्रकीर्णकमथापि[3] च ।
प्रबन्धाख्यश्च ते गीतरत्नकोशे द्वितीयके ॥ १० ॥

ततं च शुषिरं*[4] चाथ घनं चैवावनद्धकम् ।
उल्लासाः क्रमशो[5] वाद्य [९A] रत्नकोशे प्रकीर्त्तिताः ॥ ११ ॥

अङ्गसंज्ञस्तथा* चारीसंज्ञकः करणाभिधः ।
प्रकीर्णकाभिधो नृत्यरत्नकोशे कथानकाः[6] ॥ १२ ॥

[7]रसलक्षणभावादिरनुभाषाभिधं तथा ।[7]
ततः संचारिभावस्य[8] रत्नकोशे रसाभिधे ॥ १३ ॥

अनुक्रमणिकोल्लासे कर्त्तुः*[9] शंसनमादितः ।
आरम्भसार्थता [10]तेषामीश्वरस्य स्तुतिस्ततः[10] ॥ १४ ॥

अनुक्रमणिका चेति चतुर्थं परिकीर्त्तितम् ।
पदलक्षणमेतस्मिन् लास्यलक्षणमेव[11] च ॥ १५ ॥

संज्ञा च परिभाषा चेत्युल्लास[12]पदनामनि ।
अनुष्टुप्शासनं [वृत्तार्ययोः[13] शासनमेव च] ।
प्रस्तारपरिपाटी च छन्द उल्लास ईरिताः ॥ १६ ॥

उद्देशो लक्षणानीह [14]ततोऽलङ्कृतिरेव च[14] ।
गुणदोषाश्च तत्त्वेनोल्लासेऽलङ्कारसंज्ञके ॥ १७ ॥

[15]स्थानं श्रुतिपदग्राममूर्च्छनातानरासकाः ।[15]
साधारणं तथा वर्णाः सालङ्काराश्च जातयः ॥ १८ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ११ *शुखिरं । १२ *अंगसंगस्तथा । १४ *कर्त्तु । १६ *'शासनं' के बाद स्थान रिक्त, फिर 'र्थयोः'; पुनः स्थान रिक्त के बाद 'रो' तथा फिर स्थान रिक्त है। पद स्पष्ट नहीं होता, अतः P का पाठ दिया है।

---

1. P. चाथ । 2. P. स्मृता । 3. B. प्रकीर्णमथापि । 4. P. सुखि(षि)रं । 5. P. क्रमतो । 6. P. क्रमान्मताः । 7-7 P. रसलक्ष्मविभावादिरनुभावाभिधस्तथा । 8. P. ०संज्ञश्च । 9. P. कर्त्तृ । 10-10. P. चेति संगीतस्य स्तुतिस्ततः । वाक्य-11. P. लक्षणमेव ? । 12. P. चेत्युल्लासे । 13. B. वृत्तायर्योः । 14-14. P. ततोऽलंकृतयः पुनः । 15-15. P. स्थानश्रुतिस्वरग्राममूर्च्छनातानसंज्ञकाः ।

[1]दृश: स्वरूपभेदाश्च[1] चतुर्भिश्च परीक्षणै: ।
ग्रामरागादिरागाङ्गोपाङ्ग[2]भाषाङ्गनिर्णय: ।। १९ ।।

क्रियाङ्गानि[3] च[4] वर्ण्यन्ते रागोल्लासे क्रमादिति ।
वाग्गेयकारकथनं शब्दभेदाश्च तत्त्वत:[६B] ।। २० ।।

गमकाश्च तथा स्थाया वर्णनीया: प्रकीर्णके ।
गीतकानि तथा सूडत्रयमालिक्रमस्थिता: ।। २१ ।।

प्रकीर्णका:[5] प्रबन्धाश्च प्रबन्धोल्लास*गोचरा: ।
ततोल्लास* [6]एव तन्त्रीपञ्चकं[6] नकुलादित: ।। २२ ।।

मत्तकोकिलका चात्र[7] किन्नरी परिकीर्त्यते ।
सौषिरे[8]वेणुनिर्माणं स्वरोत्पत्तिस्तदाश्रिता[9] ।। २३ ।।
गुणदोषाश्च[10] गाथादि[11] साङ्गोपाङ्गं[12] निरूप्यते ।। २४ ।।* See [illegible] Pt. II int. P. 42 [illegible] 'पात्रादि'

मार्गतालास्तथा देशीतालास्तत्प्रत्यया अपि ।
काललक्षणमेतस्मिन् घनोल्लासे समाप्यते ।। २५ ।।[13]

[14]अङ्गप्रत्यङ्गभणितिरुपाङ्गानां क्रियाभिधा[14] ।
आहार्याभिनयश्चैवमङ्गोल्लासे प्रकाश्यते ।। २६ ।।

स्थानकानि तथा चार्य: शुद्धदेशीविभेदत: ।
मण्डलानि तदुत्थानि चारिकोल्लासके क्रमात् ।। २७ ।।

करणानि द्विधा[15] [16]शुद्धदेशीदेशविभेदत:[16] ।
अङ्गहारा रेचकाश्च करणोल्लास ईरिता: ।। २८ ।।

प्रतिस्थित पाठ— २२. *प्रबन्धोल्लस; *ततोल्लस । २४. *अर्द्धाली पर ही पद्य संख्या है ।

1-1. P. दश स्वरगते भेदाश्च । 2. P. ०पाङ्गे । 3. P. क्रियागा(ङ्गा)नि । 4. B. इच । 5. B. प्रकीर्णकाश्च । 6-6. P. एकतन्त्रीपञ्चकं । 7. P. चाथ । 8. P. सौखि(षि)रे; B. सौखरे । 9. B. ०श्रिता: । 10. P. गुण(णा)दोषाश्च । 11. P. पात्रादि । 12. A. B. सांगोपांग । 13. प्रति के पद्य २५ और २६ के बीच में P. में निम्न पद्य और है—

"अवनद्धसमुल्लासे वाद्यं पुष्करसंज्ञकम् ।
पाटा वाद्यप्रबन्धाश्च पटहादिर्निगद्यते ।। २६ ।।

14-14. P. 'अङ्गप्रत्यङ्गभणितिरूपाङ्गानां क्रिया तथा । B ०रूपकानां० । 15. P. तथा । 16-16. P. शुद्धदेशीभेदविभेदत: ।

वृत्तयश्च तथा न्याया लास्याङ्गानि च तत्त्वतः ।
पात्रलक्षणमेतस्मिन्[1] प्रकीर्णोल्लास उच्यते ॥ २९ ॥[2]
रसस्वरूपकथनं[3] रसविद्रूपवर्णनम्*[4] ।
रसाश्रयाभिधं चा[१०A]न्यद्रसलक्षणसंज्ञकम् ॥ ३० ॥
परीक्षणानि चत्वारि रसोल्लासेऽनुरस्यते[5] ।
नायकानां प्रकथनं नायिकालक्षणं तथा ॥ ३१ ॥*
चेष्टादीनां विभावानां विभावनमतः परम् ।
उद्दीपनविभावाख्यं विभावोल्लासके क्रमात् ॥ ३२ ॥
अनुभावास्त्ववस्थायाः स्वरूपं सात्विकाः पुनः ।
प्रवासाद्यनुभावाश्चानुभावोल्लासगोचराः ॥ ३३ ॥
निर्वेदादिप्रतिरसं भावावस्थानसूचकम् ।
रससंकरनामाद्यं*[6] ग्रन्थस्य च समापनम् ।
परीक्षणानि सञ्चारिसंज्ञकोल्लासके* क्रमात् ॥ ३४ ॥
येनानुक्रमतः शकान् विशकलीकर्त्तुं रणप्राङ्गणे
[7]तत्तद्गूर्ज्जरमालवीयमरुपा[7] नीताः सदुर्गा वशे[8] ।
[9]दुर्गेणाजयमेरुणा[9] निजसमुन्नत्या स्वया[10] सम्पदा
सोऽयं[11] तेन चिरादनुक्रमणिकोल्लासः समुल्लासितः ॥ ३५ ॥*

[12]सरस्वतीरससमुद्भूतकैरवोद्याननायकेनाभिनवभरताचार्येण मालवाम्भोधि-

प्रतिस्थित पाठ— ३० *रसत्वरेपवर्णनं । ३१. *प्रति में ३१ वें अर्थात् ११४ वें पद्य के आगे पद्यांक नहीं हैं । ३४ *रसकंकर० । *संज्ञकोल्लासके । ३५ वें के स्थान पर ११६ अंक है ।

1. P ०मित्यस्मिन् । 2. P. में इस पद्य के बाद यह श्लोकार्ध और है—
'सभापतिः सभायाश्च निवेशो रसकीर्तनम्'

3. A. रसत्वस्य च वर्णनम्; B. में कुछ वर्णों का स्थान ताराङ्कित करके छोड़ दिया गया है। P. का पाठ K समर्थित है और प्रति के पाठ से मिलता है। 4. P. रसज्ञस्य च वर्णनम् । 5. P. तु रस्यते । 6. B. रसशंकरनामाद्यं । 7. P. त्तत्तद्गुर्जरदाक्षिणात्यनरपा; B. ०नगरी । 8. P. वशं । 9-9. P. दुर्गेशा महिषाद्रिणा; B. दुर्ग्गेशा । 10. K. स्वयं । 11. P. साकं । 12-12 P. इति श्रीजगदीश्वरवनदेवनिजगणेन जगदम्बिकाकामाक्षी[1]–

१. B. कामाक्षा ।

माथमंथमहीधरेण मेदपाटसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन अरिराजमत्तमातङ्गपञ्चाननेन आरूपत्रयवनदवदहनदवानलेन प्रत्यर्थिपृथिवी १०B]पतितिमिरततिनिराकरणप्रौढप्रतापमार्त्तण्डेन वैरिवनितावैधव्यदीक्षादानदक्षोद्दण्डकोदण्डदण्डमण्डिताखण्डभुजादण्डेन भूमण्डलाखण्डलेन श्रीचित्रकूटविभुना अध्युष्टतमनरेश्वरेण गजनरतुरगाधीशराजत्रितयतोडरमल्लेन वेदमार्गस्थापनचतुराननेन याचककल्पनाकल्पद्रुमेण वसुन्धरोद्धरणादिवराहेण परमभागवतेन जगदीश्वरीचरणकिंकरेण भवानीपतिप्रसादाप्तापसादवरप्रसादेन राजगुर्वादिविरुदावली*-बिराजमानेन राजाधिराजश्रीकुम्भकर्णविरचिते श्रीसङ्गीतराजे पाठ्यरत्नकोशेऽनुक्रमणिकोल्लासेऽनुक्रमणिको नाम चतुर्थं परीक्षणम् । ।।छ।। उल्लासश्च प्रथमः समाप्ति समगादिति विततमतीनामभिमतसिद्धिरस्तु ।।छ।।[12]

प्रतिस्थित पाठ— *विरुदावली विली विराजमानेन ।

चरणकिङ्करेण श्रीकामेश्वरीगिरिविभुना अध्युष्टतमनरेश्वरेण भीष्मपुरजयानीतानेकराजकन्यारत्नेन श्रीपुरग्रहणसंवर्द्धितयशोभरेण वाटिकाचलग्रहणजनितकीर्त्तिपूरपराजिता[1]चलनायकेन संगमतीर[2]दुर्गोद्धरणोद्धृतसकलमण्डलाधीश्वरेण दमनपुरविध्वंसनबन्दीकृतयवनीनिचयेन महिषमेरुजयाजेयविभवेन शाकम्भरीरमणपरिशीलनपरिप्राप्तशाकम्भरीपरितोषितशाकम्भरीप्रमुखशक्तित्रयेण[3] अष्टादशगिरिशिखरपरिवारिताञ्जनादि[4]-गिरिविजयविख्यातवीर्यगर्वेण महदम्बमातृकापुरोद्धूलनर्धषितमहोरगपुरेण[5] श्रीवनदेवस्वामिप्रसादरचनापरमेश्वरेण त्र्यम्बकेश्वरसन्निधिकीर्त्तिस्तम्भोन्नतजयस्तम्भेन श्रीब्रह्मगिरिभोमस्वर्गतायथार्थीकरणरचितचारुपथेन श्रीकामाक्षा[6]गिरिनवीननिर्मितपराजितसुमेरुणा[7] श्रीमहिषाचलोपरि श्रीहरिशरणरचिताचलदुर्गेण[8] अभिनवभरताचार्येण वीणावादनप्रवीणेन यवनकुलाकालकालरात्रिरूपेण त्रिसंध्याक्षेत्रसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन परमभागवतेन महाराजाधिराजराजश्रीराजमानसृगाङ्कतामराजनेन्दनेन महाराज्ञी[9]सौभाग्यवती[10]श्रीजसमाम्बिकाहृदयनंदनेन सकलसीमन्तिनीशिरोमणिनिकुम्भराजन्यवंशावतंसमहाराज्ञीश्रीकर्मवतीश्रीलघुमादेवीहृदयाधिनाथेन राजाधिराजश्रीकालसेनेन विरचिते संगीतराजे षोडशसाहस्र्यां सङ्गीतमीमांसायां[11] पाठ्यरत्नकोशे अनुक्रमणिकोल्लासे अनुक्रमणिका नाम चतुर्थं परीक्षणम् ।

उल्लासस्य (श्च) प्रथमः[12]समाप्तिमगात् ।।
इति विततमतीनामभिमत[13]-सिद्धिरस्तु ।।

१. B. ०पुरपराजित० । २. B. संगमनीर । ३. B. में 'परितोषितशाकम्भरी' नहीं है । ४. B. 'परिवारिताञ्जनाद्रि'; K. में उपरिमुद्रित पाठ ही है । ५. B. धर्षिता । ६. K. कामाक्षा । ७. B. पराजिति सुमेरुणा । ८. B. दुर्गेण । ९. K. में 'श्री' और है । १०. K. में 'जसमाम्बिका' से पूर्व 'श्री' नहीं है । ११. A. संगीतमिमांसायां । १२. B. समाप्ति समगादिति । १३. B. में 'मत' नहीं है ।

२. पदोल्लास - पदनाम प्रथम परीक्षण

अध्यासिताया निजपूर्वपुंभि: पदं सरीसर्त्ति न य: कदाचित् ।
विशुद्धमत्या:[1] सरणे: स राजा पदं चरीकर्त्ति विचारवर्त्ति[2] ॥ १ ॥

पाठ्य तु द्विविधं ज्ञेयं संस्कृ[११A तं प्राकृतं* तथा ।
[3]यथावेद* तयोरङ्गान्याख्याम: पाठ्यसिद्धये ॥ २ ॥

नामाख्यातोपसर्गाश्च निपातास्तद्धिता: कृत: ।
समासाश्च स्वराश्चैव सन्धयोऽथ विभक्तय: ॥ ३ ॥

व्यञ्जनान्यङ्गकैरेतैर्नानाधातूपबृंहितम् ।
प्रयोगार्हं प्रविज्ञेयं[4] संस्कृतं पाठ्यमित्यद: ॥ ४ ॥

नादादिहेतुको य: स्यादक्षराणां* समुच्चयः ।
आनुपूर्वी समुल्लेख:* स शब्दव्यपदेशभाक् ॥ ५ ॥

साध्यसाधनसंयोगसामानाधिकरण्यका:* ।
पदार्थप्रतिपत्तिश्च [5]विधि: पञ्चविध: स्मृत:[5] ॥ ६ ॥

अधिष्ठानं स्वभावश्च गुणा: कार्यान्वयस्तथा* ।
तादात्म्यं* चेति शब्दस्य [6]तद्गुणा: पञ्च कीर्त्तिता:[6] ॥ ७ ॥

तस्य सप्तविधं प्राहुरधिष्ठानं पुरातना: ।
मुख्यतादिस्वभावोऽस्य साध्यादिश्च गुणो मत:[7] ॥ ८ ॥

स सिद्धसाध्यसंबन्ध:[8] कार्यान्वय इतीरित: ।
शब्दस्यार्थस्वभावो यस्तादात्म्यं तत् प्रकीर्तितम् ॥ ९ ॥

प्रतिस्थित पाठ— २. *प्राकृतं प्राकृतं । *यथा वेद । ५. *स्यादक्षराण्या समुच्चय । *समुल्लेक्ष: । ६. *समानाधिकरण्यका: । ७. *कार्यान्वियास्तथा । *तदात्म्यं ।

---

1. P. K. विशुद्धिमत्या: । B. विशुद्धिमत्या । 2. P. विचारवर्त्ति(र्त्ती) । 3-3. P. यथावदनयो० । 4. B. स विज्ञेयं । 5-5. P. तद्गुणा: पञ्च कीर्त्तिता: । 6-6. P. विधि: पञ्चविध: स्मृत: । 7. B. गुणोत्तम:; परन्तु 'त्त' और 'म' पर क्रमश: २ और १ अंक हैं । 8. P. प्रसिद्धसाध्यसंबन्ध: ।

प्रकृतिप्रत्ययासत्तौ पदमर्थोपलम्भने ।
तत्राभिधत्ते यो मुख्यमर्थं* मुख्यः स उच्यते ।। १० ।।
तथा लाक्षणिको [1]लक्ष्माश्रित* इत्यभिधी[११B]यते[1] ।
व्यङ्ग्ययुक्तो[2] व्यञ्जकः* स्यादेषां व्यापृतिरुच्यते ।। ११ ।।
अभिधा लक्षणा [3]चाथ व्यञ्ज[ना]क्रमतो मता[3] ।
रूढियौगिक[4]मिश्राख्यास्ते* शब्दास्त्रिविधाः स्मृताः ।। १२ ।।
प्रकृतिप्रत्ययद्वारा [5]न ते वै रूढिमाश्रिताः*[5] ।
मण्डपाखण्डलाद्यास्तु [6]तत्तद्वृत्तिमुपाश्रिताः[6] ।। १३ ।।
गुणेन क्रियया वापि सम्बन्धेन च यो भवेत् ।
परस्परार्थानुगमः सम्बन्ध[7] इति [की]र्त्यते ।। १४ ।।
गुणतो नीलकण्ठाद्याः संख्यातः षण्मुखादयः[8] ।
क्रियातः स्रष्टृप्रमुखाः* संबन्धाद्भू[भु]गादयः[9] ।। १५ ।।
मत्वर्था* अपि संबन्धे कपालिप्रमुखास्ततः ।
जन्यात् कृत्सूतिधात्र्याद्या विश्वकृत्प्रमुखास्ततः ।। १६ ।।
जनकाद्योनिमुख्या स्युरात्मयोनिमुखास्ततः[10] ।
अपत्यप्रत्ययाद्येभ्य आदितेयादिकान् जगुः ।। १७ ।।
धार्यधारकसंबन्धे वृषध्वजपिनाकिनः ।
भोज्यभोजकसंबन्धेऽमृतभुक्ताद्व्रतादयः[11] ।। १८ ।।
[12]पत्युः कान्ताः प्रियातुल्याः[12] शिवकान्तादिकास्ततः ।
पत्न्याः प्राणेश्वरमुखा गौरीप्राणेश्वरस्ततः ।। १९ ।।

प्रतिस्थित पाठ— १०. *मुख्यमर्थ । ११. *लक्ष्म्याश्रित; *व्यञ्जक । १२. *रूढ़ियोगिकमित्स्याख्याते । १३. *श्रिता । १५. *सृष्टप्रमुखा । १६. *मन्वर्था ।

1-1. P. मुख्याश्रितमर्थं ब्रवीति यः; BO. लक्ष्याश्रितमित्यभिधीयते । 2. B. व्यंगयुक्तो । 3-3. K. व्यञ्जनाः क्रमतः समीरिताः । 4. P. रूढयौगिक० । 5-5. P नत्वर्था रूढिमाश्रिताः K. नन्वर्था०; BO. न ते वै रूढिमाश्रिताः । 6-6 P. K. न व्युत्पत्तिमुपाश्रिताः । 7. P. स योग । 8. P. ख(ष)ण्मुखादयः । 9. P. भुजगादयः । 10. B. मुखास्ततः । 11. P. ०ऽमृतभुक् तद्व्रतादयः; B. ०भुक्तव्रतादयः । 12-12. P. पत्युः कान्ता(:) प्रिया(स्)तुल्याः ।

सख्युः सखिप्रभृतयस्ततः शि[१२A]वसखादयः ।
वृषवाहनमुख्याः स्युर्वाह्यवाहकभावतः ॥ २० ॥
ज्ञातेः* [1]स्वसृदुहित्राद्यैर्हिमवद्दुहितृप्रथाः ।
आश्रयाश्रयिभावेन दिवौकःप्रमुखा अपि ॥ २१ ॥
स्युर्बध्यबधकत्वेन[2] पुरजिन्मुरजिन्मुखाः* ।
[3]पतिधार्यत्वे बाह्यत्वसंबन्धो[3] हि विवक्षया ॥ २२ ॥
रुद्रे वृषात्तदेकस्मात् पतिलाञ्छनवाहनाः ।
स्याद् व्यक्तिवाचको *जातिशब्दोऽपि व्यक्तिचिह्नितः[4] ॥ २३ ॥
दक्षिणा दिग्यथागस्ति[5]निवासत्वेन कीर्त्यते* ।
[6]त्रिपञ्चादिपदे योज्यौ[6] शब्दौ[7] हि विषमायुजौ ॥ २४ ॥
तेन त्रिनेत्रो विषमनेत्रोऽयुङ्नेत्र[8] इत्यपि ।
गुणो विरोधिनं वक्तीतरान्तो* नञ्पूर्वकः[9] ॥ २५ ॥
सितेतरोऽसितस्तस्मात् कृष्णोऽथो[10]व्यपदिश्यते ।
जलादिषु प्राक्पदेषु पर्यायपरिवर्तनम् ॥ २६ ॥
जलदस्तोयदस्तस्माज्जलधिर्नीरधिस्तथा ।
[11]जनिरुट् प्रभृतिष्वस्त्युत्तरेषु[11] परिवर्तनम् ॥ २७ ॥
सरोरुहं सरोजं च ततः[12] स्यादेवमादिकम् ।
सुरपत्यादिषु[13] प्राय उभयोः परिवर्त्तनम् ॥ २८ ॥
ततः सुरपतिर्देवराजः स्यात्त्रिदशेश्वरः ।
इत्याद्या यौ[१२B]गिकाः शब्दाः परिवृत्त्यसहाश्च ये[14] ॥ २९ ॥

प्रतिस्थित पाठ— २१. *ज्ञाते । २२. *पुरुजिन् पुरुजिन् मुखाः । २३. वक्ति वाचको ।
२४. *कीर्त्तते । २५. *वक्तीतरान्तो ।

---

1. P. ज्ञात(ति); BO. ज्ञातेः । B. ज्ञातस्वसृ० । 2. P. ०वधकत्वे तु । 3. P. पतिधार्यत्ववाह्यत्वसंबन्धो । 4. P. व्यक्तचिह्नतः । 5. P. ०यथागस्ति(स्त्य)०; K. पथागस्त्य० । 6-6. P. त्रिपञ्चादिपदे(ऽ)थाज्यौ(स्थाप्यौ) । K. त्रिपञ्चादिपदस्थाने । 7. B. शब्दो । 8. P. ०ऽप्ययुङ्नेत्र । K. का पाठ प्रति के समान है । 9. P. नञ्पूर्वकः । K. नञ् न पूर्वकः । 10. K. कृष्णोऽतो । 11-11. P. जनिरुध्प्रभृतिषु तूत्तरेषु ।; A. जनिरुध्रप्रभृतिष्वस्त्युत्तारेषु; B. जनिरुध्रप्रभृतिषु स्यूत्तरेषु । P. का पाठ K सम्मत है । 12. B. तत् । 13. P· सुरपत्न्यादिषु । 14. K. सहाश्रयैः ।

गीर्वाणप्रमुखाः शब्दास्ते मिश्राः परिकीर्त्तिताः ।
एतेषां कविरूढ्यैव ज्ञेयोदाहरणावलिः ॥ ३० ॥
तथा हि समयं प्राहुः कवीनामिह तद्विदः ।
जात्यादिनियमापेक्षमर्थं[1] बध्नंति कुत्रचित् ॥ ३१ ॥
असंतमपि* बध्नंति न सन्तमपि कुत्रचित् ।
दिङ्मात्रमेतदत्रोक्तं नाम्नामन्यान्यपि[2] स्वयम् ॥
कुम्भकर्णोपदेशेन[3] तर्कयेदनया* दिशा ॥ ३२ ॥
यद्यशः पदमाधातुं त्रिलोक्या गोः पदं व्यधात्[4] ।
अपि विष्णुपदं नाम[5] पदं राजा स्थिरीकृतम् ॥ ३३ ॥

[6]इति श्रीराजाधिराज० पदोल्लासे पदपरीक्षणं प्रथमम्[6] ॥ छ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ३१. *असंतिमपि । ३२. *तर्कयादनया ।

---

1. P. ०पेक्ष्यमर्थं । K. का पाठ प्रति के समान है । 2. A. B. नाम्नामन्यापि; 3. P. कालसेनोपदेशेन । K. कालदेशोप० । 4. A. B. व्यथात् । 5. P. तेन । 6-6. P. इति श्रीराजाधिराजश्रीकालसेनविरचिते संगीतराजे षोडशसाहस्यां सङ्गीतमीमांसायां पाठ्यरत्नकोशे पदोल्लासे पदपरीक्षणं प्रथमं समाप्तम् ॥

वाक्य नाम द्वितीय परीक्षण

अतीतो वाक्यमार्गं यो वेदमार्गेण मृग्यते।
वाग्वाक्यादिरूपेण*[1] ततवाक्यं[2] भजे शिवम्॥ १॥

यत: पूर्वं[3] पदार्थोऽयं वाक्यार्थे पर्यवस्यति।
ततस्तेषां समूहोऽत्र वाक्यं वाक्यविदोच्यते॥ २॥

पदव्यवहृतिर्वाक्ये पदबन्धाङ्गतो[4] मता।
द्विविधं तत्पदं ज्ञेयं निबद्धं चूर्णमेव च॥ ३॥

तत्र चूर्णपदस्यादौ लक्षणं संगृणाम्यहम्।
[5]अनिबद्धपदं छन्दोहीनं* चा[१३A]नियताक्षरम्[5]॥ ४॥

अर्थापेक्षाक्षरोपेतं ज्ञेयं चूर्णपदं बुधैः।
यतिच्छन्दः[6]समायुक्तं तथा च[7] नियताक्षरम्॥ ५॥

पादैश्चतुर्भिर्नियतं निबद्धं पदमीरितम्।
एवं नानार्थसंयुक्तैः पदैर्वर्णविभूषितैः॥
पदबन्धाः प्रकर्त्तव्याः प्रथालक्षणलक्षिताः[8]॥ ६॥

आद्येष्वष्टसु देवता निगदिता वर्गेषु सोमः कुजो
ज्ञेज्यौ* शुक्रशनी रविस्तम इति स्यात्तत्फलं च क्रमात्।
आयुर्वाच्यपदं धनं सुभगता कीर्तिश्च मान्द्यस्मृतिः
शून्यत्वं मुखतस्तदक्षरवशाद् वर्ण्यस्य[9] गीतादिषु॥ ७॥

एवं मित्रावरुणसदनादुच्चरत्प्राणशक्त्या-
संगप्रोद्यत्पवनहृतितत्स्थानजीर्णोत्करेण*[10]।
आरब्धैतत्पदघटनया[11] कारणं गीतकादे-
र्लोके सर्वव्यवहृतिपदं वाक्यमत्र न्यरूपि[12]॥ ८॥

प्रतिस्थित पाठ— १. *वाकवाक्यादिरूपेण। ४. *छेदोहीनं। ७. *ज्ञेज्यो। ८. *जार्णोत्करेण

---

1. P. K. वाक्यवाच्यादिरूपेण। B. वाक् वाक्यादिरूपेण। 2. P. K. तमवाक्यं। 3. P. BO. सर्वः। 4. P. पदबन्धागता। B. पदबंधागतो। 5-5. B. अनिबद्धपदं ज्ञेयं छन्दोहीनं चानियताक्षरम्। 6. P. यतिछ(च्छ)न्द(:)। 7. K. तथाऽत्र। 8. P. यथा लक्षणलक्षित:(ता:)। 9. P. वर्णस्य। 10. A. जार्णोत्करेण। 11. P. आरब्धे तत्पदघटनया; B. ०घट्टनया। 12. P. वाक्यमन्यन्न्यरूपि। K. वाक्यमन्यन्न रूपि। A. B. वाक्यमन्यत्र रूधि।

प्राकृतं चापि विज्ञेयं संस्कृतस्य विपर्ययात् ।
तद्भवं तत्समं देशीत्येवं त्रैविध्यमस्य तु ॥ ९ ॥

स्वरवर्णान्यतां वापि न्यूनतां वापि ये पदे ।
न्यस्ता गच्छन्ति* संयुक्तास्तद्भवास्ते* प्रकीर्त्तिताः ॥ १० ॥

तरङ्गलोलसलिलकमलामललक्षणाः* ।
तुल्याकृ[१३B]तिधरा ये तु संस्कृते ते च तत्समाः ॥ ११ ॥

महाराष्ट्रादिदेशानां भाषामाश्रित्य वर्त्तते ।
यत्तद्देशीति* विज्ञेयं सुज्ञेयमिह[1] तद्विदाम् ॥ १२ ॥

भाषा चित्रप्रबन्धेषु गाथादावुपयुज्यते ।[2]
यद्यप्येतत्तथाप्यत्र* नास्माभिरिह तन्यते ॥ १३ ॥

यद्वाक्यं राजवृन्देन शिरसा विष्णुमाल्यवत् ।
[3]शिरसा धार्यते [ते]न कुम्भेनात्र निरूपितम्[3] ॥ १४ ॥

[4]इति श्रीराजाधिराज श्रीकुम्भकर्णं० वाक्यपरीक्षणं नाम द्वितीयं समाप्तम्[4] ॥

प्रतिस्थित पाठ— १०. *गछंति । *तद्भूवांस्ते । ११. *कमलाकमललक्षणाः । १२. *यत्त-देशीति । १३. *यद्यपेतत्तथाप्यत्र ।

---

1. P. सुज्ञेयम(मि)ह । 2. K. गाधादावुपयुज्यते । 3-3. P. धार्यते कालसेनेन तेन वाक्यं निरूपितं । 4-4. इति श्रीराजाधिराजश्रीकालसेनविरचिते संगीतराजे षोडशसाहस्रयां संगीतमीमांसायां पाठ्यरत्नकोशे पदोल्लासे वाक्यपरीक्षणं द्वितीयं समाप्तम् । B. श्रीकाल-सेनेन विरचिते । BO. और प्रति में पाठ समान है ।

संज्ञा नाम तृतीय परीक्षण

व्याकृते जगतां येन नामरूपे नमाम्यहम् ।
तमरूपमनामानं[1] शङ्करं लोकशङ्करम् ॥ १ ॥

गीतं वाद्यं[2] तथा नृत्यं त्रयं सङ्गीतसंज्ञितम्[3] ।
त[द्]द्विधा भिद्यते मार्गदेशीभेदेन तत्त्वतः ॥ २ ॥

मार्गित्वाद्विरञ्चेन[4] प्रयुक्तत्वात्तर्थाषिणा[5] ।
[6]महोदयनिमित्तत्वान्नियतो मार्ग उच्यते[6] ॥ ३ ॥

तदेव रुचिवैचित्र्याच्चित्तरञ्जनकृज्जनैः ।
प्रयुक्तं स्वस्वदेशे यत्ततो देशीति कीर्त्तितम् ॥ ४ ॥

छादनादपयत्यादेरुक्ताद्यं छन्द ईरितम्[7] ॥ ५ ॥

उपमाद्या अलङ्कारा: पाठ्यालङ्कृतिहेतवः ।
[8]श्रवणाच्छ्रुतयस्ताश्च तीव्राद्या: स्वर[१४A]हेतवः[8] ॥ ६ ॥

स्वरयन्ति मनांसीह श्रोतॄणां स्वार्थतो यतः
षड्जादिका:* स्वरास्तेन ते च[9] साद्यक्षराभिधाः ॥
यथा गोत्रकुलाचारोत्पन्नं पुंन्नामसंमतम् ॥ ७ ॥

तथा ज्ञेया रसानां च स्वराणामभिधा[10] इमाः ।
श्रुत्युत्कर्षापकर्षौ* हि विकृतिः प्रकृतिर्मतौ[11] ॥ ८ ॥[12]

व्यवस्थितश्रुतियुता यत्र संवादिनः*[13] स्वराः ।
मूर्च्छनाद्याश्रयो नाम स ग्राम इति संज्ञितः ॥ ९ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ७. *खड्गादिका । ८. *श्रुत्युत्कर्षापकर्षैं । ९. *संवासिनः ।

---

1. B. तमरूपनामानं । 2. A. गीतवाद्यं । 3. P. संगीतमुच्यते । 4. P. विरिञ्चेन । 5. P. प्रयुक्तत्वात्तथा(थ)षिणा । 6-6. P. महोदयनिमित्तत्वाद् विख्यातो मार्गं उ(च्य)ते; B. ०निमित्तत्वाद्विषयतो । 7. B. इरितम् । 8-8. P. में यह पंक्ति आगे ८वें पद्य का उत्तरार्ध है । 9. P. चे त (ते च) । 10. P. स्वरानामभिधा । 11. P. प्रकृतिर्मतौ(ता) । 12. P. ८ वां श्लोक इस प्रकार है—

विभूषयन्ति च रसं केयूरादिवदङ्गिनाम्(नम्) ।
श्रवणाच्छ्रुतयस्ताश्च तीव्राद्याः स्वरहेतवः ॥ ८ ॥

13. P. संवासि(दि)नः ।

आरोहेणावरोहेण क्रमेण स्वरसप्तकम् ।
रागादेर्मूर्च्छनादत्र[1] मूर्च्छना परिकीर्त्तिता ॥ १० ॥
ता एव शुद्धतानाः स्युः षाडवौडविकाः स्मृताः[2] ।
पूर्णापूर्णविभेदेन द्विधा या मूर्च्छना स्मृता* ॥ ११ ॥
ता एव कूटतानाः* [3]स्युर्व्युत्क्रमोच्चरिताः स्वराः[3] ।
प्रस्तारे पूर्वरूपाणि तेषां मूलक्रमाः स्मृताः ॥ १२ ॥
साधारणीकृताशेषभूभुजा कुम्भभूभुजा[4] ।
साधारण्यात् स्वरजात्योः साधारणमिहोदितम् ॥ १३ ॥
स्थाय्यादिभिश्चतुर्द्धासौ[5] वर्णो गानक्रियामतः ।
एक एव स्वरो यस्तु स्थित्वा स्थित्वा पुनः पुनः ॥ १४ ॥
प्रयुज्यते स तु स्थायी परावन्वर्थनामकौ ।
आरो[१४B]ही वाऽवरोही[6] च संचारी तद्वियोगजः ॥ १५ ॥
प्रतिपक्षक्षमापालभालालङ्काररूपिणा ।[7]
विशिष्टो वर्णसङ्घातोऽत्रालङ्कार उदीरितः[8] ॥ १६ ॥
अतारविश्रम[9]स्वांशापन्यास[न्यास]भूषणात् ।
क्रियते कुम्भभूपेन[10] शुद्धजातिपरिग्रहः ॥ १७ ॥
स्वनामस्वरविश्रामविशिष्टत्वेन तद्बहिः ।
शुद्धलक्ष्मविनाभूता विकृताः किं न[11]सम्मताः ॥ १८ ॥
गीतमुद्ग्राह्यते येन स स्वरो ग्रह उच्यते ।
प्रयोगे बहुलोंशः स्यान्न्यासो गीतिसमाप्तिवत् ॥ १९ ॥
विदारी गीतखण्डः* स्यादपन्यासस्तदन्तकृत् ।
विन्यासः स विदार्यंश[12]पदप्रान्ते स्थितस्तु यः ॥ २० ॥

प्रतिस्थित पाठ— ११. *स्मृताः । १२. *कूटताना । २०. *खंडं ।

---

1. A. रागादेमूर्च्छनादत्र; B. रागादेर्मूछनादत्र । 2. P. षाडवौडुवितीकृताः । 3-3. P. स्युर्व्युत्क्रमोच्चारितस्वराः । 4. P. तामराजिना । 5. B. स्थायादिभिश्चतुर्धासौ । 6. P. चावरोही । 7. P. ०भालं(ला)लंकाररूपिणा । 8. P. उरीकृतः । 9. B. अतारविःश्रम । 10. P. कालसेनेन । 11. A. कि न; P. किं न (तु); 'किं च' भी संभव पाठ है । 12. B. विदार्यंस ।

अंशाविवादी [1]सन्यासः कुम्भस्वामिगणोदितः[1] ॥ २१ ॥

यस्मात्तारस्य[2] मंद्रस्य च मतिरनुवादी च[2] संवादिसंज्ञे-[3]
त्यस्यान्यः[4] स्याद्विवादी स्वर* इह जनयेद्यश्च गेयेऽत्र रक्तिम् ।
न्यासापन्याससन्यासकविधिकलसन्यासवर्गे ग्रहत्वं
प्राप्तोंशो योग्यतातो भवति च बहुलो यो विदार्यां स वादी ।। २२ ।।

रा[जा] सः स्याद्विवादी रिपुरि[व] विवदन् मुख्यमंत्रीव त[१५B]स्मिन्
संवादी संवदन् योऽनुवदति[5] खलु तं* सोऽनुवादी स्वरोऽस्मिन् ।
अंशत्वं व्यापकत्वे* सति पुनरुदितं गेयकर्मण्यमुष्य[6]
क्षोणीसुश्रोणिभर्त्ता[7] तदनु च बहुशो[8] गानतानप्रयोगे[9] ॥ २३ ॥

षाडवं* षट्स्वरं प्रोक्तं तत्पञ्चस्वरमौडवम्* ।[10]
[11]पुनरावृत्तिरभ्यासात् परामर्शोऽत्र[11] लङ्घनम् ॥ २४ ॥

अलङ्घनं तथाभ्यासो बहुत्वे लक्ष्म चक्षते ।
वादिसंवाद्यनपरपर्यायं[12] तु तदिष्यते ।
अलङ्घ्यविषयो[13]ऽल्पत्वबहुत्वस्य विपर्ययात् ॥ २५ ॥

हित्वा न्यासादेः स्थितिं यः स्वराणां
मध्ये [14]मध्येऽल्पत्वमाहुश्च केचित्[14] ।
सङ्गोंऽशाद्यैः कोऽपि वैचित्र्यहेतुः
प्रोक्तो मार्गः सोऽन्तराख्यः स्वरज्ञैः ।। २६ ॥

अल्पप्रयोगः सर्वत्र काकली चाऽन्तरस्वनः[15] ॥ २७ ॥*

प्रतिस्थित पाठ— २२. *स्याद्विवादीश्वर । २३. *त । *त्यापकत्वे । २४. *षांडवं; *०मौंडवं । २८.*इस अर्द्धाली पर २६ के बाद सीधा २८ पद्यांक दिया है ।

1-1. P. संन्यासो वनदेवगणोदितः । 2-2. P. K. ०गतिरनुवादी च । A. B. मंद्रस्यावगतीरनुवादी च । 3. P. K. संवादिसंज्ञो । 4. P. यस्यान्यः; A. यः स्यान्यः ; B. में 'यः' के बाद दो तीन अक्षरों का स्थान रिक्त है फिर 'स्याद्विवादी' है; K. यः स्याद्वादी विवादी । 5. A. B. यो ननु वदति । 6. B. शक्तिम् । 7. P. भर्त्रा । 8. P. बहुलत्वं । 9. P. सुगानप्रयोगे । 10. P. ०मौड(ड)वम् । 11-11. P. पुनरावृत्तिरभ्यास ईषत्स्पर्शोऽत्र । 12. P. वादिसंवाद्यनपरर्यायं । 13. P. अनंशविषयो । 14-14. P. मध्येऽल्पत्वभाजां कदाचित् । 15. P. चान्तरः स्वरः ।

मन्द्रप्रसन्नो मृदुसंज्ञकश्च
लिपौ भवेद्बिन्दुशिराः स एव ।
तारस्तु दीप्तः परमूर्द्धरेखा[1]
शिरालिपौ* त्रिर्वचनात् प्लुतः*[2] सः ॥ २८ ॥[3]

स्यान्मूर्च्छनायाः प्रथमः स्वरोऽत्र
मंद्रः स एव द्विगुणस्तु तारः ।
तत्पूर्वपूर्वो भवतीह मंद्रः*
[4]परोऽपरोऽन्यः स विभूषितश्च[4] ॥ २९ ॥

स्वरसाधारणमुदितं[१५B]मम येष्वंशेषु[5] नियतमनुरूपम् ।
पञ्चमिकामध्यमिकाजात्योस्तु सषड्जमध्यमयोः ॥ ३० ॥

अल्पद्विश्रुतिकासु जातिषु* तथा रागेषु भाषास्विदं
तावंशौ* यदि षड्जमध्यमिकया न स्यात् सहस्थास्तुकम्* ।
एवं कैमुतिकेन[6] निश्चितमिदं तस्यापि तत्राश्रयाः[7]
प्रायः स्युर्विकृता[8] इहैव भणितौ श्रीचित्रकूटेशितुः[9] ॥ ३१ ॥

सलयतालपदा स्वरराजिता
विविधवर्णविभूषणभूषिता ।
गमकपेशलगानगुणाञ्चिता[10]
मुनिवरैरिह गीतिरुदाहृता ॥ ३२ ॥

विचित्रवर्णालङ्कारो विशेषो[11] यो ध्वनेरिह* ।
ग्रहादिस्वरसंदर्भो रञ्जको राग उच्यते ॥ ३३ ॥

तत्र[12]ग्रामसमुद्भूतः पञ्चगीतिसमाश्रयात्[12] ।
शुद्धादिभेदसंभिन्नो ग्रामराग इतीरितः ॥ ३४ ॥

प्रतिस्थित पाठ— २८. *लपो । *प्लुता । २९. *मंद्राः । ३१. *अथ द्विजातिस्वर-जातिषु; *तोवंशौ । *सहस्थाणुकम् । ३३. *ध्वनैरिह ।

---

1. P. परमूर्ध(ध्वं)रेखा । 2. P. प्लुत सः । 3. P. में पद्य संख्या यहां २८ है जो सही है; प्रति में एक संख्या आगे चल रही है । 4-4. P. परः परोऽभ्यः स विभूषणेषु । 5. P. समपेष्वंशेषु । 6. P. कौतुकिनात्र (कैमुतिकेन) । A. कौमुतिकेन । K. कौतुकिना । 7. P. तत्रापि तस्याश्रयाः । 8. B. स्युर्षीकृता । 9. P. श्रीब्रह्मशैलेशितुः । 10. B. गानपुणांचिता । 11. P. विशेषे(षो) । 12-12 P. ग्रामसमुद्भूतपञ्चगीतिसमाश्रयात् ।

तदुद्भवश्चोपरागो रागो रञ्जनकृत्तमः ।
भाष्यते[1] येन तच्छाया[2] स भाषाराग[3] उच्यते ॥ ३५ ॥
तां मिश्रित्य*[4] प्रवृत्ता या विभाषा भाषिताऽत्र सा ।
भाषाविभाषयोरन्तरुत्पन्नान्तरभाषिका ॥ ३६ ॥
भाषाद्या गीतयस्तिस्रो या[१६A]ष्टिकेनोररीकृताः[5] ।
तत्र भाषा समाख्याता मुख्यानन्योपजीविनी ॥ ३७ ॥
स्वरनाम्ना स्वराख्या तु देशाख्या* देशनामतः ।
आभ्यस्तिसृभ्यो* जायन्ते[6] यास्ताः स्युरुपरागजाः ॥ ३८ ॥
स्वजात्युद्योतकत्वे येऽनुवर्त्तन्ते तु तामिह* ।
अन्यजातिविरूपा ये ते शुद्धा राजसम्मताः[7] ॥ ३९ ॥
श्रुतिभिश्च स्वरैश्चैव शुद्धत्वेन च जातिभिः ।
चतुर्भिर्भिद्यते यस्तु स भिन्न इति कीर्त्यते ॥ ४० ॥
रागाङ्गत्वं ग्रामरागच्छायामात्रोपजीवनात् ।
भाषाणामाश्रिता छाया यैस्तदङ्गानि तानि च ॥ ४१ ॥
क्रियाङ्गानि च कथ्यन्ते दीपिकादिक्रियायुजे[8] ।
श्रोतृचित्तोत्साहकमुखयोगाच्च[9] कोविदैः* ॥ ४२ ॥
अङ्गाश्रयसमुत्पन्नान्युपाङ्गानि च मेनिरे ।
देशीरागत्वमप्यस्य रागाङ्गादेरुदीरितम् ॥ ४३ ॥
पदं वागभिधेयं[10] स्यात् सा मातुरभिधीयते ।
गेयं धातुस्तयो[:]कर्त्तोच्यते* वाग्गेयकारकः ॥ ४४ ॥
गान्धर्वो*[11] मार्गदेशीवित् स्वरादेर्मार्गकोविदः[12] ।
गान्धर्वं तत्र विज्ञेयं स्वरतालपदात्मकम् ॥ ४५ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ३६. *तामिश्रित्य। ३८. *देशाख्यो * अभ्यस्तिसृभ्यो। ३९. *नामिह। ४२, *कोविदं। ४३. *देशीयराग०। ४४. *धातुस्तयोऽकर्त्तोच्यते। ४५. *गंधर्वो।

1. P. भाव्यते। 2. P. तछा(च्छा)या। 3. P. भाषां(षा)राग। 4. P. तामाश्रित्य। 5. P. याष्टिकेयो(नो)०। 6. K. भिद्यन्ते। 7. P. राज(ग)सत्तमाः (राजसम्मताः)। 8. P. दीपकादिक्रियायुजेः। 9. P. ०करणयोगाच्च। 10. P. वागभिधेया। 11. B. गंधर्व। 12. P. स्वरादिर्मार्गकोविदः।

पुरा प्रणष्टां देवेभ्यो वाचं गोरूपधारिणीम् ॥ [१६B]
अधारयदिति प्रोक्तं गान्धर्वमिह सूरिभिः ॥ ४६ ॥
अत्यर्थमिष्टं देवानामत एव प्रकीर्त्तितम् ।
वंशवीणाशरीरेभ्यः प्रभवस्तस्य सम्मतः ॥ ४७ ॥

तथा चोक्तं--

[1]पदस्थस्वरसङ्घातस्तालेन[1] सुमितस्तथा ।
प्रयुक्तश्चावधानेन गान्धर्वमभिधीयते ॥ ४८ ॥
[2]पुनर्गीतिं पुनर्वाद्यं गेयं[2] योज्यं पुनः पुनः ।
[3]अलात*चक्र प्रतिमरसभावविभावकम्[3] ॥ ४६ ॥
श्रोतुश्चित्तस्य सुखदो गमकः स्वरकम्पनम् ।
स च वाग इति स्थायो[4] रागस्यावयवः स्मृतः ॥ ५० ॥
यत्नतो[5]ऽतिशयारोपो रागस्य भजनं मतम् ।
गमकस्थायवर्णाद्या नानालङ्कृत्यलङ्कृताः[6] ॥ ५१ ॥
रागाल(ा)पनमालप्तिर्भूरिभङ्गिमनोहरा ।
प्रयोगाद्वा* तथालापसंज्ञा साक्षरवर्ज्जिता ॥ ५२ ॥
अनिबद्धं च तामाहुर्गीतं गोतविशारदाः
गातॄणां वादकानां[च] समूहो वृन्दमुच्यते ॥ ५३ ॥
रागोऽभिधीयते गीतं दशलक्षणलक्षितः ।
लक्षणानि च तत्रांशन्यासौ षाडवमौडवम्[7] ॥ ५४ ॥
अल्पत्वं च बहुत्वं च ग्रहोपन्याससंयुतः ।
मन्द्रताररता[8] चापीत्येवं ज्ञेयानि सूरिभिः ॥ ५५ ॥
प्रबं[१७A]धो रूपकं वस्तुनिबद्धं गीतमुच्यते ।
निबद्धावयवो धातुर्धराधीशस्य[9] सम्मतः ॥ ५६ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ४६. *आयातचक्रप्रतिम० । ५३. *प्रयोगाह्वा ।

1-1. P. पदस्थ(:)स्वरसंघात(स्)तालेन । 2-2. P. पुनर्गीतं पुनर्वाद्यमेवं; B. पुनर्वाद्यमेव । 3-3. P. अलातचक्रप्रतिमं रसभावविभावकम् । 4. P. स्थायी । 5. P. यत्ततो । 6. P. ०कृता । 7. P. षाडवमौडुवम् । 8. P. मंद्रता तारता । 9. P. धातुध(र्ध)-राधीशस्य ।

कलाकालप्रमाणेन ताल इत्यभिधीयते ।
अर्द्धमात्रा[1] द्वे च तिस्रो द्रुतो लघुगुरुप्लुताः ।। ५७ ।।

क्रमात्तेषां चतुर्णां स्युः संज्ञा दलगपा[2] इति ।
*० ० ० ०̄ ० ० ० ० ० ० ० ० ०
[द्रुते स्याद्देवता शम्भुर्हिमवद्दुहिता लघौ ।
शिवौ गुरुणि संप्रोक्तौ प्लुते ब्रह्मादयस्त्रयः ।। ५८ ।।]*
*द्रुते व्यञ्जनं व्योम बिद्वर्धमात्रं
लघौ व्यापकं ह्रस्वमृज्वेकमात्रम् ।
गुरौ वक्रदीर्घौ*[3] कला च द्विमात्रं
प्लुते सामजत्र्यङ्गदीप्तत्रिमात्रा* ।। ५९ ।।

द्रुतलघ्वादिरूपाढ्य*क्रियामानोपलक्षितः ।
गीतादिकं परिच्छिन्दन्[4] कालस्ताल इतीरितः ।। ६० ।।

पञ्चलघ्वक्षरोच्चारमिता मात्रा कलाऽत्र सा[5] ।
मार्गभिन्नलयोपेता छोटिका चात्र मार्गिता ।। ६१ ।।

ततः कलाकालकृतो लयः सलयमीरितः* ।
तत्प्रवृत्तेर्नियमनं यतिर्यतिभिरीरिता ।। ६२ ।।

ततं वीणादि सुषिरं*[6] वंशादि मुरजादि च ।
आनद्धं* च[7] घनं कांस्यतालादिपरिकीर्तितम्[8] ।। ६३ ।।

वाद्यवर्णसमूहस्तु पाटः पटुधियां मतः ।
वाद्यमात्रोच्यते तत्तत् पाणियोगेन वादनम् ।। ६४ ।।

रूपादिकं तत्करणं वाद्यप्रकरणे मतम् । [१७B]
स्वरास्ते धातवः प्रोक्ता ये प्रहारविशेषजाः ।। ६५ ।।

गुणप्रधानभावेन याऽसौ व्यवहृतिर्मता ।
वृत्तिर्निगद्यते साद्या वाद्यविद्याविशारदैः ।। ६६ ।।

प्रतिस्थित पाठ— ५८. *–*बिन्दुओं द्वारा स्थान रिक्त छोड़ा गया है; कोष्ठान्तर्गत पद्य नहीं है । ५९. *यहां 'ए' अक्षर और लिखा है । *बिबर्धमात्र । *मात्राः । ६०. *रूपाद्य० । ६२. *०मीरितिः । ६३. *शुखिरं । *अनद्धं ।

---

1. P. अर्ध(र्धं) । 2. P. दलपगा(गपा) । 3. A. दीर्घो । 4. A. B. परिछिदन् । 5 P. कला च सा । 6. P. सुखि(षि)रं । 7. P. अवनद्धं । 8. P. कांस्यं तालादि० ।

गीतानुगं त्रिःप्रकारं [1]वाद्यं ततादिकं* मतम्[1] ।
विन्यासाः पाटवर्णानां वाद्यानि मुरजादिषु ।। ६७ ।।

स्कन्धादिकम्पः सञ्चः स्यात् कोणः कुराप[2] इत्यपि ।
वीणादिवादनो दण्डः प्रवीणैरुपवर्ण्यते ।। ६८ ।।

उद्ग्राहा विविधा वाद्यप्रबन्धाः पाटवर्णजाः ।
विभावयन् विचित्रार्थनङ्गाद्यैर्यः प्रयोगतः ।। ६९ ।।

रसाविर्भावको द्रष्टुर्नृत्यार्थाभिनयस्तु[3] सः ।
स चतुर्द्धा बुधैर्ज्ञेयस्तत्राङ्गैर्दर्शितो मतः ।। ७० ।।

आङ्गिको वाचिकश्चैव नाटकादिषु तत्त्वतः ।
तान् वा[4] विरच्यते यस्तु विज्ञेयः सात्त्विकः पुनः ।। ७१ ।।

विभावितस्तु यो भावैः सात्त्विकैर्भावकैर्न हि[5] ।
आहार्यः स तु विज्ञेयः किरीटादिविभूषणैः ।। ७२ ।।

शोभामाहृत्य जनितो नटेऽनुकृतितस्ततः[6] ।
तत्राङ्गोऽभिनयस्यैतत्[7] त्रयं मुख्यं प्रकीर्तितम् ।। ७३ ।।

शाखा चैवाङ्कुरश्चैव नृत्तं चेति समासतः ।
व्यापा[१८A]राः करयोर्येऽत्र[8] विचित्रार्थविबोधकाः ।। ७४ ।।

ते स्मृता वर्त्तनास्तज्ज्ञैस्ताः शाखाः परिकीर्तिताः ।
भूतवाक्यार्थविषयमुपजीव्य प्रवर्तितः ।। ७५ ।।

चित्तवृत्त्यर्पकोऽङ्गानां[9] व्यापाराङ्कुर ईरितः[10] ।
स एव सूचीसंज्ञः[11] स्याद्भाविवाक्योपजीवकः ।। ७६ ।।

अङ्गहारविनिष्पन्नं नृत्तं तु करणाश्रयम् ।
एतच्चतुर्द्धाभिनयेनोपेतं नाटचमुच्यते ।। ७७ ।।

प्रतिस्थित पाठ— ६७. *तत्त्वादिकं ।

1-1. P. मतं वाद्यं ततादिकम् । 2. P. कुल(त ?)प । 3. P. द्रष्टुर्नटेऽर्थोभिनयस्तु सः । 4. P. वाचा । 5. P. सात्त्विकैर्भाविकेन हि ।; BO. में भी यहां पाठान्तर नहीं है । 6. P. नटेऽनुकृतितः सतः । 7. P. तत्राङ्गाभिनयस्यैतत् । 8. P. करयोर्यंत्र । 9. P. चित्तवृत्यर्थकोऽङ्गानां । 10. P. व्यापारोऽङ्कुर इ(ई)रितः । 11. P. सूचासंज्ञः ।

नृत्यं तत्राङ्गिकैरेवाभिनयैर्व्यञ्जकं तु यत्।
भावानां मार्गशब्देन तदेवात्रोपवर्णितम्[1] ॥ ७८ ॥

[... ... ...][2]
नाट्यादित्रितयं ह्येतत् द्विविधं परिकीर्तितम् ॥ ७९ ॥

लास्यताण्डवभेदेन तत्र लास्यं तदुच्यते।
ललनाललिताङ्गैर्यत् साधितं कामवर्द्धनम् ॥ ८० ॥

आसारितादिभिर्गीतैरुद्धतप्रायवर्द्धितैः*[3]।
करणैरङ्गहारैश्च निवृत्तं विषमैरिह ॥ ८१ ॥

ताण्डवं तण्डुना* प्रोक्तं नृत्तं नृत्तविदो विदुः।
केचिद् भेदत्रयं चान्यन्* नृत्तस्याहुर्मनीषिणः[4] ॥ ८२ ॥

विषमं विकटं लध्वित्यत्र तद्विषमं मतम्।
यदभ्यासवशाद्रज्जुभ्रमणादि प्रदृश्यते ॥ ८३ ॥

विकटं रूपवेषादौ वैरूप्येण* प्रवर्तितम्। १८B]
लघु[5] स्यात् करणैरल्पैरञ्चिताद्यैर्विशेषितम् ॥ ८४ ॥

नन्वत्र नाट्यशब्दोऽयं नर्त्तने*वर्त्तते कथम्।
यतोऽ[त्र] मुख्यया वृत्त्या रसाविर्भावकत्वतः[6] ॥ ८५ ॥

अभिधत्ते रसं नैतद्वृत्त्या लक्षणया कथम्[7]।
रसाभिव्यञ्जकत्वेनाभिनयादि चिकीर्षता[8] ॥ ८६ ॥

नर्त्तने नाट्यशब्दोऽयं वर्तते नात्र दूषणम्।
अभिनेयपदार्थस्योल्लेखने प्रक्रिया पुनः ॥ ८७ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ८१. *वर्तितैः। ८२. *तडुना। *चान्य। ८४. *नैरूप्येण।
८५. *वर्त्तने।

---

1. P. तदेवात्रोपदर्शितम्। 2. P. में इस स्थान पर यह पद्य और है; BO के पाठान्तरों में इस पद्य का उल्लेख नहीं है–अतः यह उसमें भी होगा—

आङ्गिकोक्तेन विधिनाभिनयैर्यद्विना कृतम्।
गात्रविक्षेपणं तद्धि[१] नृत्तमत्रोपवर्णितम् ॥ ७९ ॥

3. P. ०प्रायवर्द्धनैः। 4. P. नृत्यस्याहुर्मनीषिणः। 5. P. लघुः। 6. B. रसाविर्भावकात्ततः। 7. P. स्वयम्। 8. P. चिकीर्षतः।

---

१. B तत्रद्धि।

कुत्रचिल्लोकधर्मीति नाटयधर्म्यपि* कुत्रचित् ।
तत्रादौ लोकधर्म्यास्तु लक्षणं प्रोच्यते मया ॥ ८८ ॥

स्वभावाच्चेतसो वृत्तेरुपगन्त्री विवर्जिता ।
विकारेण विशुद्धा च लोकवार्ता क्रियायुता ॥ ८९ ॥

स्वभावाभिनयोपेता ह्यङ्गलीलां* विना कृता ।
नानास्त्रीपुंश्रिता लोकधर्मी नाटयक्रिया स्मृता ॥ ९० ॥

न श्रूयते यत्र वाक्यं योग्यं श्रवणकर्मणा[1] ।
अनुक्तमपि वा यत्र श्रूयते कुतुकादिव* ॥ ९१ ॥

लोके यदप्रसिद्धं तु नाटये किञ्चित्[2] प्रयुज्यते ।
मूर्त्तिमत् साभिलाषं च नाटयलक्षणलक्षितम् ॥ ९२ ॥

अतिवाक्यक्रियोपेतं स्वरालङ्कारसंयुतम् ।
लीलाङ्गहाराभिनयं रागाभिव्यक्तिकारणम् ॥ ९३ ॥

अश्वस्थपुरुषोपेतमतिसत्त्वविभावकम् ।
शैलयानविमानानि चर्मवर्मायुधध्वजाः[3] ॥ ९४ ॥

मूर्त्तिमन्तः प्र[१९A]युज्यन्ते नृत्यते गम्यतेऽपि वा ।
ललितैरङ्गविन्यासैस्तथाक्षिप्तपदक्रमैः ॥ ९५ ॥

सुखदुःखक्रियारूपः स्वभावो यस्तु लोकगः ।
सोऽङ्गाभिनयसंयुक्तो[4] दिव्यमानुषरक्तिदः ॥ ९६ ॥

ब्रह्मोक्तश्चेतिहासोऽयं नाटयधर्मीति कीर्त्तिता (तः ?)।
यस्मात् सर्वोऽपि रागोऽयं नह्यङ्गाभिनयादृते ॥ ९७ ॥

सर्वोऽप्यभिनयो ह्येष पदार्थज्ञानसंभवः ।
अङ्गालङ्कारचेष्टादि नाटयधर्मे[5] प्रतिष्ठितम्* ॥ ९८ ॥

अङ्गानि शिर आदीनि प्रत्यङ्गानि तथैव च ।
ग्रीवादीनि तथोपाङ्गं दृष्टिपार्ष्ण्यादिकं[6] मतम् ॥ ९९ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ८८. *धर्मपि । ९०. *ह्यंगलीला । ९१. *कुतकादिव । ९८. चेष्टा-श्चेनाट्यधर्मां प्रतिष्ठितं ।

---

1. P. श्रवणकर्मणः । 2. P. केचित् (कँश्चित्) । 3. A. चर्मघर्मायुधध्वजाः; B. चर्मधर्मायुध० । 4. A. संयुक्तौ । 5. P. नाटयधर्म्या । 6. P. दृष्टिपार्श्वादिकं ।

व्यञ्जकाः स्युर्मनोवृत्तेर्मुखरागा रसाश्रयाः ।
करप्रचाराः करयोर्व्यापाराः करणानि च ॥ १०० ॥

क्रियाविशेषो हस्तस्य स्वतन्त्रोऽभिनयाय[1] यः ।
निष्पत्तिर्विषये तानि ध्वननाद्यास्तु[2] तत् क्रियाः ॥ १०१ ॥

विश्रान्तिस्थानकं क्षेत्रं सविलासं करस्य तु ।
सविलासा रसोपेता[:] करपादादिकक्रियाः[3] ॥ १०२ ॥

कारणं नृत्यकरणं तदेव परिकीर्तितम् ।
[4]तदेवोत्प्लुतिपूर्वं स्यादुद्धतप्रायनर्त्तने[4] ॥ १०३ ॥

अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपः करणैरुपबृंहितः ।
चालनं करपादादे* रेचकः सविलासकम् ॥ १०४ ॥

विचित्रं चरणादीनां कर्म चारीसमं कृतम् ।
चारणं[5] चरणं चित्रं मण्डलं संप्रचक्ष[१६B]ते ॥ १०५ ॥

स्थानं स्यादक्रियः कश्चित्* सन्निवेशः शरीरगः ।
तदर्थसाधनी[6] चेष्टा वाङ्मनःकायसंभवा ॥ १०६ ॥

वृत्तिः स्यात् स्वान्यशस्त्राणां[7] कर्त्तुं पातमपातने*[8] ।
उचिता नर्त्तनाङ्गस्य[9] संग्रामे न्याय उच्यते ॥ १०७ ॥*

[मनोहरा स्थिती रेखा त्वङ्गानां मेलके सति ॥
योग्यः श्रमविधिः[10] पात्रं नर्त्तनाधार इष्यते ।]* ॥ १०८ ॥

तदेव गौण्डलीं प्राहुः स्वयं गायनदर्शनात्[11] ।
स्यादाचार्य उपाध्यायः[12] संप्रदायस्तु तद्विदाम् ॥ १०९ ॥

वृन्दमाहुः पद्धतिश्च नृत्यस्य परिपाटिका ।
वर्णकैरुपलिप्ताङ्गो लयतालविचक्षणः ॥ ११० ॥

प्रतिस्थित पाठ— १०४. *०पादारे । १०६. कश्चि । १०७. *पद्य सं० १०७ नहीं है । १०७. *पातमपातने । १०८. *यह पद्य प्रति में नहीं है ।

---

1. B. स्वतन्त्राभिनयाय । 2. P. धूनानद्यास्तु । 3. P. करपादादिका क्रिया । 4-4. P. तदेवो(त्)प्लुतिपूर्वं स्यात् उद्धतप्रायनर्त्तने । 5. P. चारीणां । 6. P. पुमर्थसाधनी । 7. B. शास्त्राणां । 8. P. च्यावनपातने । BO. पातमपातने । 9. P. वर्त्तनाङ्गस्य । 10. BO. गेयविधिः । 11. P. गायननर्त्तनात् । 12. P. उपाध्याय(:) ।

सभाजनमनोहारी यो नृत्यति स प्रेरणी[1] ।
नटोऽभिनयवेदी स्यान्नर्त्तको मार्गनृत्यवित् ।। १११ ।।

रस्यते यः सहृदयैः स रसो रसिकप्रियः ।
शेषं स्वावसरे लक्ष्माभिधास्ये[1] लक्ष्मविन्मुदे[2] ।। ११२ ।।

भूभृत्त्वं भूभृतां येन कुटुम्बीकरवत्*[3] कृतम् ।
संज्ञायै केवलं तेन राज्ञा संज्ञा निरूपिता ।। ११३ ।।

[4]इति श्रीराजाधिराज श्री कुं० पदोल्लासे रसपरीक्षणं तृतीयं समाप्तम् ।। छ ।।[4]

प्रतिस्थित पाठ— १११. *पेरणी । ११३. *कुटंबीकरवत् ।

1. A. B. लक्ष्म्याभिधास्ये । 2. A. लक्ष्म्यविन्मुदे । 3. P. कुटुम्बीकरणात् ।
4-4. P. इति श्रीराजाधिराजश्रीकालसेनविरचिते संगीतराजे पाठ्यरत्नकोशे पदोल्लासे संज्ञापरीक्षणं तृतीयं समाप्तम् ।।

परिभाषा नाम चतुर्थ परीक्षण

पुमानिति परात्मेति[1] कर्त्तेति परिभाष्यते ।
यस्तीर्थिकैस्तमीशानं* भाषातीतं नमाम्यहम् ॥ १ ॥
अंशान्मध्यमसप्तक[2]स्थि[२०A]तवतस्तारावधाव(ा)व्रजेत्—
तारस्थांश्चतुरः स्वरानिह ततोऽव्वाक्कामचारः[3] स्मृतः ।
आरो[हा]दपि[4] तारषड्जमवधिं तं* नन्दयन्त्यां विधा–
यारोप्यो गणनाविधाविह परं लुप्तस्वरोऽप्याहृतैः ॥ २ ॥
अंशान्मध्यमसप्त वा[5] स्थितव[तो] ह्यामन्द्रकस्थांशकं*
मन्द्रन्यासकमाप्य[6] वा तदधरत्रिश्रुत्यवस्थावधि ।
कार्यं जात्ववरोहणं निगदिता सीमा परेयं सदा
मन्द्रस्थानगतेरतोऽवगमनेऽव्वाक्कामचारः[7] स्मृतः ॥ ३ ॥
पूर्णत्वे सति षाडवौडुवकृतोरल्पत्वमत्यल्पता[8]
वाक्यादेव विधीयते क्रमतया प्राप्तापि विद्या ततः[9] ।
पञ्चम्यां तु विपर्ययेण[10] भवतो जातौ यतस्ते* द्वयोः
प्राप्तौ तत्परिसंख्ययैकवचनं प्रायोऽभिधेयास्पदम्[11] ॥ ४ ॥
ये[12] प्रयोगमवन्तीह मिलित्वा षट्स्वरास्तु ते ।
षाडवाः षट्स्वरं[13] गीतं षाडव तद्भवत्वतः[14] ॥ ५ ॥
यस्मिन् वांत्युडवस्तदुक्तमुडवं[15] भूतेषु तत्पञ्चमं
तत्संख्यौडुविकावशेन गदिताः पञ्चस्वरास्त्वौडुवाः ।
संञ्जातास्त इमे तदौडुवितमत्रोक्तं तु गीतं बुधैः
संबन्धास्तत[16] एव वि[२०A]श्रुतिमगात्[17] पञ्चस्वरं त्वौडुवम् ॥ ६ ॥*

प्रतिस्थित पाठ— १. *यस्तीर्थे कैस्तमीशानं । २, *बधितं । ३. *०स्थांकशं । ४. *यस्ते । ५. *५ का अंक पुनः दोहराया गया है और यही क्रम आगे तक चालू रहा है ।

---

1. B. कुछ स्थान छोड़ कर 'पुमान् परमात्मेति' । 2. P. अंशान् मध्यमसप्तकं । 3. P. ततो वाक्कामचारः । 4. P. आरोहेदपि । 5. P. अंशान्मध्यमसप्तकं । 6. A. B. न्यासकमाद्य । 7. B. गमने वाक्कामचारः । 8. P. षाडुवोडुव० । 9. P. विद्यावता । 10. B. विपर्येण । 11. P. प्रायो विधेयास्पदम् । 12. P. यो(ये) । 13. P. ष(ट्)स्वरं । 14. P. तद्भवं ततः । 15. B. यस्मि वात्युडव० । 16. P. संबंधास्तत । 17. B. विश्रुति गात्; 'ति' के बाद स्थान छूटा हुआ है ।

ताल एककले मार्गश्चित्रो[1] गीतिस्तु मागधी ।
द्विकले* वार्त्तिको मार्गो गीतिः संभाविता मता ।। ७ ।।

चतुष्कले तु पृथुला गीतिर्मार्गस्तु दक्षिणः ।
या जातिषु कला प्रोक्ता सा दक्षिणपथाश्रिता[2] ।। ८ ।।

चित्रवार्त्तिकयोर्ज्ञेया द्विगुणा द्विगुणा तु सा ।
अंशस्वररसस्तज्ज्ञैर्ज्ञातव्यः सर्वजातिषु ।। ९ ।।

अंशश्च जन्यरागाणां ज्ञेयो जनकजातिषु ।
स्यातां* मेलापकाभोगौ रूपकेन[3] क्वचित् क्वचित् ।। १० ।।

यत्र वस्तुकृता* वस्तु नोक्तमाभोगलक्षणम् ।
पदैस्तत्र प्रकर्त्तव्य[4] आभोगो गीतकोविदैः ।। ११ ।।

आभोगध्रुवयोरन्तरतरो*[5] धातुरस्ति यः[6] ।
छायालगान्तरे सोऽत्र रूपकेषूपवर्णितः[7] ।। १२ ।।

[8]ओव्यादीनि* तु यान्यत्र रूपकाणि न्यरूपकन्[9] ।
केचिन्न तेषु कर्त्तव्य आभोगः कर्हिचिद्बुधैः ।। १३ ।।

अत्र यन्मानमाख्यातं तालज्ञैस्तालकर्मणि ।
विश्रा[न्ति]युक्तया काले क्रियया तदिहेष्यते ।। १४ ।।

धात्वादिवादनं मत्तकोकिलायां यदीरितम्[10] ।
तदेकतन्त्रीमुख्यासु वीणासु स्याद्यथायथम् ।। १५ ।।*[२१A]

यदेकतन्त्र्यामुद्दिष्टं नकुलादिषु तत् स्मृतम् ।
वेणुप्रवीणा वीणास्थं वेणुष्वतिदिशन्ति तत् ।। १६ ।।

प्रतिस्थित पाठ— ७. *द्विकुले । १०. *स्याता । ११. *वसुकृता । १२. *०ध्रुवयोरन्तर-तरंतरो । १३. *तुद्यादीनि तु ।

---

1. B. ०श्रित्तो । 2. A. B. दक्षिणपथाश्रिताः । 3. P. रूपकेन(ण) । 4. P. प्रयोक्तव्य । 5. P. ०ध्रुवयोरन्तरतु(त)रो । 6. P. धातुरस्त्रि(स्ति)यः 7. P. रूपकेपू-(षू)पर्वणितः । 8. B. अव्यादिनी तु यान्यत्र । K. अव्ययादीनि । 9. P. न्यरूपपन् । 10. B. तदीरितम् ।

आहुरेकमानतालयुक्तं ताभ्यां[1] विवर्जितम् ।
वीणावाद्यं कश्चिदाह मानेनैतद्विना कृतम् ॥ १७ ॥

लीलाकृते[2] ध्रुवातालयुगं स्यात् स्वेच्छया कृतम् ।
अस्य लक्ष्यप्रधानत्वाद्[3] व्याख्या लक्षानुसारिणी ॥ १८ ॥

कर्त्तव्या लक्षतत्त्वज्ञैर्लक्ष्ये[4] तत्त्वविरोधिनी[5] ।
ग्रहादिनियमो [6]द्रष्टानुरोधाच्छास्त्रगोचरः[6] ॥ १९ ॥

लक्ष्येऽन्यस्वरसंदर्भो नान्यथात्वमिहार्हति ।
स्वस्थानानां चतुष्केण स्वरैः स्वस्थानसंभवैः ॥ २० ॥

वेणावपि च वीणावद्रागोत्पत्तिरिहोच्यते[7] ।
लक्षणेन* विरुध्येत[8] यत्र रागस्तु तत्र हि ॥ २१ ॥

लक्षणस्थं द्वितीयादि ग्रहापेक्षं[9] प्रकल्पयेत् ।
किन्तु ग्रहादधो[10] ये स्युः स्वरा लक्ष्मणि तावताम् ।
यथासम्भवमेव[11] स्यात् स्थायी रागो स्वरोऽपि च *[12] ॥ २२ ॥

पात्रं रंगं प्रविश्य प्रथमत उदितं[13] चातुरस्यं सुरेखं
देहे धृत्वाऽङ्घ्रियुग्मं सममथ लतया लक्षितं पाणियुग्मम् ।
कृत्वा वामं हृदिस्थं करमपि ललितं प्रायशो ने[२१B]त्रपात्रं[14]
लक्ष्यं[15] साक्षात्तु तत्तच्चरणमनुगतं नर्त्तनं प्रारभेत ॥ २३ ॥

एकैकं करणं विशिष्य कलया[16] कार्यं गुरुप्रायया
पार्थक्येन तदङ्गहारनिवहेष्वाद्यं हि शेषाण्यतः ।
न्यूनत्वं* करणस्य नाप्यधिकता दोषाय तेषु स्फुटं
लक्ष्मस्थं[17] यदसूत्रयन्[18] स्वयमयं वा शब्दमृष्यग्रणीः ॥ २४ ॥

प्रतिस्थित पाठ— २१. *लक्ष्यणेन । २२. *स्वरोत्रि च । २४. *न्यून्यत्वं ।

---

1. P. द्वाभ्यां । 2. P. लीलाकृत० । 3. P. लक्ष(क्ष्य)प्रधानत्वाद् । 4. A. में रेफ नहीं है । 5. P. लक्ष्म(ा)विरोधिनी । 6-6. दृष्टोऽनुरोधा० । 7. P. ०रिहोदिता । 8. P. निरुध्येत । 9. P. ग्रहापेक्ष्यं । 10. A. ग्रहादधो । 11. B. यथासंभमेव । 12. P. रागेश्वरोऽत्र च; B. रोगेश्वरो । 13. P. उचितं । 14. P. नेत्रपात्र- । K. नेत्रपत्रे । 15. P. दक्षः; K. दक्षं । 16. P. विशिष्टकलया । 17. B. लक्ष्म्यस्थं । 18. P. यदसूत्रयक्त् ।

लीनं तत् समनन्तरं समनखं[1] कृत्वा ततो व्यंसितं
[2]पाणी चात्र[2]* तु विच्युतौ विरचयन्नालीढकं संश्रयेत् ।
प्रत्यालीढकसन्निवेशविधिनोज्झित्वा तदालीढकं*
कार्यं सर्वमशेषमाश्रितमिदं[3]* सर्वाङ्गहारेष्वपि ॥ २५ ॥
चार्यो युद्धनियुद्धयोर्निगदिता* वृत्तिस्थिता भारती[4]
नाटचादित्रितये गतौ च ललितैरङ्गैः प्रयोज्याश्च ताः ।
मुख्यो यः करपादयोस्तदनुगो यः[5] स्यात् स चाग्रेसर-
स्तत्र स्यात् समकालता तदुभयोः प्राधान्यसाम्ये सति ॥ २६ ॥

अथवा—

मुख्यत्वं यदि हस्तकस्य चरणस्य स्यात्तदा सोऽग्रगो-
ऽन्यस्य स्यादनुगामिता तु[6] समकालत्वं द्वयोः साम्यतः ।
यत्र स्याच्चरणः करस्तदनुगो हस्तस्ततः स्या[२२A]त् त्रिकं
ह्यङ्गोपाङ्गनयस्तदा[7] चरणयोः स्यात् किङ्करत्वाग्रणीः ॥ २७ ॥
इत्यङ्गस्य नियोजनं चरणयोः प्राधान्यमाभाषितं[8]
प्राधान्ये करयोस्तदादिगदितं[9] तज्ज्ञैः पदाद्यङ्गकम् ।
[10]चारं चारमुपाश्रयश्च पदयोः[10] पृथ्वी यथा स्यात्तथा
कारं कारमपूर्वहृत्करयुगं[11] कटचां [12]भजेत स्थितिम्[12] ॥ २८ ॥*
अर्द्धेन्दुः[13] स्वललाटके सदितरः[14] सत्पक्षप्रद्योतको
भूत्वा[15] संश्रयते कटीमथ यथाशोभं* तु हस्तान्तरम् ।
तत्र[16] भ्रूवदनास्यरागपवनाद्योपाङ्गकोल्लासिताः
प्रत्यङ्गैरुपबृंहिता [17]अनुसरं स्युर्नर्त्तने हस्तकाः[17] ॥ २९ ॥

प्रतिस्थित पाठ— २५. *पाणीपा चात्र । *तदालीढक त । *सर्वमशेषमाश्रित इवं
२६. *युद्धनियुद्धयो निगदिता । २८. *पद्य सं. २८ नहीं है । २९. *यथाशोतं ।

---

1. P. समभखं । 2-2. P. पाणी चात्र तु । 3. P. सर्वमशेषमादित इदं । 4. P. वृत्ति(त्ति)श्रिता भारतीं । 5. P. ०ऽन्यः । 6. P. ०नुगामितानु० । 7. P. ह्यङ्गोपाङ्गवय(?)स्तदा । 8. P. प्राधान्य आभासितं । 9. A. B. करयोलस्तादि० । 10-10. P चारमुपाश्रयश्चरणयो(:) । B. वारंवार० । 11. P. कारं कारमपूर्ववत्० । 12. P. भवेत्तत्स्थितिम् । A. भवेत् स्थितिम् । B. भवेत स्थितिम् । BO. भजेत्तत् स्थितिम् । 13. A. B. अर्धेंदुः । 14. P. स च नाटके स च भवन् । 15. P. नृत्ते । 16. P. नेत्र । 17-17. P. इह कराः कार्या रसव्यञ्जकाः । B. इति ।

पात्रैरुत्तममध्यमैः सललिताः सुव्यक्तलक्ष्मान्विता
योज्याः[1] सौष्ठवसंयुतास्तदितरैस्तद्वैपरीत्यान्विताः ।
भालक्षेत्रगताः* सदा सदभिनेये* वक्षसः क्षेत्रगा —
स्ते*स्युर्मध्यमकेऽधमे त्वधरगा नेयं[2] व्यवस्था नटे ।। ३० ।।
श्रेष्ठैः[3] सन्निहिता न दूरकलिता मध्येऽधमे दूरगाः
प्रत्यक्षादिषु तत् प्रचार उचितः स्यादल्पताद्यञ्चितः ।
भीतव्याकुलतन्द्रिमूर्च्छितविषण्णग्लानवृद्धज्वरि—
[4]*क्षुच्छीतार्त्तशयालुतापप्रमदोन्मत्तप्रमत्तादिषु*[4] ।।
नो हस्ताभिनयः प्रयोक्तुमुचितः स्यात् कर्कटादिं विना
यस्मात्ते पुरुषस्य भावमखिलं संसूचयन्त्यान्तरम्* ।। ३१ ।।
सामस्त्यव्यासयोगैः करकरणमिलद्बाहुसंयोजनैर्या
जायन्तेऽसङ्ख्यरूपाः[5] क्रमत इह रसोल्लासवैचित्र्यतश्च* ।
आवर्त्यावर्त्तनास्ता[6] रसमनुरुचिरास्तेन[7] लास्यानुरूपा
याभिर्नृत्यप्रपञ्चस्वभिनयचतुराः पाणयोऽनेकशः[8] स्युः ।। ३२ ।।
रेखाया [9]अनतिक्रमात् सुनिपुणं[9] नानाविभङ्गि[10]स्फुरत्—
तत्तद्भावजवर्त्तनाविचलिताः शोभाभृतो बाहवः ।
रच्यन्ते यदि चालना[11] नियमितास्तज्ज्ञैस्तदा[12]ते पुनः
[13]शर्वाणीभरणानुरागरसिक*श्रीकुम्भभूमीभृता[13] ।। ३३ ।।
ओव्यादिगोणी[14][मलपं]*पदं* स[15]
छायालगस्थध्रु[वकान्त्यसंस्थाः]* ।

प्रतिस्थित पाठ—३०. *लाभक्षेत्रगताः । *सदभिनये ये । *ते । ३१. *-*क्षुछीतार्त्त-शयालुतापप्रमत्तोन्मत्तमत्तादिषु । *संसूचयत्यान्तरं । ३२. *०विचित्र्य-तश्च । ३३. *०रसिकः । ३४. *तीन वर्णों का स्थान रिक्त है । *यद । *पांच वर्णों का स्थान रिक्त है ।

---

1. P. योज्या(:) । 2. P. ०त्वधरगाश्चेयं । 3. P. श्रेष्ठे । B. श्रेष्ठेन । 4-4. P. क्षुत्क्षान्तार्तशयालुतापसजनोन्मत्तप्रमत्तादिषु । BO. क्षुत्क्षीतार्त० ; A. B. क्षुत्क्षान्तार्तशयालु-तापसप्रमत्तोन्मत्तमत्तादिषु । 5. P. जायन्ते सख्यरूपाः।; K; BO. जायन्तेऽसंख्यरूपाः । 6. P. आवर्त्तावर्त्तनास्ता । 7. P. स्वेन । 8. P. याभिनृ(र्नृ)त्यप्रपञ्चेष्वभिनयचतुराः । 9. P. अनतिक्रमास्तु । 10. B. नानाविभंगि । 11. P. चालका । 12. P. निगदि-तास्तज्ज्ञैस्तदा । 13-13. P. शर्वाणीचरणानुरागरसिकश्रीकालजिद् भूभृता । 14. P. ओन्तारिगोणी० । BO. ओव्यादिगोणी० । 15. P. च ।

हृदि प्रपूर्वा च तदन्त्यखण्डे-
ऽप्यवत्सकस्यापि* तथान्त्यखण्डे ॥ ३४ ॥

एलादिगामि[गजरोपश]*मान्त्यखण्डे*
वाद्याश्रिते तु तुडुके[1]ऽप्यखिलप्रबन्धे* ।
प्रायः प्रयोगमुपयान्ति भुजप्रपाताः[2]
[ना]*न्य[त्र]*ते च कविते[3] सुतरां प्रशस्ताः ॥ ३५ ॥

चित्रकूटैकदेशस्थो[4] यो[5] देशा[२३A]नखिलानपि ।
शास्ति तेन तथा भूता परिभाषाऽत्र भाषिता ॥ ३६ ॥

यो मूर्ध्नि द्विषतां पदं प्रतिपदं धत्ते पदं स्वं गुणैः
स्फीतैरुन्नमयन् पदार्थमपि यत् संवर्त्तनोल्लङ्घयन्[6] ।
तेनात्रैकपदे पदे धृतवता कुम्भेन[7] राज्ञा हृदा
शर्वाण्याः पदबन्धहेतुकपदोल्लासः पदे स्थापितः ॥ ३७ ॥

[8]इति श्रीराजाधिराज श्री कु० परिभाषा नाम चतुर्थं परीक्षणं परिपूर्णं पदोल्लासश्च समाप्तः ।[8]

प्रतिस्थित पाठ— ३४. *०कस्त्यापि । ३५. *पांच वर्णों का स्थान रिक्त । * चान्त्यखण्डे । *३६ का अंक बीच ही में पुनः दोहराया गया है । *एक वर्ण का स्थान छोड़ा गया है । *एक वर्णन का स्थान रिक्त है ।

---

1. P. तुडके । 2. P. भुजाः समस्ता । BO. भुजप्रपाता । 3. P. कविते(?) । 4. P. ब्रह्मशैलैकदेशस्थो । 5. B. ये । 6. P. स्वं वर्त्मनोल्लङ्घयेत् । 7. P. कामेन । 8-8. P. इति श्रीजगदीश(श्व)रवनदेवनिजगणेन जगदीश्वरी[१]कामेश्वरीचरणकिङ्करेण श्रीकामाक्षा[२]गिरिविभुना अध्युष्टतमनरेश्वरेण भीष्मपुरजयानीतानेकराजकन्यारत्नेन श्रीपुरग्रहणसंवर्धितयशोभरेण वाटिकाचलग्रहणजनितकीर्त्तिपूरपराजिताचलनायकेन[३] गं(सं)गमतीरदुर्गोद्धरणोद्धृतसकलमण्डलाधीश्वरेण दमनपुरविध्वंसनबन्दीकृतयवनीनिचयेन महिषमेरुजयाजेयविभवेन शाकम्भरीरमणपरिशीलनपरिप्राप्तशाकम्भरीपरितोषितशाकम्भरीप्रमुखशक्तित्रयेण अष्टादशगिरिशिखरपरिवारिता[४]-ञ्जनगिरिविजयविख्यातवीर्यगर्वेण महदम्बमातृकापुरोद्धूलनधर्षिता(त)महोरगपुरेण श्रीवनदेवस्वामिप्रसादरचनापर[५]-परमेश्वरेण [६]त्र्यम्बकेश्वरसन्निधिकीर्त्तिस्तम्भोन्नतजयस्तम्भेन श्रीब्रह्मगिरिभौमस्वर्गतायथार्थीकरणरचितचारुपथेन

(चालू)

---

१. K. जगदम्बिकाकामाक्षी । २. K. कामेश्वरी । ३. K. बलनायकेन । ४. K. परिवारिताञ्जनादिगिरि etc. । ५. K. में 'पर' नहीं । ६. K. अम्बकेश्वर० ।

[१]श्रीकामाक्षागिरिनवीननिर्मितिपराजितसुमेरुणा श्रीमहिषाचलोपरि श्रीहरिशरणविरचिताचलदुर्गेण अभिनवभरताचार्येण वीणावादनप्रवीणेन यवनकुलाकालकालरात्रिरूपेण त्रिसन्ध्याक्षेत्रसमुद्रसम्भवरोहिणीरमणेन परमभागवतेन महाराजाधिराजश्रीराजमानमृगाङ्कतामराजनन्दनेन महाराज्ञीश्री–[२]सौभाग्यवतीजसमाम्बिकाहृदयनन्दनेन[३] सकलसीमन्तिनीशिरोमणिनिकुम्भराजन्यवंशावतंसमहाराज्ञीश्रीकर्मवती[४]–लघुमादेवीहृदयाधिनाथेन इति[५] राजाधिराजश्रीकालसेनविरचिते[६] संगीतराजे षोडशसाहस्र्यां संगीतमीमांसायां पाठ्यरत्नकोशे पदोल्लासे परिभाषापरीक्षणं चतुर्थं समाप्तम् ।।

(पदोल्लासश्च समाप्तिमगात्)



१. B. श्रीकामाक्षी० । २. A. में 'श्री' नहीं । ३. K. हृदयानन्दनेन । ४. K. में 'श्री' और है । ५. K. में 'इति' नहीं । ६. K. के मत से 'कालसेनेन विरचित' पाठ श्रेष्ठ है ।

३. छन्द उल्लास-अनुष्टुब् नाम प्रथम परीक्षण

छन्दानुवृत्तिकारीणि[1] यस्य छन्दांसि जाग्रति ।
तमच्छन्दकृतं[2] वन्दे स्वच्छन्दं[3] गिरिजापतिम् ॥ १ ॥

समासेन प्रबन्धानां मूलभूतानि कानिचित् ।
तत् प्रयोगोपयोगीति[4] छन्दांसि व्याहरामहे ॥ २ ॥

मयरसतजभनसंज्ञाः कथिता अष्टौ गणाः क्रमेणैते ।
विज्ञेया वर्णभावाः[5] प्रस्तारे ते त्रिकाः सर्वे ॥ ३ ॥

सर्वगुरादिल उक्तो मध्यलघुः स्यात् तथान्त्यगुरुलघुकौ ।
मध्यगुरादिगुरन्यौ सर्वलघुः स्यात् तथैवान्त्यः ॥ ४ ॥

पृथ्व्यम्बुवह्निमरुदम्बरसूर्यचन्द्र–
नाकाधिदैवतयुता मगणादयोऽमी ।
श्रीवृद्धिमृ[२३B]त्युपरदेशफलानवाप्ति[6]—
रुत्कीर्त्तिसौख्यफलदा मुनिभिः प्रदिष्टाः* ॥ ४ ॥

दतचपषा मात्राख्या* द्विन्त्रि[7]चतुःपञ्चषट्कलाः*[8]क्रमशः ।
[9]द्वित्रिशरशैलविश्वा*[9]भेदास्तेषामिमे गदिताः ॥ ५ ॥

उक्तात्युक्ता तथा[10] मध्या प्रतिष्ठातिप्रतिष्ठिका ।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च[11] बृहती पंक्तिरित्यपि ॥ ६ ॥

त्रिष्टुब्[12] जगती चातिजगती[च] शक्वरीति च ।
सैवातिपूर्वाष्टयत्यष्टी धृतिश्चातिधृतिस्तथा ॥ ७ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ४. *प्रदिष्टां । ५. *'मात्राख्या' के आगे 'द्वित्राख्या' अधिक पाठ है ।
*कला । *द्विद्विशरशैलविश्वा ।

---

1. P. छन्दानुवृत्तकारीणि । 2. P. तम(च्)छन्दकृतं । 3. B. स्वं छन्दं । 4. P. प्रयोगोपयोगीनि । 5. BO. वर्णभवाः । 6. B. मृत्युरपदेश० । 7 B. द्वित्रिः । 8. B. कला । 9-9. P. द्वित्रिवेदशररस० । B. रसशर । 'द त च प ष' के (द) द्विकल के (द्वि) दो, त (त्रिकल) के (त्रि) तीन, (च) चतुष्कल के (शर) पांच, (प) (पंचकल) के के (शैल) आठ और (ष) षट्कल के (विश्व) तेरह प्रस्तार भेद होते हैं । 10. B. में 'तथा' नहीं है । 11. B. में 'च' नहीं है । 12. P. त्रिष्टुप् च । B. में 'च' नहीं है ।

कृतिश्च प्रकृतिश्चैवाकृतिर्विकृतिरेव च ।
संकृत्यभिकृती चैवोत्कृति[1]च्छन्दांसि नामतः ।। ८ ।।
आरभ्यैकाक्षरात् [पादात्] षड्विंशत्यक्षरावधि[2] ।
पादैः क्रमादिमानि* स्युर्मालावृत्तमतः[3] परम् ।। ९ ।।
एकमात्रो* ऋजुर्ह्रस्वो[4] लघुर्ज्ञेयो[5] गुरुः पुनः ।
वक्रो[6] दीर्घो विसर्गान्तः[7] सानुस्वारो द्विमात्रिकः ।। १० ।।
अंह्र्याचादिसंयुते*[8] वर्णे व्यञ्जने चाग्रगे लघुः ।
पादान्ते वा लघोर्गत्वं वंशस्थादिषु नो पुनः ।। ११ ।।
पदान्तेऽत्र [9]यतिः कार्या[9] लुप्तालुप्तविभक्तिके ।
त्र्यादिकाक्षरविच्छिन्ने[10] पदान्ते च तथावि[२४A]धे ।। १२ ।।
नार्द्धे समाससन्धौ* स्तो *यतिर्विच्छेदसंज्ञिका ।
औचित्यादत्र[11] विज्ञेया यतिः श्रुतिसुखा बुधैः ।। १३ ।।
यतो मधुरता श्लाघ्या भारत्यां[12] भरतादिभिः[13] ।। १४ ।।
अविशेषे* तुरीयांशश्च्छन्दसः पाद इष्यते ।
द्विपदाद्यौ द्वितायांशादिकः पादो यतः स्मृतः ।। १५ ।।
उक्ता गः श्री, अत्युक्ता[14] गौर्दृष्टा* सा स्त्री, मो मध्यायाम् ।
नारी,[15] शंभाः पातु त्वां सा कन्या मगौ प्रतिष्ठायां* स्यात् ।। १६ ।।

यथा—

सेयं कन्या गौरी पायात्, शंभोर्या[16] शेते हृत्पद्मे ।। १७ ।।

अत्युक्ताया रतिगणा भेदा मध्याभवास्तथा ।
कामस्य तु प्रतिष्ठाया भेदा बाणगता[17] मताः* ।
अत्युक्तायां[18] लपूर्वा ये* तेष्वादावधिको लघुः ।। १८ ।।

प्रतिस्थित पाठ— ९. *क्रमादिनामानि । १०. *एकमात्र । ११. *अह्लादि संयुते । १३. *समासंधौ । *०तिर्विछेदसंज्ञिका । १५. अविशेष । १६. *गौ दृष्टा । *प्रतिष्टा । १८. *मता ।

1. P. चैवोक्तानि । A. B. ०क्तति छंदांसि । K. चैवोक्तातिच्छन्दांसि । 2. P. ०क्षरावधिः । 3. P. स्युः माला० । 4. P एकमात्रो ऋजुह्ल(र्ह)स्वो । B. एकमात्र० । 5. P. लघुज्ञे (र्ज्ञे)यो । 6. P. नैको । 7. P. विसर्गो(र्गा)न्तः । 8. B. अंध्रादि । 9-9. P. युतः कार्यो । 10. P. आदिकाक्षर० । A. ०विछिन्ने । 11. P. ओवित्पदेऽत्र । A. ऊ वित्पदे । 12. P. भारत्या । 13. P. में यहां पद्यसंख्या १४ वी है । 14. A. B. श्री अत्युक्ता । 15. A. में 'नारी' द्वितीय चरण में है । 16. P. पायाच्छंभोर्या, A. पायात् शंभोर्या···। 17. A. बाणगणा । 18. P. अत्युक्ताया ।

समासमविभेदेन द्विधानुष्टुबिहोच्यते[1] ।
चित्रपदा भभगा गः*, उक्ता **विद्युन्माला** मौ गौ ॥ १९ ॥
जरौ लगौ **प्रमाणिका नाराचमत्र** तलगाः ।
[अनुष्टुब् न सनावाद्याद्वक्त्रं ये तुर्यतोऽभीष्टम् ।]*
अनुष्टुब्रसमावाद्याद्वक्त्रं ये तुर्यतोऽभीष्टम् ॥ २० ॥
पथ्यावक्त्रं समुद्दिष्टं तुर्याज्जे युग्मपादयोः ।
तुर्या दो जे नतभरमसैर्नविपुलादयः[2] ।
प्राय[२४B]स्तुर्यो गस्तास्वोजे युजि षड्भ्यो लघुः सदा ॥ २१ ॥[3]
पञ्चवक्त्रप्रसादाप्तसाम्राज्येन महीभृता ।
[3]कुम्भेन वक्त्रवृत्ताद्यमनुष्टुप्परिकीर्त्तितम्*[3] ॥ २२ ॥

[4]इति श्रीराजाधिराज कुं० छंद उल्लासेऽनुष्टुप्परीक्षणं प्रथमं समाप्तम् ।[4]

प्रतिस्थित पाठ— १९. *त्रिपदा भभभाग । २०. *यह पंक्ति दो बार लिखी गई है । २२. *परिकीर्त्तिता ।

---

1. B. द्विधा अनुष्टुप्···। 2. P. नतं-भरम(?)सैनं० ।; B. नतरभ····। (नविपुलादि भेद यथा—नविपुला, तविपुला, भविपुला, इत्यादि) । 3. P. कालसेनेन वृत्ताद्यमनुष्टुप् परिकीर्तितम् ॥ २२ ॥ 4-4. P. इति श्रीराजाधिराजमहीमहेन्द्रश्रीकालसेनविरचिते संगीतराजे षोडशसाहस्त्र्यां संगीतमीमांसायां पाठ्यरत्नकोशे छन्द उल्लासे अनुष्टुप्परीक्षणं प्रथमं समाप्तम् ॥

वृत्त नाम द्वितीय परीक्षण

अज्ञातवृत्तं ब्रह्माद्यैः [1]श्रितं वृत्तं[1] महात्मनाम् ।
परिज्ञातजगद्वृत्तं सद्वृत्तं तं[2] भजे शिवम्[3] ॥ १ ॥

अथ वृत्तं प्रकीर्त्यते—

तद्द्विधा* वर्णमात्राभ्यां पद्यं चैव चतुष्पदी ।
समैः पादैः समं वृत्तं द्वाभ्यामर्द्धसमं स्मृतम् ।
उक्ताभ्यां विपरीतं यत्तद्वृत्तं विषमं स्मृतम् ॥ २ ॥

[९ अक्षर]

भद्रिका भवति[रो] नरौ । [१]

[१० अक्षर]

उक्ता **मत्ता** मभसगयुक्ता । [२]

[११ अक्षर]

स्या**दिन्द्रवज्रा**[4] ततजा गुरू चेत् [३]
उपेन्द्रवज्रा जत[5]जा गयुग्मम् । [४]
रो नरौ* लघुगुरू[6] **रथोद्धता** । [५]
स्वागता तु रनभाद्गुरुयुग्मम्[7] । [६]
वेदैश्छिन्ना[8] **शालिनी** मात्ततौ गौ[9] । [७]
दोधकमुक्तमिदं भभभा गौ[10] ॥ [८]

[१२ अक्षर]

स्या**तेन्द्रवंशा** ततजै रसंयुतैः । [९]
वदन्ति **वंशस्थ**मिदं जतौ जरौ । [१०]
जरद्वयं वदन्ति **पञ्चचामरम्** ॥ [११]
द्रुतविलम्बितमत्र[11] नभौ भरौ । [१२]
इह **तोटक**मम्बुधिसैः प्रथितम् । [१३]

प्रतिस्थित पाठ— २. *तद्विधा [५] *नरौ ।

1-1. P. श्रुतवृत्तं । 2. P. (तं) । 3. P. छि(शि)वम् । 4. A. स्यादिन्द्रवज्रा । 5. P. त(ज)तजा गयुग्मम् । 6. B. गुरुलघू । 7. P. रनभा गुरुयुग्मं । 8. P. वेदे छिन्ना । 9. A. B. गैः । 10. A. B. गैः । 11. A. दृत० ; B. द्रत० ।

गणैर्यैश्च[२५A]तुर्भिर्भुजङ्गप्रयातम् । [१४]
सम्मता[1] स्रग्विणी रैश्चतुर्भिर्युता[1] । [१५]

[१३ अक्षर]

त्रिच्छेदा*[2] मनजरगैः प्रहर्षिणीयम्[3] । [१६]

[१४ अक्षर]

ख्याता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः[4] । [१७]

[१५ अक्षर]

वसुयतिरियमुक्ता मालिनी नौ मयौ* यः । [१८]

[१६ अक्षर]

भ्रौ ननना* गुरुश्च वृषभगजविलसितम्[5] । [१९]

[१७ अक्षर]

[6]गुहास्यैर्विश्रान्तिर्यमनसभला गः[6] शिखरिणी । [२०]

[१८ अक्षर]

नसमतभरा वेदैर्यैः[7] षड्भिश्चेद्यतिर्हरिणोपदम् । [२१]
यतौ न्यौ यः सोऽत्र*[8] मुनिभिरियं चित्रलेखा गदिता । [२२]

[१९ अक्षर]

आदित्यैर्यदि*मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्[9] । [२३]

[२० अक्षर]

अश्वैश्छिन्ना सुगीता मरभनयभला* गान्तः[10] सुवदना ।।२४]

[२१ अक्षर]

विख्याता स्रग्धरेयं मरभनययया सप्तकाश्वैर्यतिश्चेत्* । [२५]

प्रतिस्थित पाठ— [१६] *त्रिछेदा । [१८] मयो । [१९] *भो ननभा । [२२] *यतो न्यो जस्तत्र । [२३] यति । [२४] *मरभनयतला । [२५] सप्तः काश्वैर्यतिश्चेत् ।

---

1. A. B. समंता । 2. A. त्रिछेदा । 3. B. प्रहर्षणीयं । 4. P. भ(त)भजा जगौ गः । 5. P. वृषभुजगविलसितम् । 6-6. P. गुहास्यैवि(वि)श्रान्तिर्यमनसभला गः । 7. P. तुर्यैः । 8. P. यतौ न्यो(न्यौ)यः सोऽत्र । 9. A. शार्दूल० । 10. P. गाङ्कैः ।

[२२ अक्षर]

पंक्तिर्यतौ* भरौ नरनरा नगौ[1] भवति **मद्रकं**[2] सुललितम् । [२६]

[२३ अक्षर]

रो नरौ नरनरा लगाविह भवन्ति चेद्भवति **चित्रकं** तदा । [२७]

[२४ अक्षर]

ननभनजनननाश्च यगणसहिता मुनियति**ललितलतेयम्**[3] । [२८]

[२५ अक्षर]

[4]उक्तेति रतौ तो यो*[4]भभना ननन[5]गुरु किल **हरिणशिशुनयना** । [२९]

[२६ अक्षर]

अत्राष्टाभी रुद्रैश्छिन्नं ममतननरसलघुगा*[२५B] **भुजङ्गविजृम्भितम्** । [३०]

अथवा—

[6] नजनसभा नननगणलवक्रा इति यति भवति [च] **सततगतिः**[6] । [३१]
इति वा ॥

अथ दण्डकाः

शेषजात्यादिकं मुक्त्वा षड्विंशत्यक्षराधिकम्* ।
यत्किञ्चिद्दृश्यते छन्द*स्तत् सर्वं **दण्डकं** विदुः ।
नद्वयं[7] रगणाः सप्त **चण्डवृष्टिरुदाहृतः**[8] ।। ३ ॥
अथार्णार्णवव्याल[9]**जीमूतलीला**—
करोद्दाम[10]-**शङ्खादयः** स्युः प्रबन्धाः ।
परं चोत्तरेणोत्तरेणैककेन
प्रवृद्धाश्च ते रेण विद्वद्भिरूह्याः ॥ ४ ॥

प्रतिस्थित पाठ— [२६] *पंक्ति यतौ । [२९] *० तायो । [३०] *ममतननरयलघुणा ।
३. *षट्त्रिंशत्यक्षराधिकम् । *छंद तत् ।

---

1. P. मगौ । 2. B. मंद्रक । 3. B. मुनियतिललितेयम् । 4-4. P. पङ्क्त्या विरतौ तो यो । 5. B. में एक 'न' नहीं है । 6-6. P. न ज न स(न)भा नननगणलच-(ग)का इति वसति भवति सततगतिः । 7. K. तद्वयं । 8. P. चण्डवृद्धिरुदाहृता । 9. A. B. ० व्याज । 10. A. करोब्दाम । B. करोद्दाम ।

*[एवं मालादिवृत्तानि भवन्त्यन्यान्यनेकशः ।
यथेष्टं रचितानेकशुभनामान्यनुक्रमात् ॥ ५ ॥

चरणो यावदेकोनसहस्राक्षरनिर्मितः ।
मालावृत्तानि तावत् स्युरित्यादिष्टं महीभृता ॥ ६ ॥
अथवा वर्णयुग्वृद्ध[1]-सहस्राक्षरनिर्मितः ।
पादो भवति तावत् स्युर्यथेष्टमिह दर्शनात् ॥ ७ ॥]*
तथाष्टादिभी रैः पदैर्नाद्गुरोः स्युः
परं पन्नगाद्याः प्रबन्धाः परेऽपि ।
ते च दम्भोलि-हेलावली-मालती–
केलि-कङ्केल्लि[2]-लीलाविलासादयः* ॥ ८ ॥
यथेष्टं रगणैः प्रोक्तो लघुपञ्चकतः* परैः ।
चण्डकालोऽथ यैः सिंहविक्रान्तो लघुपञ्चकात् ॥ ९ ॥
ल-षट्कादगत्रयाच्चापि[3] यथेष्टं यगणैः परैः ।
मेघमालादण्डकोऽयं प्रबन्धः सम्मतः सताम् ॥ १० ॥
स्वेच्छया रगणैः प्रोक्तो* मत्तमातङ्गसंज्ञकः ।
कुसुमास्तरणस्तद्वद्यथेष्टं [सगणै]रिह ॥ ११ ॥[4]
सिंहविक्रीडको नाम स्वेच्छया यैः प्रयोजितैः ।
निरन्तरं लघुगुरू यत्र सोऽनङ्ग[२६]शेखरः[5] ॥ १२ ॥
प्रयुज्येते[6] गुरुलघू साऽशोकपुष्पमञ्जरी[7] ।
यथेष्टं तगणाश्चान्ते[8] गद्वयं कामबाणकः ॥ १३ ॥
यथेष्टा भगणा* गौ च स्याद् भुजङ्गविलासकः ।
नद्वयात् स्वेच्छया पञ्चमात्रैरुत्कलिका* मता ।

प्रतिस्थित पाठ— ५-७. *-*कोष्ठगत अंश प्रति में नहीं है, P. प्रति में है । ८. *लीला-सादय । ९. *लघुपंचकतः । ११. *प्रोक्ते । १४. *यथेष्टास्तगणा । *पञ्चमैरुत्कलिता ।

---

1. B. ०युद्ध । 2. P. कङ्केलि । 3. P, ल ख(ष)ट्काद् गत्रयाच्चापि । 4. B. में यह पद्य नहीं है । 5. P. ०शेष(ख)र' । 6. P. प्रयुज्यते । 7. P. साशोकपुष्पमञ्जरी । 8. P. नगणाश्चान्ते ।

एकैकगणवृद्धया स्युरेवमेते ह्यनेकधा ॥ । १४ ॥
श्रुतेन यस्य वृत्तेन पवित्रीक्रियते जगत् ।
तेन श्रीकुम्भकर्णेन[1] वृत्तमत्रोपवर्णितम्[2] ॥ १५ ॥

[3]इति श्रीमहाराजाधिराज श्री कुं० छन्द उल्लासे वृत्तशासनं परीक्षणं नाम द्वितीयं समाप्तम् ॥[3]



1. P. श्रीकालसेनेन । 2. A. B. वृत्तमात्रोपवर्णितम् । 3-3. P. इति श्रीराजाधिराजश्रीकालसेनविरचिते संगीतराजे पाठ्यरत्नकोशे छन्द उल्लासे वृत्तपरीक्षणं नाम द्वितीयं समाप्तम् ॥

आर्यावलोकन नाम तृतीय परीक्षण

सुरासुरैर्नमस्कार्या*[1] स्वकार्यापेक्षयैव या ।
योगिभिश्च हृदा धार्या तामार्यामहमाश्रये ।। १ ।।
प्रथमेऽर्द्धे जः षष्ठे न्लौ*[2] वा गः सप्तमो* न विषमे जः ।
अपरेऽर्द्धे लः षष्ठे[3] लक्ष्मेदं* नियतमार्यायाः ।। २ ।।
पूर्वार्द्धे षष्ठे न्ले नल्ले[4] पूर्वे यतिरिह मुनिगणगे ।
तस्मिन् षष्ठप्रान्ते यतिरुदिता मुनिभिरिह मुख्यैः ।। ३ ।।
अपरार्द्धे पञ्चमके न्ले सति सोक्ता चतुर्थगणनिधने ।
[5]श्रीकुम्भकर्णनृपतिर्युक्तमिह[5] वदति तामार्याम् ।। ४ ।।
यस्यामर्द्धद्वितये[6][२६B]भवति यतिश्च त्रयेऽत्र सा **पथ्या** ।। ५ ।।
पूर्वार्द्धे मुख्यचपला[7] च-त्रययतिविरहिता सदा-वि[हिता*[8]]
[जघन]* **विपुला** परार्द्धे* च-त्रययतिविरहिता गदिता ।। ६ ।।
[9]प्रोक्ताऽर्द्धयोर्द्वयोर्या यतिरहिता[9][च-त्र]*ये **महाविपुला** ।
शेषा विस्तररीत्या[10] भेदा नोक्ता महासुधिया[11] ।। ७ ।।
जगणविहीना विषमे चत्वारः पञ्च युजि चतुर्मात्राः* ।
द्वौ षष्ठाविति चगणास्तद्घातात्[12] प्रथमदलसंख्या ।। ८ ।।
एवमपरार्द्धसंख्या षष्ठे स्याल्लघुनि चैकस्मिन्[13] ।
[14]आर्यासंख्योभयदलसंख्याघाताद्विनिर्दिष्टा[14] ।। ९ ।।[15]

प्रतिस्थित पाठ— १. नमस्कुर्यो । २. *न्लो । *सप्त वा । *ल दौं दं । ६. *दो अक्षरों का स्थान रिक्त । *तीन अक्षरों का स्थान रिक्त । *पलार्द्धे । ७. *दो अक्षरों का स्थान रिक्त । ८. *'चतुर्मात्रा' के पहले 'पञ्च' अधिक है ।

---

1. B. नमस्कारा । 2. P. षष्ठोन्लो । 3. P. षष्ठो । 4. P. तल्ले । 5. P. श्रीकालसेन । 6. B. यस्यामर्धे द्वितीये । 7. P. मुखचपला । 8. P. सदाभिमता । 9-9. P. द्वयोर्द्वयोर्या यतिरहिता । 10. P. विस्तरभीत्या । 11. P. मया सुधिया । 12. K. ० स्तद्यातात् [स्तद्योगात्] । 13. P. चैक एकस्मिन्; B. चैकस्मिन् । 14-14. P. आर्याऽसंख्योभय० । 15. वृत्तरत्नाकर की नारायणी टीका में श्लोक सं० ८ और ९ इस रूप में मिलते हैं—

जगणविहीना विषमे चत्वारः पञ्च युजि चतुर्मात्राः ।
षष्ठं द्वाविति चगणास्तथाऽङ्कतः प्रथमदलसङ्ख्या ।।
एवमपरार्द्धसंख्या षष्ठे स्याल्लघुनि चैकस्मिन् ।
आर्यासङ्ख्योभयदलसङ्ख्याघाताद्विनिर्दिष्टा ।।

अन्योन्यं प्रथमदले ताडनयाऽष्टौ शतानि जायन्ते ।
अर्कसहस्राण्येवं चरमेऽर्द्धेऽन्योन्यताडनया ॥ १० ॥

षट्साहस्री गदिता चतुःशती चाप्युभयदलविकल्पाः ।
अन्योऽन्यं ताडनया जायन्ते कोटयश्चाष्टौ ॥ ११ ॥

[1]लक्षाणामेकोना विंशतिरिह विंशतिः सहस्राणाम् ।
आर्याभेदा उक्ताः षष्ठे ले त्वे[क]एकस्मिन् ॥ १२ ॥

आर्यैवेयं **गाथा** प्राकृतभाषापथे विनिर्दिष्टा ।
गीतिविशेषानधुना शिवजायासेवको ब्रूते ॥ १३ ॥

द्विर्य[२७A]स्या आर्याया अभ्यासो जायते दले प्रथमे ।
सा तन्नाम्ना [**गीतिः** स्यादुप]***गीति**स्तथा[2] चरमे ॥ १४ ॥

दलयोरत्रोभययोः[3] स्या**दुद्गीतिः** कृते विपर्यासे ।
तत्तन्नाम्ना सर्वा जायन्ते भेदतो[4] ह्यमिताः ॥ १५ ॥

त्रिंशन्मात्रास्तु पूर्वार्द्धे विंशतिः सप्त चापरे* ।
सप्तपञ्चाशदुभयोर्मात्रा ज्ञेयास्तु योगतः ॥ १६ ॥

त्रिंशतो येऽधिका वर्णा द्विगुणास्ते त्रयाधिकाः ।
लघवस्तेऽत्र[5] विज्ञेयाः शेषास्तु गुरवो मताः ॥ १७ ॥

ऊनिता अथवा वर्णैर्मात्राः स्युर्गुरवोऽखिलाः ।
गुरुभिस्तूनिता वर्णा लघवः परिकीर्तिताः ॥ १८ ॥

वसन्तोत्सवबन्धः* स्यान्नवभिः पञ्चमात्रिकैः*[6] ।
द्विषष्टयन्ते[7] तथा गीतौ **द्विभङ्गिः** परिकीर्त्तितः ॥ १९ ॥

द्विपद्यन्ते[8]*तथा गीतिरन्ते मध्येऽवलम्बकम् ।
स त्रिभङ्गिर्द्विपदिका [9]दद्वयं चाथ दद्वयम्[9] ॥ २० ॥

प्रतिस्थित पाठ— १४. *पाँच वर्णों का स्थान रिक्त है। १६. *वापरे। १९ *वसन्तोत्सवः प्रबन्धः। *पंचमातृकैः। २० *द्विपद्यान्ते।

---

1. B. लक्षाणामेनोना। 2. P. तदा। 3. P. दलयोरत्रोभयोः। 4. B. भेदितो। 5. B. लघवस्तत्र। 6. A. पंचमात्रकैः। B. पंचमातृकैः। 7. P. द्विपद्यन्ते। 8. P. द्विपद्यादौ। 9-9. P. दद्वयं चाप्यदद्वयं। K. तद्वयं च पदद्वयम्।

लघुर्द्वौ* चस्तथा दौ*[1] लास्त्रयः **कर्पूरपूर्विका** ।
तिथिच्छेदेऽश्वचैर्नेऽन्त्ये **द्विपदी*** [2]विषमेऽपि* जे[2] ॥ २१ ॥

इति वा ।

[3]**ललितौ** विच्युतः[3]सप्त चगणैः स्युः परा अपि ।
लयोऽथ **भ्रमरपद**मुपपूर्वं तदेव हि ॥ २२ ॥
कुङ्कुमाङ्गसूडपदं[4] **हरिणीपद**मेव च ।
कमला[२७B]**करं भ्रमररुतं** स्याद्**रत्नकण्ठिका*** ॥ २३ ॥
कुङ्कुमतिलकावली कदलीपत्रमित्यपि ।
एवमाद्यैस्त्रिभिर्द्वाभ्यां योगे स्याद्वस्त्वनेकशः ॥ २४ ॥
चतुर्मात्र[द्व]यं पञ्चमात्रं[5] स्यात् **खञ्जन**नामकः ।
षण्मात्रश्चतुर्मात्रस्त्रिमात्रश्चो**पखञ्जकम्** ॥ २५ ॥
षण्मात्रौ* द्वौ चतुर्मात्रौ* **खञ्जिकाथावलम्बकः**[6] ।
एते त्रयः पृथग्भेदा**स्त्रिभङ्गिः** स्यात् परैरपि ॥ २६ ॥
त्रिभिर्मनोहरैश्छायाभिः[7] [8]स्वेच्छया ग्रथितैरपि[8] ।
चद्वयं लघुकान्तौ द्वौ तगणौ चगणद्वयम् ॥ २७ ॥
तगणश्चेदृशः[9] पादैश्चतुर्भि**र्वस्तुकं** भवेत् ।
विषमे सप्त मात्राः स्युः समे यस्य त्रयोदश ॥ २८ ॥
स **रासो** विषमे पञ्चमात्रौ द्वौ च तथैकदः ।[10]
युग्मे च चत्रयं पञ्चपदा[11] मात्राभिरीरिता[12] ॥ २९ ॥
आसां तृतीयपादस्य प्राप्ते स्यात् पञ्चमेन तु ।
अन्ते तु **दोहके वस्तु रड्डा**[13]वा परिकीर्त्तिता ॥ ३० ॥

प्रतिस्थित पाठ— २१. *लघुर्दौ । *वस्तथादौ । *कर्पूरपूर्विकाः । *द्विषदी *विषमेषि
२३. *रक्तकण्ठिका । २६. *षण्मात्रो *चतुर्मात्रै ।

---

1. P. लघुर्द्वौ च तथा दौ । 2-2. P. विषमे वि(ऽपि)जे । 3-3. P. यतिवैचित्र्यतः । 4. P. कुङकुमो गरुडपदं । 5. A. ०मात्र । 6. P. खञ्जिकाथावलम्बकम् । 7. P. A. B. ०छन्दोभिः । 8-8. P. स्वेच्छाग्रथितैरपि । 9. P. भगणः सदृशः । 10. P. तथैकदा; A. तथैकदः; B. तथेकद । 11. P. पञ्चपदी । 12. P. मात्रादिरीरिता । 13. P. वस्तुरडा(?); A. 'डा' अक्षर स्पष्ट नहीं है ।

आद्यन्तयोश्च षण्मात्रे चत्रये मध्यगे सति ।
[1]*ओजेजो **वस्तुवदनं** समे जो न्लौ*[1] विकल्पत: ॥ ३० ॥
स्याद्रासावलयं [2]पूर्वमोज: षश्चषौ [पा]त्तत:[2] ।
षचतेभ्य: परे ते स्याद्वदनं* **चोपपूर्वकम्** ॥ ३१ ॥
षचचा[२८A]द्दो **वदनकं*** यमिते तेऽडिला:* स्मृता: ।
स्यादष्टषट्चतु:पाच्च **धवलं** तन्निरूप्यते ॥ ३२ ॥
[3]श्रीयशो गुणपूर्वं तत् क्रमादोजे तु चत्रयम्*[3] ।
द: समे[4] चौ **श्रीधवलं** तथाद्ये च तृतीयके ॥ ३३ ॥
तथाविधे द्वितीये[5] च तथा तुर्ये तु चत्रयम् ।
पञ्चमे सप्तमे द्वौ चौ तश्चैक: समयो:* पुन: ॥ ३४ ॥
चद्वयं दस्तथा चैकश्चत्रयं वा यश: परम् ।
धवलं तु षडंह्रौ[6] त्वाद्ये चतुर्थे तु[7] षद्वयम् ॥ ३५ ॥
द्वौ द्वितीये[7] पञ्चमे च[8] दौ षष्ठे* च तृतीयके ।
षद्वयार्धेऽथ[9] षे[10] **कीर्तिधवलं** चतुरंह्रिके ॥ ३६ ॥
षश्चौ* जे षचचाद्दस्तो वात:* स्याद्गुणपूर्वकम् ।
आद्ययो: षश्चत्रयं[11] च प्रत्येकं त्वन्त्ययोस्तथा ॥ ३७ ॥
पञ्च चा: सर्वपादेषु[12] चान्ते तो दोऽथ **मङ्गलम्**[12] ।
आदिस्ते वदनाद्ये* तु तदाद्यं **धवलादिकम्**[13] ॥ ३८ ॥

यदाह—

उत्साहहेलावदनाडिलाद्यै:*
संजायते[14]मङ्गलवाचि किञ्चित् ।

प्रतिस्थित पाठ— ३०. *नौ जे जो वस्तुवदनं समे न्लौ । ३१. *स्यावदनं । ३२. *वदकं । *विसर्ग नहीं है । *स्मृता । ३३. *चत्वयं । ३४. *तृतोये । *समयो । ३७. *पश्चौ । *वात । ३८. तोवनाद्ये । ३९. *वदनानिलाद्यै ।

1-1. P. समे जो वस्तुवदनमोजे जो न्लौ । 2-2. P. पूर्वमोजश्च चषपौ (पा?) तत: B. मोजश्चषपौ । 3-3 P. K. श्रीयशसो गुणपूर्वं क्रमाद्दोजे तु चत्रयं ।; A. तत्क्रमादोजे । 4. P. दशमे; B. दसमे । 5. P. द्वितीये । 6. P. षड्गौ; A. षटद्गौ । 7. P. चतुर्थे (ऽपि) तु षद्वयम् । B. षद्द्वयम् । 7. B. द्वितीये तु पञ्चमे । 8. P. तु । 9. P. षद्व-याच्चेऽथ । 10. P. पे । 11. B. षचत्रयं । K. षत्रयं चश्च । 12-12. P. चात्ततो K. चात्तोदोऽथ तु मङ्गलम् । A. B. चांततो । 13. A. धवलादिकान्; B. धवलादिक । 14. P. यद् गीयते ।

तद्रूपकाणामभिधानपूर्वं
छन्दोविदो **मङ्गल**मामनन्ति[1] ॥ ३९ ॥[2]

चत्रयं[3] दो यदा पादे तदा **डुम्बडकं**[4] मतम् ।
घत्ता[5] **ध्रुवक**संज्ञेयं **ध्रुवा**[6] त्रेधा मता सताम् ॥ ४० ॥

षट्पदी चतुःपदी[7] च द्विपदी चेति[२८ B]नामभिः ।
सप्तादिसप्तदशान्तकलाः[8] पादास्तु पूर्वयोः ॥ ४१ ॥

तत्र सप्त कलाः[9] पादे[10] च [11]तौ चाथ पदौ गणौ[11] ।
अष्ट षत्वे[12] पतौ षदौ नवकले[13] षतौ पचौ ॥ ४२ ॥

चषौ च[14] दोऽथवा पौ च चरणे तु दशाक्षरे ।
चपदाः पचदा वापि* रुद्रार्णे चरणे गणाः ॥ ४३ ॥

चपताः षचताश्चेति[15] पदे द्वादशवर्णके ।
त्रयोदशाक्षरे पादे पौ तश्च चपषा*[16] स्मृताः ॥ ४४ ॥

चत्रयं दौ तु[17] षश्चौ च चरणे तु चतुर्दशे ।
चत्रयं तोऽथवा पानां* त्रयं पञ्चदशांह्रिके ॥ ४५ ॥

षद्वयं[18] चः षोडशांह्रौ दचतुष्कं[19] तु चद्विकम् ।
पादे सप्तदशकले षश्चौ* [20]तश्चत्रयं तु पः[20] ॥ ४६ ॥

**प्रतिस्थित पाठ— ४३. *पञ्चदा वापि । ४४. *चकषाः । ४५. *दोषचश्चाथ ।
४६. *श्चो तश्च ।**

---

1. K. ०माचरन्ति । 2. आचार्य हेमचन्द्रकृत छन्दोऽनुशासन की स्वोपज्ञ टीका में यह पद्य यथावत् मिलता है । 3. B. चत्रय । 4. P. कम्बडकम् । K. कम्बलकम् । छन्दोऽनुशासन में हेमचन्द्र ने इस लक्षण के छन्द का नाम 'झम्बटकम्' लिखा है । यथा—

'गाने चिदौ झम्बटकम्' ।

यस्य कस्यचिद्गाने चगणत्रयं द्विमात्रश्च पादे चेत्तदा झम्बटकम् ॥"

5. P. यत्ता (त्ता) । 6. B. ध्रुवो । 7. P, चतुष्पदी । A. चतुःपदी । 8. B. ०कालाः । 9. P. सप्तकले । 10. P. में नहीं है । 11-11. P. चतौ पदौ गणौ मतौ । 12. P. अष्टाक्षरे । 13. P. नवाक्षरे । 14. P. चद्वयं । छन्दोऽनुशासन में लक्षण इस प्रकार है—'अंश्चादौ षचौ पौ वा ।' 15. P. षचता वेति । 16. P. तषकाः । 17. P. दास्तु । 18. P. चद्वयं । 19. P. दचदुष्कं ।; B. में 'चतुष्कं' के पहले 'द' नहीं है । 20-20. P. तश्चत्रयं तु षः; । A. तः च; B. त च ।

[एवं]* गणै[1] स्त्रिभिस्तुल्यैस्तुल्यातुल्यैरतुल्यकैः ।
[2]पादा यत्र भवन्त्यर्द्धे[2] षट्पदी सा प्रकीर्तिता ।। ४७ ।।

अस्यामाद्यस्य पादस्य द्वितीयस्य[3] तथा पुनः ।
तृतीयस्य तु षष्ठेन तुर्यस्य पञ्चमेन तु* ।। ४८ ।।

अनुप्रासस्तु कर्त्तव्यः प्रायेण द्विचतुर्थयोः ।
चतुष्पदी विशेषास्तु वस्तुकार्द्ध[4] समादयः ।। ४९ ।।[5]

[6]अनुप्रासस्तु कर्त्तव्यश्चतुष्पद्यामथोच्यते ।[6]
प्रथमस्य द्वितीयेन तृतीयस्येतरेण तु ।। ५० ।। [२९A]

ओजे[7] कलास्तु सप्ताद्याः षोडशान्ताः समे पुनः ।
प्रत्येकं सैकिकाः सप्तदशान्ताः परिकीर्तिताः ।
व्यामिश्रार्द्ध[8]समा सर्वसमा*संकीर्ण[8]काश्च ताः ।। ५१ ।।

चम्पक*-कुसुम-सामुद्रक-मलहणक-सुभगविलास-केसर[9]रावणहस्तक-सिंह-विजृम्भित*-मकरंदिका-मधुकरविलसित-चम्पक[10]कुसुमावर्ताः ।

मणिरत्नप्रभा-कुङ्कुमतिलक*-चम्पकशेखर[11]-क्रीडनक[12]*बकुलामोद-मन्मथतिलक-मालाविलसित*-पुण्यामलक-नवकुसुमितपल्लवाः ।। ५२ ।।

मलयमारुत-मदनावास-माङ्गलिकाभिसारिका-कुसुमनिरन्तर-मदनोदक-चन्द्रोद्योत-रत्नावल्यः ।। ५३ ।।

भ्रूवक्रणक[13]-मुक्ताफलमाला-कोकिलावली-मधुकरवृन्द-केतकीकुसुम-नवविद्युन्माला-त्रिवलीतरङ्गकाणि ।। ५४ ।।

प्रतिस्थित पाठ— ४७. *दो वर्णों का स्थान रिक्त । ४८. *तुः । *यहाँ ५० का अंक दिया है, अगला पद्यांक भी ५० ही है । ५१. *समासर्वसमा । ५२. *पञ्चम । *विजंत० । *तिलकं । *क्रीडन । *विलसित ।

---

1. P. एवं गुणैः । B. एवं ग गुणैः । 2-2. P. पादत्रयं भवत्यर्धे । A. B. पादत्रय भवन्त्यर्द्धे । 3. P. द्वितीयेन । 4. P. वस्तुकार्थ । 5. P. में ४९ वें और ५० वें पद्य में विपर्यय है । 6-6 B. अनुप्रासस्तु कर्त्तव्यो धीमता द्विचतुर्थयोः । इसके आगे ५० वें पद्य की दूसरी पंक्ति है । ४९ वें की दूसरी पंक्ति छूट गई है । 7. P. ओं(?)जे । B. ओं ओं जे । 8-8 P. समासर्वंसमा(ऽ)संकीर्ण०; A. B. समासर्वसर्व० । 9. B. केशर । 10. P. पञ्चक । K. चंपक । 11. A. पंचकशेषर; B. चंपकशेषर । 12. P. क्रीडन । 13. हेमचन्द्र ने इसका नाम 'भ्रूचक्रणक' दिया है ।

अरविन्दक-विभ्रमविलसितवदन-नवपुष्पंधय-किन्नरमिथुनविलास-विद्याधर-विलसितलीला-सारङ्गाः ॥ ५५ ॥

कामिनीहासापदोहक-प्रेमविलास-काञ्चनमाला-जलधरविलसिताः ॥ ५६ ॥

अभिनव-मृगाङ्कलेखा-सहकारकुसुम[२९B]मञ्जरी-कामिनीजीवनक[1]-कामिनी-कङ्कण-हस्तकाः ॥ ५७ ॥

सुखपाल-तिलक-वसन्तलेखा-मधुरालापनिकाश्च[2] ॥ ५८ ॥

मुखपंक्ति-कुसुमलतागृहे [3]रत्नमाला चेति पञ्चपञ्चाशद्भेदाः[3] ॥ ५९ ॥

व्यत्यासे* सुमनोरमा-पङ्कज-कुञ्जर-मदनातुर-भ्रमरा[वलि]मुखपङ्कजश्री-किङ्किणी-कुङ्कुमलता-शशिशेखरलीलालयाः ॥ ६० ॥

चन्द्रहासमधुर-वचना[4]-कुसुममाल[5]-मालतीकुसुम-नागकेसर-नवचम्पक-माला[6]-विद्याधरकुब्जक-कुसुमकुसुमास्तरणाः ॥ ६१ ॥

मधुकरीसंलाप-मुखवास-कुङ्कुमलेखा-कुवलयदाम-कलहंस-सन्ध्यावली*-कुञ्जरललिता-कुसुमवल्ल्यः ॥ ६२ ॥

विद्युल्लता-पञ्चाननलालिता*- मरकतमाला - अभिनववसन्तश्री-मनोहरा-क्षिप्तिका*-किन्नरलीलाः ॥ ६३ ॥

मकरध्वजहास-कुसुमाकुलमधुकर-भ्रमरविलास*-मदनविलास-विद्याधरहास-कुसुमायुधशेखराः ॥ ६४ ॥

उपदोहक-दोहक-चन्द्रलेखिका-सुतालिङ्गन-कङ्केल्लिलता-भवनानि ॥ ६५ ॥

कुसुमित केतकीहस्त-कुञ्जरविलसित-राजहंसाशोक[३०A]पल्लवच्छायाः ॥ ६६ ॥

अनङ्गलता-मन्मथविलसित-हुल्लणकानि* । कज्जललेखा-किलकिञ्चिते* शशिबिम्बितं चेति ता बद्धाः* ॥ ६७ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ६०. *वासन्त्य । ६२. *संघावली । ६३. *पंचाननलालसा । *०क्षिप्तका । ६४. *समरविलास । ६७. *झल्लणकानि । *किलि-किञ्चते । *बद्धा ।

---

1. P. क्रीडनक० । 2. P. मधुरालापिनीहस्ताः । 3-3. P. रत्नमाला च । इति पञ्चपञ्चाशद्भेदाः ॥ 4. P. गोरोचना० । 5. P. कुसुमबाण । 6. P. नवपञ्चकमाला ।

शुद्धा द्विपदिका पादे[1] षश्चा* पञ्च च गान्तकाः* ।
जौ स्तः[2] षष्ठद्वितीयौ तु मात्रा-द्विपदिका ततः ॥ ६८ ॥

षष्ठेनैकेन गुरुणा पूर्णा शुद्धैव **गाधिका**[3] ।
षश्च द्वयं **मानवी** स्यात्[4] पौ तौ* लौ **चन्द्रिका** मता ।
षश्चत्रयं धृतिस्तारान्तगा षष्पचतुष्टयम्*[5] ॥ ६९ ॥

इति द्विपदी ॥

आनन्त्यान्न प्रतन्यन्ते[6] द्विपद्यादेर्भिदा मया ।
प्रबन्धविधिहेतुत्वात् काश्चिदत्रोपवर्णिताः[7] ॥ ७० ॥

कलहंसो नभौ जयौ ॥ ७१ ॥

षो*गणद्विपदी नाम चतौ सा **स्वरपूर्विका** ।
उपगन्धर्वकं नाम षत्रयं चचतुष्टयम् ॥ ७२ ॥

दश्चार्कैर्वसुभिः श्रान्तौ[8] तत् **संगीतं**[9] यतौ पुनः ।
[10]*चतुर्दशभिरष्टाभिश्च**चर्चरी** षश्च[10]* सप्तकम् ॥ ७३ ॥

त्रिमात्रश्च[11] यतिश्चात्र चतुर्दशभिरष्टभिः ।
चतुर्भिश्चगणैः प्रोक्ता **पद्धडी, रासकः** पुनः ॥ ७४ ॥

मात्राभिरष्टादशभिर्नगणेन यतौ पुनः ।
चतुर्दशभिरेवायं मात्राभिः कथितो बुधैः ॥ ७५ ॥

केषांचिज्जातयः सर्वा रासकाः सम्मते मताः ।
चपञ्चकं[12] लघुगुरू यदि[३०B]वा रासको मतः ।
गोपालानां तथा क्रीडा **रास** इत्यभिधीयते ॥ ७६ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ६८. *पश्चाः। *कान्तकाः। ६९. *तो। *षश्च चतुष्टयम्। ७२. *वो। ७३. *-* चतुर्दशभिश्चच्चरी षश्च षश्च।

---

1. P. शुद्धद्विपदिकापादे। 2. P. जो(जौ)स्तः। 3. P. गान्धिकाः। 4. P. स्या(त्)। 5. B. पुष्पचतुष्टयम्। 6. B. तन्यन्ते। 7. P. काश्चिदेव हि वर्णिताः। A.B. काश्चिदशेषवर्णिताः। 8. K. श्रान्तेः। P. में 'लान्ते' अथवा 'गान्ते' पाठ अधिक सार्थक बताया गया है। 9. B. तत्संगीतयंतौ। 10-10. P. चतुर्दशभिरष्टाभिश्च चरीष(?)श्च। 11. P. त्रिमात्रस्य। 12. B. च चंपकं।

विश्वे मानवस्तिथयो[1] गुणचन्द्रौ शरविधू[2] शिखीन्दू च ।
तिथयो विश्वे विषमे समे तु रव्यंक*[3]विश्वमनुरवय: ।। ७७ ।।

गुणचन्द्रौ युगचन्द्रौ षोडशसंख्याकला: क्रमश: ।
सारसभ्रमरौ[4] **हंस**: **कुरर**श्**चन्द्रलेखिका**श्चैव[5] ।
कुञ्जरतिलकौ हंसक्रीडो ह्येतेषु निर्दिष्टा: ।। ७८ ।।

लघुभि: पञ्चादिभिरिह यद्येषामर्द्धयो:[6] शिखान्ते स्यात् ।
तं सूरयो **मयूरं** नाम **शिखाद्विपथकं** प्राहु: ।। ७९ ।।

रतिषष्ठदशमै:[7] कामगणै**स्त्रिपदी** मता ।
एकादशभिराद्यैश्च[8] षादौ[9] द्वि-द्वि-गणौ[10] मतौ ।। ८० ।।

चतुर्गुणद्वितीयस्तु[11] चतुर्थस्त्रिगणस्तथा ।[12]
तस्यामोजे[13] पञ्चदश कला: षोडश ता:* समे ।। ८१ ।।

अर्द्धयोर्भिन्नयमकौ कीर्त्तिता सा **चतुष्पदी** ।
बाणान्ते* चरणौ त्रि-त्रिगणौ यस्यास्त्रिषष्ठकौ ।। ८२ ।।

चत्वारो द्वि-द्विगणा सा गणै: कामस्य **षट्पदी** ।
तृतीये पञ्चमे चाद्ये मात्रा: पञ्चदशैव तु ।। ८३ ।।

तुर्ये द्वितीये रवयस्तद्वस्तु परिकीर्तितम् ।
प्रबन्धस्योपयोगीनि छन्दांस्युक्तानि कानिचित् ।। ८४ ।।

छन्द:शास्त्रानुसारेणोहनीयानि पराण्यपि ।
यस्यार्या धर्म[३१A]कार्यार्थं [14]चरितं पर्युपासते ।
तेनार्याकिङ्करेणेदं कृतमार्यापरीक्षणम्[15] ।। ८५ ।।

[16]इति श्रीराजाधिराजश्रीकुम्भकर्णविरचिते **तत्त्वप्रदीपे** पाठ्यरत्नकोशे छन्द उल्लासे आर्यावलोकनं नाम तृतीयं परीक्षणम् ।।[16]

प्रतिस्थित पाठ — ७७. *रव्यकं । ८१. * षोडशशता: । ८२. *बाणान्तौ ।

---

1. P. **नवतिथयो** । 2. P. **शरविधौ** । 3. P. **रत्यर्क** । 4. B. **सारसभ्रमरो** । 5. P. **०लेखकश्चैव** । 6. A. **में 'म' और 'यो' के बीच का अक्षर अस्पष्ट है** । P. **यद्येष-मद्व(?)यो:** । 7. P. **रतिरष्टदशमै:** । 8. P. **एकादशभिराद्यौ तु** । 9. P. **मादौ** । 10. P. **द्वि-द्विगुणौ** । 11. P. **चतुर्गुणस्तृतीयस्तु** । 12. P. **०त्रिग(ग)णस्तदा** । 13. P. **यस्यामोजे**; B. **यास्यामोजे** । 14. P. **कामार्थं** । 15. P. **कृतमार्यावलोकनं** । 16-16. P. **इति श्रीराजाधिराजकालसेनमहीमहेन्द्रेण विरचिते संगीतराजे पाठ्यरत्नकोशे छन्द उल्लासे आर्यावलोकनं नाम तृतीयं परीक्षणम्** । B. **में 'समाप्तम्' और है** ।

प्रस्तारपरिपाटी नाम चतुर्थ परीक्षण

येन प्रस्तारमाधातुं भूतानां भूतयोनिना ।
प्रसृतं परमाण्वादि नमस्तस्मै परात्मने ॥ १ ॥

समवृत्तस्य [तु] पादेऽर्द्धसमस्यार्द्धेऽखिले[1]तु विषमस्य ।
ये वर्णास्यु[र्]गुरवः प्रथमविकल्पे तु ते स्थाप्याः ॥ २ ॥

प्राग्रूपस्याद्याद्गोऽधो ल[:]स्यादुपरि समं तु परम् ।
प्रस्तारे पूर्वविधिरसमयभेदकृदिह[2] भवेत् प्राक्[3] ॥ ३ ॥

भूयः कुर्याद्विधिममुं यावत् सर्वलघुर्भवेत् ।
मात्रागणे तु प्राग्रूपमात्राः पूर्वं[4] नयेत् सुधीः ॥ ४ ॥

चरणस्य व्यवस्थोक्ता नार्यादिषु पुरातनैः ।
नष्टाङ्के विषमे सैके गुरुः स्यादर्थिते पुनः ॥ ५ ॥

समे चार्द्धे त[द]र्द्धे च नष्टाङ्के लघवो मताः ।
*प्रारभ्याद्याद्द्विगुणितानेकतोऽङ्कान्[5] समालिखेत् ॥ ६ ॥

सैकैर्युक्तैर्लघुस्थांकैरुद्दिष्टस्य मतिर्भवेत्[6] ।
उद्दिष्टाङ्कसमाहारात् [सैकात्]* संख्यापि लभ्यते ॥ ७ ॥

येन वर्णादिवृत्तानां विन्यासः प्रसृतो भुवि ।
तेन श्रीकुम्भकर्णेन[7] प्रस्तारोऽयं प्रपञ्चितः ॥ ८ ॥ [३१B]

[8]इति श्रीराजाधिराजमहीमहेन्द्रश्रीकुम्भकर्णविरचिते छन्द उल्लासे प्रस्तारपरिपाटी नाम चतुर्थं परीक्षणम् ॥ छ ॥

छन्द उल्लासश्च तृतीयः समाप्तः ॥[8]

प्रतिस्थित पाठ— ६. *प्रारभ्याद्याद्विगुणितातानैकतोंकात् समालिखेत् । ७. *स्थान रिक्त है ।

---

1. B. पादेर्धर्ममस्यार्द्धेऽखिले । 2. P. पूर्वविधिस्समय० । 3. P. प्राज्ञः । 4. P. प्राग्रूपमात्रापूर्त्तिम् । 5. B. ०नेकतोंकान् । 6. P. मितिर्भवेत् । यहाँ छन्दोभंग है । 7. P. श्रीकालसेनेन । 8-8. P. इति श्रीजगदीशवनदेवनिजगणेन जगदीश्वरीकामाक्षा[१]-चरणकिङ्करेण श्रीब्रह्माद्रिविभुना अध्युष्टतमनरेश्वरेण भीष्मपुरजयानीतानेकराजकन्यारत्नेन श्रीपुरग्रहण-

---

१. K. कामाक्षी ।

संवर्धितयशोभरेण वाटिकाचलग्रहणजनितकीर्तिपुरपराजिताचलनायकेन संगमनीरदुर्गोद्धरणो[१]-द्धृतसकलमण्डलाधीश्वरेण दमनपुरविध्वंसनबन्दीकृतयवनीनिचयेन महिषमेरुजयाजेयविभवेन शाकम्भरीरमणपरिशीलनपरिप्राप्तशाकम्भरीपरितोषितशाकम्भरीप्रमुखशक्तित्रयेण अष्टादश-गिरिशिखरपरिवारिताञ्जनगिरिविजयविख्यातवीर्यगर्वेण महदम्बमातृकापुरोद्धूलनधर्षित-महोरगपुरेण श्रीवनदेवस्वामिप्रसादरचनापरपरमेश्वरेण त्र्यम्बकेश्वरसन्निधिकीर्तिस्तम्भोन्नत-जयस्तम्भेन श्रीब्रह्मगिरिभीमस्वर्गयथार्थीकरणरचितचारुपथेन श्रीकामेश्वरीगिरिनवीननिर्मिति-पराजितसुमेरुणा श्रीमहिषाचलोपरि श्रीहरिचरणरचिताचलदुगण अभिनवभरताचार्येण वीणा-वादनप्रवीणेन यवनकुलाकाल[२]–कालरात्रिरूपेण त्रिसन्ध्याक्षेत्र[३]समुद्रसंभवरोहिणीरमणेन परमभागवतेन महाराजाधिराज[४]महाराणाश्रीमृगाङ्कतामराजनन्दनेन महाराज्ञीसौभाग्य-वतीजसमाम्बिकाहृदयनन्दनेन सकलसीमन्तिनीशिरोमणिकुम्भराजन्यावतंसमहाराज्ञी श्रीकर्मवतीलषु(घु)मावतीहृदयाधिनाथेन[५] श्रीराजाधिराजश्रीकालसेनेन विरचिते संगीतराजे षोडशसाहस्र्यां संगीतमीमांसाया पाठ्यरत्नकोशे छन्द उल्लासे प्रस्तारपरिपाटी नाम चतुर्थं परीक्षणम् ।

॥ छन्द उल्लासस्तृतीयः समाप्तः ॥

---

१. K. ०दुर्गोद्धृत० । २. A. में 'काल' नहीं है । ३. A. संध्य····। ४. K. में 'महाराजाधिराज' नहीं है । ५. B. में 'नाथेन' के बाद 'इति' और है ।

४. अलङ्कारोल्लास--उद्देश नाम प्रथम परीक्षण

क्रियते स्वस्वसिद्धान्तैस्तीर्थिकैर्यस्य* लक्षणम् ।
वृषादिलक्षणं नौमि [1]सि[द्धिम]त्सद्धिलक्षणम्[1] ॥ १ ॥

प्रमदा इव नो भान्ति प्रबन्धाः सुष्ठ्वलंकृताः ।
विलक्षणा अतो लक्ष्म[2] ब्रुवेऽलंकृतिभिरिह*[3] ॥ २ ॥

विभूषणं तथा शोभाभिमानोऽक्षरसंगतिः ।
प्रोत्साहाद्युदाहरणे[4] निरुक्तं गुणकीर्तनम् ॥ ३ ॥

गुणानुवादोऽतिशयो हेतुः सारूप्यसिद्धयः[5] ।
पदोच्च*[याक्रन्द]मिथ्याव्यवसायप्रियाशिषः[6] ॥ ४ ॥

प्राप्तिश्च पश्चात्तापनं संशयोऽर्थानुवर्त्तनम्[7] ।
कार्यनिर्भासनाख्यान[8]-याञ्चायुक्त्यनुनीतयः[9] ॥ ५ ॥

दृष्टान्तप्रतिषेधौ[10] च क्षमा पृच्छा[11] ततः परम् ।
मनोरथोपपत्ती च कपटं परिदेवनम्* ॥ ६ ॥

षट्त्रिंश[12]देतान्युक्तानि लक्षणानि समासतः ।
उपमाद्यैरलङ्कारैः सम्मितानि च ते यथा ॥ ७ ॥

उपमा दीपकञ्चैव रूपकं यमकं तथा ।
चत्वारोऽमी समादिष्टा अलङ्कारा: पुरातनैः ॥ ८ ॥

लक्षणा[13] ल[३२A]क्षणैरेभिर्नानावृत्तैर्विचित्रिताः ।
बुधैः प्रबन्धाः कर्तव्या नानालंकृत्यलंकृताः ॥ ९ ॥

प्रतिस्थित पाठ— १. *तीर्थकैर्यस्य । २. *ब्रुवेऽलंकृतिभि रह । ४. *यदोच्च ।
६. *परिवेदनम् ।

1-1. P. तमसत्सिद्धिलक्षणम् । 2. P. अतस्तानि(?) । 3-3. P.ब्रू(ब्रु)वेऽलंकृतिभिः सह । 4. P. प्रोत्साहनोदाहरणे । 5. P. हेतुसारूप्य० । 6. P. मिथ्याध्यवसायप्रियाशिषः । A. प्रियशिशः(?) B. प्रियाशिखः । 7. P. संशयोत्थानुवर्तनं । 8. K. निर्भर्त्सनाख्यान० । 9. B. युक्तानुनीतयः । 10. P. ०प्रतिषिद्धौ (षेधौ) । 11. P. श्रद्धा । 12. B. षड्विंशत्रिंश… । 13. P. लक्षिता ।

अल्पमुद्दिश्यते येन दीयते बह्वहर्निशम् ।
तेन भूषितविज्ञेन राज्ञोद्दिष्टं विभूषणम् ॥ १० ॥

[1]इति श्रीराजाधिराजश्रीकुम्भकर्णविरचिते संगीतराजे पाठ्यरत्नकोशेऽलङ्कारोल्लासे उद्देशपरीक्षणं प्रथमं समाप्तम् ॥



1-1. P. इति श्रीराजाधिराजश्रीकालसेनविरचिते संगीतराजे पाठ्यरत्नकोशे अलंकारोल्लासे उद्देशपरीक्षणं प्रथमं (समाप्तम्) ॥

लक्षण नाम द्वितीय परीक्षण

महाभूतादिकानर्थान् योऽञ्जसा[1] सृजतीश्वरः ।
अलंकृतिनिमित्तं तं पदार्थानां नमाम्यहम् ॥ १ ॥

यथारसं येन[2] निरूपितेषु भवन्त्युपादेयगुणाः प्रबन्धाः ।
[3]तदर्थशोभाजननार्थमेषां प्रचक्ष्महे भूषणलक्षणानि ॥ २ ॥

अलङ्कारैर्गुणैश्चैव भूषणैरिव यद्युतम् ।
रूपकं रसवद्भाति तद्भूषणमितीरितम् ॥ ३ ॥

यथा—

उच्चस्फाटिकहर्म्यभित्तिविलसत्[4]सत्पद्मरागांशुभिः
सिन्दूरप्रकरैरिवातिविततैर्नित्ये[5] वसन्तोत्सवे ।
चञ्चद्हेमघटावतंसविलसन्नाना[6]निलिम्पालयै-
रिन्द्रस्येति पुरी* विभाति सततं श्रीचित्रकूटालयः[7] ॥ ४ ॥

इति विभूषणम् ॥ १ ॥

[8]पूर्वसिद्धार्थवाक्येनाप्रसिद्धार्थ[स्य]साधनम्[8] ।
यत्र श्लक्षणविचित्रार्था तां शोभां जगदुर्बुधाः ॥ ५ ॥ [३२B]

यथा—

श्रीकुम्भेन[9] किरीटिनेव* शतशो दन्दह्यमाने कुले
शाके कौरववत्सुयोधन इव त्वय्येकशेषं गते ।
त्वं रे मालवभूमिनाथ कुरुषे नो चेन्मदीयं वच-
स्तन्मन्ये विधिनात्तुमीप्सित[10] इदं मंत्र्यं च शाठ्यं* रणे[11] ॥ ६ ॥

इति शोभा ॥ २ ॥

प्रतिस्थित पाठ — ४. *पुरा । ६. *किरीटेनेव । *मंत्र्यंन् वशाद्यं ।

1. A. B. योजसा । 2. P. येषु । 3-3. P. तदत्र० । 4. P. विसरत्० । B. विसरसत्पद्म····· । 5. P. नित्यं । B. विततैर्नित्ये । 6. B. में केवल इ की मात्रा (ि) है और 'लंपालयै' नहीं है । 7. श्रीब्रह्मशैलालयः । 8-8. P. पूर्वसिद्धार्थवाक्येन प्रसिद्धार्थस्य साधनम् । 9. P. श्रीकृष्णेन । 10. B. विधिना तमीप्सित । K. विधिना त्वमीप्सित । 11. B. में 'शाठ्यं' से पहले 'च' नहीं है ।

सहेतुकैर्यो* वचनैः प्रतिषिद्धोऽप्यनेकशः[1] ।
न निवर्त्तेत यत्रासावभिमान इति स्मृतः ॥ ७ ॥

यथा—

येनानर्गलदुर्गवर्गजयिना[2] नाजीगणन्* वैरिणो
दुर्गाग्रचो [3]जयते क एष समरे भूपेन शौर्याब्धिना[3] ।
[ध्वस्ते भीतमभूद]लं* शककुलं सारङ्गपूर्वे[4] पुरे
[त्वं शेषोऽसि विमुञ्च गर्वमधुना स्वं जीवितं[5] पालय] ॥ ८ ॥

इत्यभिमानः ॥ ३ ॥

[6]संश्लेषो यत्र वर्णानां वर्णवैचित्र्यतामगात् ।[6]
[7]तामित्यक्षरविन्यासां विदुरक्षरसंगतिम्[7] ॥ ९ ॥

यथा—

या [सुलभा न सुरेशान्*] सुरतरुतः परिजनेन तामस्मै ।
वितरति[8] [9]कुम्भ*महीपतिरभिमतततिरभिमुखीभूतः ॥ १० ॥

इत्यक्षरसंगतिः ॥ ४ ॥

[10]यत्रास्पष्टगुणोपेतैः[10] सोपमानैर्वचोभरैः ।
गूढार्थैर्नायकोत्साहयोगः प्रोत्साहनं तु तत् ॥ ११ ॥ [३३A]

[यथा—]

उद्दण्ड[:]पटहध्वनिर्घनघनप्रध्वाननाभैरवो[11]
हेषा[12]तुङ्गतुरङ्गमाग्र्यखुरलीशब्दानुगा श्रूयते ।
दिग्दन्तावलदन्तभेदनपटुर्वीरालिसिंहध्वनि-
र्निन्ये[13] शैलशिलोच्चयान् पुनरहो कस्मादकस्मादिव ॥ १२ ॥

इति प्रोत्साहनम् ॥ ५ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ७. *सहैतुकैयौ । ८. *नाजीगणो । *'लं' के स्थान पर 'सं' है । *यह पंक्ति नहीं है, स्थान रिक्त है । ९. *विदुरक्षयसंगतिम् । १०. *'यस्य' के बाद स्थान रिक्त है । *'भ' अक्षर छूट गया है ।

---

1. B. प्रतिषद्धोप्यनेकशः । 2. P. ये नानर्गलदुगवर्गजयिना(नो) । 3-3. P. हि कुरङ्ग एष समरे भूपेन शौर्याहृतः । B. एषस्समरे । 4. P. श्रीशुक्लपूर्वे । 5. A. स्वजीवितं । 6-6. P. संश्लेषोऽर्थाक्षरगतो यत्र वैचित्र्यभाग्भवेत् । 7-7. P. तामत्यक्षर··· संगतिम् । B. ०सगतिः । 8. A. B. विरति । 9-9. P. कालुजिभूपतिरभिमततितिमभिमुखीभूतः । 10-10. K. यत्रास्त्यष्टगुणोपेतैः । 11. B. ०भैरव । 12. P. ह्रेषा । 13. P. भिन्दिन् ।

श्रवणादेव[1] शब्दस्य यत्र कार्यान्तराण्यपि ।
प्रयुक्तान्यपि[2] सिद्ध्यन्ति तदुदाहरणं स्मृतम् ॥ १३ ॥

[यथा—]

लेखिन्या[3] नलकूवरं* [4]पृथुकुचप्रारम्भगुर्व्या तथा[4]
वैदर्भी[5] निषधाधिपेन च रतिं कामेन कृष्णं श्रिया ।
पश्यन्त्यो मुहुरन्वहं नृपसुताः श्रीकुम्भकर्णक्षमा[6]–
नाथेन स्वमतुल्यरागविभवाः सादृश्यतोऽकल्पयन् ॥ १४ ॥

इत्युदाहरणम् ॥ ६ ॥

तथ्यातथ्यविभेदेन निरुक्तं* द्विविधं स्मृतम् ।
सिद्धिप्रसाधितं पूर्वमपरं चाप्रसाधितम् ॥ १५ ॥

तथ्यं यथा—

चन्द्रः काश्मल्यमागात् कथमिति गदिते कश्चिदस्याशयज्ञो-
ऽवादीदस्योदयोऽयं त्रिभुवनधवलीकारकामस्य जाने ।
तच्छ्रीकुम्भस्य[7] राज्ञः कृतमिति[8] विधुभिः कीर्तिपूरैः कृतं मे
तथ्यारम्भेण[9] हृत्स्थो बहिरिति समभू[३३B]त्कालिमातथ्यमस्य*॥१६॥

अतथ्यं* यथा—

सत्यं नासत्यमेतन् मुनिवचनमहाभ्यास*योगोऽवहद्यत्[10]
कौशल्यं कर्मणां नो यदि कथमभजत् सोऽपि राजा द्विजानाम् ।
दृष्ट्वा[11] श्रीकुम्भकर्णक्षितिपतियशसां राशिमुद्रिक्तक्षोभं
हित्वा स्वल्पौचितीं[12] तां निशिचरणचणत्वोचितं[13] कालिमानम्*॥१७ ।

इति निरुक्तम् ॥ ७ ॥]

प्रतिस्थित पाठ— १४. * नन कूवरं । १५. *नि निरुक्तं । १६. *०सस्य । १७. *अथ तथ्यं । *०महोभ्यासयोगो । *कालिमानाम् ।

---

1. P. श्रवणादेक । 2. P. अनुक्तान्यपि । 3. P. लेखित्वा । 4-4. P. पृथुकुचप्रारम्भया रम्भया । 5. P. वैदर्भी(र्भी) 6. P. श्रीकालसेनक्षमा– । 7. P. तच्छ्रीकृष्णस्य । 8. P. कृतमति । 9. B. तथ्यापूरेण । 10. P. वहेद्यत् । 11. P. श्रीकालसेनक्षितिपति० । 12. P. स्वस्यौचितिं । B. स्वस्यौचिति । 13. K. निशिचरचरण० ।

बहूनां गुणिनां यत्र नानार्थजनितैर्गुणैः ।
एकोऽपदिश्यते तत्तु कीर्त्तितं गुणकीर्त्तनम् ॥ १८ ॥

यथा--

ये दृप्तप्रतियोधशौर्यशमनप्रख्यातवीरव्रताः
प्रद्युम्नप्रतिरूपका वितरणप्रावीण्य[1]कल्पद्रुमाः ।
[2]ते सारङ्गपुरे हठेन[2] यवना नीताः[3] क्षयं भूभुजा
धृष्टो यातु [4]महम्मदो धुरमिमां[4] कालंदरीं[5] मन्दधीः ॥ १९ ॥

इति गुणकीर्त्तनम् [॥ ८ ॥]

उत्तमानां गुणैः स्पर्द्धा हीनानामुपमाकृते ।
गुणानुवादः स प्रोक्तः प्रबन्धे कुम्भभूभुजा[6] ॥ २० ॥

[यथा--]

ऋते हिमाद्रिं सरितः सुराणां
न संभवः स्यादिति युक्तमेतत् ।
इत्यूहि रे[7] शुभ्रितसर्वलोकां
विलोक्य कीर्तिं नृ[३४A]पतेरमुष्य ॥ २१ ॥

इति गुणानुवादः ॥ ९ ॥

सामान्यस्य जनस्यात्र बहूनां गुणकीर्त्तनैः ।
उत्तमार्थविशेषे यः स प्रोक्तोऽतिशयो बुधैः ॥ २२ ॥

यथा--

पूर्णेन्दुमेतन्मुखमब्जयोनि--
र्निर्माय[8] पश्चात् समवाप दौस्थ्यम् ।
तद्दर्शनात् संकुचदासनाब्ज--
मिलद्दलोत्पेषणखिन्नगात्रः ॥ २३ ॥

इत्यतिशयः [॥ १० ॥]

बहूनां भाषमाणानां अनेकार्थविनिर्णयात् ।
सिद्धौ[9] समानवचने हेतुरत्रोपवर्णितः ॥ २४ ॥

---

1. A. प्राविण्य । 2-2. P. तेऽमी दल्लिपुरे० । A. नेपाऽल्लिपुहटेन । B. नेपाद्दुलिपुहटेन । 3. P. यवनानीताः । 4-4. A. B. महम्मदोद्धुरमिमां । 5. B. कालंदरी । 6. P. कृष्णभूभुजा । 7. इत्यूह्यते । 8. P. योनि(योनि)र्निर्माय । 9. P. सिद्धौ(द्धे) ।

यथा—

धिङ्मां[1] शकाधममहं प्रथमोऽभवं यद्-
वैधव्यहेतुरतुलं यवनीकुलानाम् ।
क्षत्रोद्भवे शककुले निधने[2] निदानं
येनाभियुक्त[3] इति मालवनाथ[4] ऊचे ।। २५ ।।

इति हेतुः [।। ११ ।।]

परोक्षो*ऽपि हि वाच्योऽर्थो यस्माल्लक्षणसाम्यतः ।
उत्पद्यते[5]ऽनुकरणात् [6]सारूप्यं तदिहोदितम्[6] ।। २६ ।।

यथा—

सम्मोचितो* नागपु[रं][7] किलैकः[8]
स तादृशः शार्ङ्गपुरे*[9]ऽपराधः ।
एतद्विचिन्त्यास्य लभे न[10] शर्मे-
त्यादिष्टवान् गुर्जरपः* स्वभृत्यान् ।। २७ ।।

इति सारूप्यम् [।। १२ ।।]

बहूनां तु प्रधानानां तुल्यार्थवचनैरिह ।
एकार्थसाध[३४B]नं वाक्यं सिद्धिर्बुद्धिमतोच्यते ।। २८ ।।

[यथा—]

यद्बप्पेन[11] पुरार्जितं भगवतः शम्भोः समाराधने
यत् खुम्माणमुखैश्चितं[12] नृपतिभिर्धर्मैकनिष्ठैश्चितम्[13] ।
शर्वाणी[14]चरणानुचिन्तनबलात् स्फीतीकृतं यत् पुन-
स्तत् पुण्यं नृपकुम्भकर्णवपुषा[15] स्फारं समुज्जृम्भते ।। २९ ।।

इति सिद्धिः [।। १३ ।।]

प्रशंसा क्रियते यत्र नानार्थं प्रथनात्मिका ।
पदैर्बहुगुणैरेकवाचकैः स पदोच्चयः ।। ३० ।।

प्रतिस्थित पाठ— २६. *परोक्षापि । २७. *शार्ङ्गपरे । *गूर्जरयः ।

---

1. B. धिक मां । A. धिक् मां । 2. P. निधनो(?) । 3. B. यैनाभियुक्त । 4. P. गुर्जरनाथ । 5. B. उत्पत्यते । 6-6. P. तत्सारूप्यमिहोदितम् । 7. P. मातृपुरं । 8. P. कुलैकः । K. किलैकः । 9. P. स्थानपुरे । 10. P. लभेत । 11. P. श्रीतासेन । 12. P. यच्छ्रीराममुखैश्चितं । 13. P. धर्मैकनिष्ठैः सदा । B. धर्मैक० । 14. P. कामाक्षी० । A. B. कामाक्षां । 15. P. कालसेनवपुषा ।

यथा—

[1]आसत्यलोकमुर्वीमहिनिलयं व्याप्य संस्थिता नित्यम् ।
आभाति विश्वमूर्तेर्वनमालेवास्य सत्कीर्तिः[2] ॥ ३१ ॥

इति पदोच्चयः [॥ १४ ॥]

तीव्रार्थभाषणं[3] यत्स्यात्[4] परसादृश्ययुक्तिभिः[5] ।
वस्तुस्वरूपोपन्यासे स आक्रन्दः स्मृतो बुधैः ॥ ३२ ॥

यथा—

इत्यूह्यते संयति योऽरिवर्गै-
रजातघातेषु[6] शकेष्वकस्मात् ।
नवावतारं व्यसनस्य कुर्वन्
कोऽप्येष[7]कुम्भच्छलकैटभारिः[8] ॥ ३३ ॥

इत्याक्रन्दः ॥ १५ ॥

अतस्मिन्नपि[9] यत्रार्थे तुल्यसार्थस्य[10] निर्णयः ।
स मिथ्याध्यवसायोऽस्ति*[11] प्रबन्धादिषु लक्षणम् ॥ ३४ ॥

यथा—

एत[३५A]न्मे शिशुभाषितं न च रुतं नो कुञ्जभूमिर्गृहं
नो भृङ्गावलिगुञ्जितं मयि रुषा ना*[थस्य मे] हुङ्*कृतम् ।
नो वल्ल्यश्चलपाणयः* सखिगणा इत्थं हते मालवे[12]
[13]यद् भीतेर्वचनानि[—]* मनुम्लेच्छाङ्गनाः सर्वशः[13] ॥ ३५ ॥

इति मिथ्याध्यवसायः ॥ १६ ॥

यत्पूर्वं क्रोधजननमन्ते[14] हर्षप्रवर्धनम् ।
प्रियोक्तिर्गदिता सा ज्ञैराशीर्वादसमन्विता[14] [॥ ३६ ॥]

प्रतिस्थित पाठ— ३१. आः सत्य० । ३४. *मिथ्याध्यवसायस्ते । ३५. *तीन वर्णों का स्थान रिक्त, बाद में 'हु' अक्षर है । *०पाणया । *स्थान रिक्त है । ३६. *यह पद्य प्रति में नहीं है ।

---

1. P. आसप्त० । 2. P. K. कीर्त्तिततिः । A. कीर्तिः । B. कीर्त्तिता । 3. B. तीव्रर्थ्यभाषणं । 4. P. यस्मात् । 5. A.परशादृश्यं । 6. P. ०रज्ञात० । 7. P. सोऽप्येष । 8. P. कालच्छलकैटभारि । 9. B. एतस्मिन्नपि । 10. P. तुल्यस्यार्थस्य । A. B. तुल्यस्यार्थेऽस्य । 11. P. मिथ्याध्यवसायस्तु । 12. P. गुर्जरे । 13-13. P. यद्गीतेर्वनमाश्रिता भ्रममगुम्लेच्छा गताः सर्वशः । B. ०भ्रममगुम्लेच्छा··· । A. भ्रममगुम्लेच्छां । 14. A. B. जननं मंते ।

यथा—

[1]जित्वा नागपुरं बलादथ हृता शाकम्भरी हेलया
जित्वा वाजयदुर्गमेरुसहितं नागं सरत्नाङ्गदम् ।[1]
स्वस्थानं[2] पुनराप यँस्तदधिपं[3] वृद्धत्वशेषीकृतं[4]
रामादप्यधिकं तवेति चरितं श्रीकुम्भकर्ण[5] प्रभो ! ॥ ३७ ॥

इति प्रियोक्तिः ॥ १७ ॥

वाक्यमाशंसनोपेतं मनोरथसमुद्भवम् ।
प्रार्थनीयपरान्या वा साशीर्विज्ञैरिहोच्यते[6] ॥ ३८ ॥

यथा—

यमभ्यमित्रीयितुमुद्यतासि-
माशीर्भिरार्या इति वर्द्धयन्ति ।
यन्मङ्गलं वृत्रबधोद्यतस्य
वृत्रद्विषस्तद् भवतेऽद्य भूयात् ॥ ३९ ॥

इत्याशीः ॥ १८ ॥

दर्शनादेकदेशस्याभिधानं[7] यस्य कस्यचित् ।
कार्य्यान्तरस्य सा प्राप्तिर्गदिता कुम्भभूभुजा[8] ॥ ४० ॥

यथा—

गूर्जरेशनृपव्याज[9]-राज्यलक्ष्मी[10]हठाहृतेः ।
अस्मिन् राजकराज्यश्रीरेष्यतीत्यनुगीयते[11] ॥ ४१ ॥

इति प्राप्तिः ॥ १९ ॥

कार्ये[वा]प्यथवाऽकार्ये सहसैवोपपादिते ।
चेतसो यस्तु संतापः स पश्चात्ताप उच्यते ॥ ४२ ॥

1-1. P. जित्वानेकपुरा(रो)धृता भुजबलात् कामेश्वरीलीलया ।
नीत्वा स्वं नगरं रुषा प्रतिभटा[1] ये(ऽ)खर्वगर्वोद्धताः ॥
2. P. स्वं स्थानं । 3. P. पुनरापयंस्तदधिपा । 4. P. वृद्धत्वशेषीकृता । 5. P. श्रीकालसेन । 6. P. साशीः शिष्टैरिहोदिता । 7. P. ०देशस्यानुमानं । 8. P. ताम-राजिना । 9. P. गुर्जरेशगजव्याज० । 10 P. राजलक्ष्मी । 11. P. …०त्यनुमीयते ।

---

१. B. प्रतिभटाः ।

यथा—

एतत्सैन्यरथेभवाजिविदलद्भूकम्पतर्क्यागमा
मुक्त्वाऽकस्मिकजातसंभ्रमवशान्मार्गे कुरङ्गेक्षणाः ।
गत्वाद्रीनिति चिन्तयन्त्यरिगणा दुश्चेष्टितं चेष्टितं
हा कष्टं किमिदं मिलेयुरपि ताः क्वास्ताः[1] क्व वा ताः पुनः ॥ ४३ ॥

इति पश्चात्तापः ॥ २० ॥

अजाततत्त्वो[2] वाक्यार्थसमाप्तिं[3] यत्र नीयते ।
नानाविचारसम्पन्नः संशयः स उदाहृतः ॥ ४४ ॥

यथा—

यमधिकृत्य परः परतोऽपि[4]सन्
जलनिधेर्जनतावदनोदरात्[4]
अयमितः स किलेति रवश्रुते—
र्वदसि[5] किं स[6] इहागत इत्यहो ॥ ४५ ॥

इति संशयः ॥ २१ ॥

स्नेहाद्दाक्षिण्यतो वापि यत्परस्यानुवर्त्तनम् ।
विनयादर्थसंयुक्ता[7] साऽनुवृत्तिरिहोदिता ॥ ४६ ॥

यथा—[8]

कुर्वते सुहृदो यस्य स्वं प्राप्तुं[9] रक्षितुं तथा ।
[10]जय त्राहीति[10]चाटूनि विनीतवदुपस्थिताः* ॥ ४७ ॥

इत्यर्थानुवृत्तिः ॥ २२ ॥

केनचिद्धेतुना यत्र दोषाणां* गुणयोजनम् ।
गुणेषु दोषयु[३६A]क्तिर्वा तत् कार्यं कार्यवेदिनाम्[12] ॥ ४८ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ४७. *०दुपस्थितः ।　४८. *दोषानां ।

---

1. P. ने 'कास्ताः' अथवा 'कान्ताः' पाठ अधिक उपयुक्त बताया है ।　2. P. K. अज्ञाततत्त्वो । A. B. अज्ञातत्वो ।　3. P. वाक्यार्थः समाप्ति ।　4-4. P. सन्न जलनिर्जनता वदनोदरात् ।　5. P. वदति ।　6. B. कं स ।　7. P. ०संयुक्तं ।　8. P. में नहीं है ।　9. P. स्वप्राप्तं ।　10-10. B. यत्राहीति; 'य' के बाद एक अक्षर का स्थान रिक्त । K. अत्रायाहीति ।　11. P. वेदनम् ।

यथा—

युष्मच्छासनमद्य[1] यावदपि मे मूर्ध्ना धृतं काङ्क्षया
लप्स्यामो[2]* भुवमित्यथो व्रज सखे यास्याम्यहं स्वेच्छया ।
अद्याहं[3] सुभगा न चास्मि गृहिणी नो जीवितेशो भवान्
यस्येत्थं रिपुयोषितामनुवनं वाक्योत्करः श्रूयते ।। ४९ ।।

इति कार्यम् ।। २३ ।।

निर्भासन[4]मनेकार्थसाधकं[5] युक्तिमद्वचः ।

[यथा—]

सर्वदं त्वां विजानन्ति सर्वदा सुहृदोऽरयः ।। ५० ।।

इति निर्भासनम्[6] ।। २४ ।।

अपृष्टैरथवा* पृष्टैराख्यानं निर्णयः स्मृतः ।

यथा—

मनोरथानामुपरि वर्त्ततेऽयं महीपतिः ।
परे[7]रजांसि वृत्तानि यस्येत्याख्यान्ति सूरयः ।। ५१ ।।

इत्याख्यानम्[8] ।। २५ ।।

क्रोधमुत्पाद्य यद्वाक्यमन्ते हर्षं प्रयच्छति ।
पुनर्यत् प्रियतामेति सा याञ्चा परिकीर्त्तिता ।। ५२ ।।

यथा—

क्रोधौद्धत्येन[9] हत्वा निकृतिकरमिलाधीश्वराणां समूहं
दिष्ट्या तस्मिन्नुपेते[10] शममुपरमतां[11] तत् स्वभावो[12] रिपूणाम् ।
शेषाः सर्वे नमध्वं हतरिपुनिकरं कुम्भकर्णं[13] महीन्द्रं
तत्पादप्राज्यसेवोपनतसुखजुषां[14] स्वस्ति राज्ञां[३६B]कुलेभ्यः ।। ५३ ।।

इति याञ्चा[15] ।। २६ ।।

प्रतिस्थित पाठ— ४९. *युग्मच्छासन । *लप्सामो । ५१. *अप्रष्टैरथवा ।

---

1. A. युष्मछासन । B. युष्मछाशन । 2. P. लक्ष्यामो । 3. P. आ(अ)-द्याहं । 4. K. समर्थित 'निर्भर्त्सनं' । 5. A. B. साकथं । 6. A. B. निर्भर्त्सनं । 7. P. प(पा)रे । 8. K. इति निर्णयः । 9. B. क्रोधोद्धत्येन । 10. A. तस्मिन्नुपेते । 11. P. शममुपरता (तां) 12. P. स्वभावो(वे) । 13. P. कालसेनं । 14. A. B. सुखं जुषां । 15. A. B. यांचा ।

अन्योन्यस्यानुकूल्येन महद्भिः समवायतः ।
साध्यते योऽत्र सम्बन्धः सा युक्तिः परिकीर्तिता* ॥ ४४ ॥

यथा—

अन्योन्यस्यानुकूल्येन[1] यस्येच्छन्त्यनुकूलनम्[2] ।
कुम्भस्वामिमुखालेखाः[3] केषामितरथा कथा ॥ ५५ ॥

इति युक्तिः ॥ २७ ॥

अनुनीतिर्वचः[4] क्रोधमपराधं प्रमार्जयेत् ।

यथा—

कुपितं परितोषयन्ति यं[5] पुर एवेति समेत्य शत्रवः ।
कुरु नाथ दयां तृणाङ्कुरे किमु तेऽयं परशोरुपक्रमः ॥ ५६ ॥

इत्यनुनयः ॥ २८ ॥

अन्यदृष्टान्ततोऽन्यस्य प्रतिज्ञार्थस्य याऽनुमा ॥ ५७ ॥

[6]स दृष्टान्तः ॥[6] यथा—

निदानं नो दैवं न भवति पुनर्हेतुरपरो
निसर्गो यत् [7]साक्षान्निवसति* न[7] विद्वत्सु कमला ।
प्रमाणीकर्त्तुं तत् प्रभवतु विधाता पुनरिदं
धनं दायं[दायं]विघटयति कुम्भः[8] क्षितिपतिः ॥ ५८ ॥

इति दृष्टान्तः ॥ २९ ॥

प्रतिषेधः सुविज्ञेयः[9] कर्त्तव्यार्थनिवारणम् ।

यथा—

एतत्प्रतापयशसी सूर्यचन्द्रमसाविह* ।
अलमागूदयं प्राप्येत्याहतुः[स]स्मयस्मितम् ॥ ५९ ॥

इति[३७A] प्रतिषेधः ॥ ३० ॥

अपरिस्थित पाठ— ५४. *परिकीर्तिताः । ५८. *साक्षानिवसति । ५९. *सूर्याच्चन्द्रमसाविह ।

---

1. P. अन्योन्यस्यानुकूले(ल्ये)न । 2. B. यस्योत्थंत्यनु कूलनम् । 3. P. वनदेवमुखालेखाः । 4. B. अनुरीति० । 5. P. (तं) । 6-6. P. में नहीं है । 7-7. P. साक्षान्न वसति हि । A. साक्षांन्निवसति । 8. P. कृष्णः । 9. P. स विज्ञेयः ।

अक्रोधः क्रोधजननैर्वाक्यैर्यः सा क्षमा मता ॥ ६० ॥

यथा--

समुद्रमपि यस्योच्चैरतिशेते सहिष्णुता ।
नासूयति[1] तथाभूतशेषादीनपि कर्हिचित् ॥ ६१ ॥

इति क्षमा ॥ ३१ ॥

यत्राभिनयतो भावजनितै[2]र्वचनैरिह ।
पृच्छ्यतेऽन्यो*[3]ऽथवाऽत्मा तु सा पृच्छेत्यभिधीयते[4] ॥ ६२ ॥

यथा--

यद्वैरिस्त्रैणमाह व्यसनवशमिदं[5] वन्यभूमावुपैहि[6]
स्वान्तःस्वास्थ्यं किमेभिः [7]प्रकृतसुखकरैर्दुर्लभप्रार्थनैस्तैः[7]* ।
यैश्चित्ते रोपितैः स्यादियमतिविरतिस्त्वीहशी* सौख्यहर्त्री
तानद्यैव प्रियत्वादभिलषसि कथं त्वं पुनस्तद्वदस्व[8] ॥ ६३ ॥

इति पृच्छा ॥ ३२ ॥

निजाकारस्य यद्वाक्यं सुश्लिष्टार्थप्रदर्शकम् ।
अन्यापदेशवचनैः[9] कथ्यते स मनोरथः ॥ ६४ ॥

यथा--

श्रुतविश्रुतयद्गुणाकरा[10] अपि पारेतटिनीपतिं* स्थिता[11]
स्मरसारथिभिर्मनोरथैर्नृपकन्या वृणुते यमीश्वरम् ॥ ६५ ॥

इति मनोरथः ॥ ३३ ॥

उपपत्तिस्तु दोषाणां प्राप्तानां शमनं पुनः ।

यथा--

स्वप्नलब्धमपि यं नृपकन्याः
काङ्क्षितं नु सुचिरादनुनेतुम् । [३७B]
मुञ्च मानमनिदानमिदानीं
देहि दर्शनमिदं निगदन्ति ॥ ६६ ॥

इत्युपपत्तिः ॥ ३४ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ६२. *पृच्छते । ६३. *स्वीदृशी । *०प्रार्थनैस्ते । ६५. *पारेतटिनी-पतिस्थिताः ।

---

1. P. ता(वा)सूयति । 2. P. भावं जनितै । 3. B. पृछते । 4. A. पृष्ठेत्यभि-धीयते । B. पृष्टे० । 5. P. ०वशमवं । 6. A. वन्यभूमादुपैहि । B. वन्यभूमादुपेहि । 7-7. P. प्रकृतकरसुखैर्दुर्लभप्रार्थनैस्तैः । 8. P. तद्वदस्व(स्व) । 9. B अन्योपदेश० । 10. P. श्रुतिविश्रुत० । 11. P. ०स्थिताः ।

[1]कपटं छलयोगेनाभिसन्धानकरं[1] वचः ।

यथा—

यथा नागपुरादाने[2] चाद्गनि यवनेशितुः* ।। ६७ ।।

इति कपटम् ।। ३५ ।।

अपराधैर्व्यलीकोत्थैः प्रसिद्धैर्यत्प्रयोजयेत् ।
अर्थान्तरेण सम्बन्धं ज्ञेयं तत् परिदेवनम् ।। ६८ ।।

यथा—

[3]बलादेते नेशाः* समरभुवि संत्याजितभुवा
व्यलीकं वीक्ष्येदं कृतमकृतपूर्वं खलु मया ।
अहो किं कुर्वेऽद्य त्यजति सहसा मां सहचरी
विमुक्तस्नेहोत्थं* विचरति वचो यद्रिपुकुले[4] ।। ६९ ।।

इति परिदेवनम् [।। ३६ ।।]

रसानामानुकूल्येन येषु न्यस्तेषु रूपकम् ।
भाति तानि[5] समासेन[6] लक्षणान्युदितानि हि ।। ७० ।।
न्यस्य लक्षणसंघातं यस्मिन् मेने कृतार्थताम्
समुद्रः स्वस्य तेनायं कृतो लक्षणसंग्रहः ।। ७१ ।।*

[7]इति श्रीराजाधिराजश्रीकुम्भकर्णमहीमहेन्द्रेण विरचिते संगीतराजे षोडशसाहस्र्यां संगीतमीमांसायां पाठ्यरत्नकोशेऽलङ्कारोल्लासे लक्षणपरीक्षणं द्वितीयम् ।।[7] [३८A]

प्रतिस्थित पाठ— ६७. * यवनेशतुः । ६९. *नस्यादेतेनेशा । *०स्नेहेत्थं । ७१. *यह श्लोक सभी प्रतियों में प्राप्त है । इसके अर्थ से ग्रन्थकर्ता का नाम 'कुम्भ' ही प्रतिध्वनित होता है । सं०

1-1. A. कपटच्छल०····। 2. P. वेद्यचलादाने । 3. P. बलादेते । 4. A. यद्रिषु कुले । B. येद्रिषु कुले । 5. B. भावितानि । 6. समासेषु । 7-7. P. इति [1]श्रीराजाधिराजश्रीकालसेन-[2]महीमहेन्द्रेण विरचिते संगीतराजे पाठ्यरत्नकोशे अलङ्कारोल्लासे लक्षण-परीक्षणं द्वितीयं [3]समाप्तमिति ।।

---

१. B. में श्री नहीं है । २. B. में 'महीमहेन्द्रेण' नहीं है । ३. B. समाप्तम् ।

शब्दालङ्कार नाम तृतीय परीक्षण

विचार्यमाणस्तत्त्वेनोपमैवाखिलवस्तुनः ।
दीपको रूपकमिदं[1] श्रये तं शशिभूषणम् ॥ १ ॥

अर्थं प्रबन्धस्य शरीरमाहु–
यौक्ता पदानां घटना ततोऽस्य ।
अलङ्कृतिस्तेन वदे पुरोऽह–
मलङ्कृतीरर्थगतास्ततोऽन्याः[2] ॥ २ ॥

उपमेयस्य यत्र स्यादुपमानसमानता ।
गुणाकृतिसमायोगादुपमा नाम सम्मता[3] ॥ ३ ॥

धर्मवस्तु*विपर्यासनियमा[नियमा]दिभिः ।
समुच्चयान्योऽन्यातिशयोत्प्रेक्षिताद्भुतसंशयैः ॥ ४ ॥

मोहनिर्णयनिन्दाचिख्यासा[5]-श्लेषप्रशंसनैः ।
विरोधप्रतिषेधासंभाविताभूतहेतुभिः ॥ ५ ॥

[6]चटुतत्त्वाख्यातमाला[6] विक्रिया प्रतिवस्तुभिः ।
प्रतिवस्त्वसाधारणवाक्याद्यैः स्यादनेकधा ॥ ६ ॥

प्रत्ययाव्ययतुल्यार्थसमासाद्यैश्च हेतुभिः ।
एकस्यैकानेककाभ्यामनेकस्यैककेन च*[7] ॥ ७ ॥

बहूनां बहुभिः[8] साम्यात्[9] सविकल्पास्त्वनेकशः[10] ।
न ते कारस्न्र्येन शक्यन्ते भेदा वक्तुं कथंचन ॥ ८ ॥

न ते मयोदाह्रियन्ते* विस्तरत्रस्त-चेतसा ।
लक्ष्ममात्रं मया तेषामुक्तं[11] विस्तरभीरुणा[12] ॥ ९ ॥

प्रतिस्थित पाठ— ४. *वसु । ७. *स्यैवकेन च । ९. *मयोदाहृयन्ते ।

---

1. P. रूपकमिति । 2. P. ०र्थगत(ता)स्ततोऽन्याः । B. ०ततोऽन्या । 3. P. सा मता । 4. B. शंसयैः । 5. P. चिकित्सा । A. चि स्या सा । K. चिख्या । 6-6. P. च(चा)दुतत्त्वाख्यानमाला । 7. B. नेककाभ्यामनैक च । 8. A. बहुभिस्सा । 9. P. सा स्यात् । 10. P. तद्विकल्पास्त्वनेकशः । 11. A. तेषां मुक्तं । B. तेषां चोक्तं । 12. P. विस्ता(त)रभीरुणा । B. विस्तारः ।

नानाधिकरणार्थानां शब्दानामेकवाक्यतः ।
संयो[३८B]गात् कथनं प्राहुर्दीपकं तद्विदो जनाः ॥ १० ॥

किञ्चित् साधर्म्यसंपत्तेस्तुल्यावयवलक्षणम् ।
स्वैर्विकल्पैर्विरचितं रूपं रूपकमिष्यते ॥ ११ ॥

समस्तमसमस्तं च खण्डं चाखण्डमेव च
चतुर्द्धा तत्समाख्यातं [1]मेदपाटावनीभृता[1] ॥ १२ ॥

वर्णावृत्तिः पदावृत्तिरुभयावृत्तिरित्यपि ।
विकल्पादादिमध्यानां यमकं भिन्नवाच्यगा ॥ १३ ॥

पादान्तयमकं[2] चैव काञ्चीयमकमेव च ।
समुद्गयमकं चैव विक्रान्तयमकं तथा ॥ १४ ॥

यमकं चक्रवालं च संदष्टयमकं[3] तथा ।
पादादियमकं चैवमाम्रे डितमथापि वा[4] ॥ १५ ॥

चतुर्व्यवसितं चैव मालायमकमेव च ।
एतद्दशविधं ज्ञेयं यमकं लक्षणाश्रयम् ॥ १६ ॥

वर्णसाम्यमनुप्रासः स्फुरद्गुणगणाञ्चितः ।
तत्पदातत्पदत्त्वेन रच्यते रचितो बुधैः ॥ १७ ॥

अलङ्कृतमलङ्कारैरेभिर्लक्षणलक्षितम् ।
रसानुरूपं कर्तव्यं रूपकं रूपकार्थिभिः ॥ १८ ॥

आसंसारं पूर्वराजचरितानुगवेषणात् ।
उपमातीत[5]-वृत्तेनोपमाद्या अत्र वर्णिताः ॥ १९ ॥

[6]इति श्रीमहाराजाधिराज श्रीकुम्भ० शब्दालङ्कारपरीक्षणं तृतीयम् ॥[6]

1-1. P. जनस्थानावनीभृता । 2. P. प(पा)दान्तयमकं । 3. A. सन्दृष्टयमक । 4. P. च । 5. P. उपमानीत । 6-6. P. इति श्रीराजाधिराजश्रीकालसेनविरचिते सङ्गीतराजे षोडशसाहस्र्यां संगीतमीमांसायां पाठ्यरत्नकोशे अलङ्कारोल्लासे शब्दालङ्कार-परीक्षणं तृतीयं समाप्तम् ।

गुणदोषनाम चतुर्थ परीक्षण

दोषैर्युक्ता गुणैर्मुक्ताऽलङ्कृताऽपि[३९A]न शोभते ।
ललनेव वचोभङ्गी तानतो वच्मि यत्नतः ॥ १ ॥[1]

गुणातीतोऽपि सगुणः सदोषो दोषवर्जितः ।
मुदे स्तान्मे शिवो नागभूषि[तोऽप्यगभूषि]तः ॥ २ ॥

गुणार्थार्थान्तरैकार्थ[2]भिन्नार्थाभिप्लुतार्थकाः ।
न्यायादपेतविषमविसन्ध्यर्थविहीनकाः ॥ ३ ॥

शब्दच्युतमिमे* दोषा रूपके दश कीर्त्तिताः ।
गूढार्थं तत्र पर्यायशब्देनाभिहितं* मतम् ॥ ४ ॥

अर्थान्तरं तु तज्ज्ञेयं अवर्णं[3] यत्र वर्ण्यते ।
एकार्थमपि विज्ञेयमेकार्थस्याभिधानतः ॥ ५ ॥

भिन्नार्थं भिद्यते यत्रान्योऽर्थोऽन्येन विवक्षितः ।
अभिप्लुतार्थं यत्र[4] स्यात् तत्पदेन समस्यते ॥ ६ ॥

प्रमाणवर्जितं न्यायादपेतं परिकीर्त्तितम् ।
वृत्तभेदेन विषमं रूपकं परिकीर्तितम् ॥ ७ ॥

अनुपश्लिष्टशब्दं यत्तद्विसन्धि स्मृतं बुधैः ।
अर्थहीनमसंबद्धं सावशेषार्थमेव च ॥ ८ ॥

अपशब्दस्वरं शब्दच्युतं सद्भिरुदाहृतम् ।
सर्वत्र ग्राम्यतैवेष्टा*[5] यतः सार्थेऽरसावहा* ॥ ९ ॥

एतद्विपर्ययाज्ज्ञेया[6] गुणा गुणिभिरादृतैः ।
प्रसादश्लेषसमतामाधुर्यौजःसमाधयः ॥ १० ॥

प्रतिस्थित पाठ— ४. *शब्दं च्युतमिमे । *शब्देनाभिहतं । ९. *ग्राम्यते चेष्टा । *सार्थं न सा वहा ।

---

1. P. में मंगलाचरण की दृष्टि से दूसरा पद्य पहला और पहला दूसरा दिया गया है ।
2. P. गूढार्थां० । B. गूढार्थार्थान्तरै कार्यं० । 3. A. ज्ञेयं अवर्ण्यं । 4. P. यत्तत् । B. यत्त ।
5. B. ग्राम्यते चेष्टा । 6. P. एतद्विपर्ययान्(ज्) ।

अर्थव्यक्तिरुदारत्वं कान्तिश्च सुकुमारता ।
दशैते स्युर्गुणास्तेषां विशेषाल्लक्ष्म[1] चक्ष्महे ॥ ११ ॥

यत्रा[३९B]र्थस्य[2] प्रतीतिः स्यादनुक्तापि प्रयोगतः ।
शब्दानां सः प्रसादाख्यो गुणो* ज्ञेयो बुधैरिह ॥ १२ ॥

ईप्सितार्थविशिष्टानां सम्बन्धाद्यत्परस्परम् ।
श्लिष्टत्वं[3] हि पदानां स श्लेष इत्यभिधीयते ॥ १३ ॥

स्वभावेन स्फुटार्थं स्याद्गहनं तु विचारतः ।
स्वतः सुप्रतिबद्धं च श्लिष्टमिष्टं सतां हि तत् ॥ १४ ॥

नातिचूर्णपदं यत्र न च व्यर्थाभिधायि च ।
न दुर्बोधाभिधानं सा समत्वात् समता मता ॥ १५ ॥

श्रुतमुक्तं तु यद्वाक्यं बहुशोऽपि विदां हृदि ।
पुनः पुनर्नवं भाति तन्माधुर्यमिहोच्यते[4] ॥ १६ ॥

समासविद्धि[5]र्विविधैर्विचित्रैश्च पदैर्युतम् ।
सानुस्वारविसर्गैर्यत्तदोजः परिकीर्त्तितम् ॥ १७ ॥

अभियुक्तोपलक्षार्थ[6]-विशेषार्थस्य सम्पदा ।
सम्पन्नः कश्चिदर्थो यः स समाधिर्गुणो मतः ॥ १८ ॥

लोकमार्गव्यवस्थातः सुप्रसिद्धाभिधानयुक् ।
या काचिद्रचना काव्ये साऽर्थव्यक्तिरुदाहृता ॥ १९ ॥

नानाभावैरुपेतं यच्छृङ्गाराद्भुतसम्भृतम् ।
दिव्यभावपरीतं तदौदार्यं भणितं गुणः ॥ २० ॥

चन्द्रवन्मनसो या स्यादाह्लादकरतोक्तिषु ।
[7]लीलाद्यर्थोपपन्ना सा[7] कान्तिर्नामगुणो मता ॥ २१ ॥

प्रतिस्थित पाठ— १२. *संप्रसादाख्यो गुणा ।

---

1. P. विशेषाल्लक्ष्य(चक्ष्म)हे । 2. P. यथार्थस्य । 3. P. शि(श्लि)ष्टत्वं । 4. P. माधुर्यमिहोदितम् । 5. P. समासवद्धि० । 6. P. लम्यार्थ । 7-7. B. लीलाद्यर्थोपपन्नानीसा ।

सुश्लिष्टसन्धिभिः शब्दैः[1] सुकुमारार्थयोजितैः ।
सुखप्रयोज्यै[४०A]र्व्यक्तार्थैर्युक्ता स्यात् सुकुमारता[2] ॥ २२ ॥
आर्यावृत्तसमन्वितं[3] सुललितं लघ्वक्षरोल्लासितं
रूपं रूपकदीपकैरुपमया चालङ्कृतं संस्कृतम् ।
शृङ्गारे पुनरद्भुते रसवरे वीरेऽथ रौद्रे भवेद्
वर्णैर्गौरवगुम्फितैर्जगतिका मुख्यैश्च वृत्तैर्युतम् ॥ २३ ॥
रसेषु शेषेषु यथारसं नु[4]
छन्दः प्रयोज्यं विदुषा विलोक्य ।
तस्यानुरूपा घटना पदाना-
मलङ्क्रिया चाक्षरसंहतिश्च ॥ २४ ॥
सुललितललनालपनालापनलघिमानुरूपपदरचनाः ।
नृत्यानुगगतिरुचिराः पदबन्धाः सुकविभिः कार्याः ॥ २५ ॥
रचितविविधमार्गं सधिसंधानयुक्तं
सहृदयसुखगम्यं श्लेषगुप्तार्थहीनम् ।
मृदुसुललितवर्णं चित्रनृत्यानुरूपं
भवति जगति पाठ्यं प्रेक्षकप्रीतिकारि ॥ २६ ॥
यद्गुणा गुणिनामेव दोषनिर्मुक्तिहेतवः ।
तेन [5]श्रीकुम्भकर्णेन कृतं गुणपरीक्षणम्[5] ॥ २७ ॥
येन क्ष्मावलये समुद्धतमहीनाथा नयं स्वं यश-
स्तद्घोषाः[6] सलयं सुनृ[त्यनिगमं[7] साङ्गं]* पुनस्तत्सुताः ।
स्वाचारं जनतावदान्यचरितान्यर्थिव्रजाः पातिताः[8]
पाठ्ये तेन नृपेण* चारुभणितौ सद्रत्नकोशः कृतः ॥ २८ ॥

[9]इति[४०B]श्रीराजाधिराजेन अरिराजमत्तगजसिंहेन मेदपाटसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन अभिनवभरतेन अश्वपतिनरपतिगजपतिराजत्रयतोडरमल्लेन राजगुरुचापगुरु-सेलगुरु-इत्यादि विरुदावलीविराजमानेन महीमहेन्द्रश्रीकुम्भकर्णेन विरचिते सङ्गीतराजे षोडशसाहस्र्यां संगीत-मीमांसायां पाठ्यरत्नकोशे अलङ्कारोल्लासे दोष-गुणोल्लासः पाठ्यरत्नकोशश्च समाप्ति समगादिति विततमतीनामभिमतसिद्धिः ॥[9]

प्रतिस्थित पाठ— २८. *सुनृत्यति··· । *नृपेण नृपेण ।

---

1. P. शब्दे(:) । 2. P. सुकुमारतः(ता) । 3. P. आर्यावृत्ताः(त्त)० । 4. P. तु ।
5-5. P. श्रीकालसेनेन गुणोल्लासः प्रकीर्तितः । 6. P. ०स्तद्दोषाः । 7. P. सनृत्यनिगमं ।
8. P. पाठिताः । 9-9. P. इति निश्शङ्कनिर्भयमल्लेन सकलभूवलयैकवीरेण श्रीकला-

कल्याणकुशलेन श्रीकालसेनेन द्वादशसहस्रजनस्थानप्रभृतिवसुंधरासमुद्धरणैकधीरेण श्रीजगदीश्वरी[1]–वनदेवनिजगणेन श्रीकामेश्वरीचरणकिङ्करेण श्रीब्रह्माद्रिविभुना प्रथमप्रख्यात[2]–तामराज-आमोदराज-रामराज-पङ्कराज-तामराजेन्द्रप्रभृति - सकलमहीपालमौलिमाणिक्यरचित-सिंहासनादिसमस्तप्रशस्तराजचिह्नाधिष्ठातृ[3]-नरेश्वरेण अगस्तिपुरनिरस्तसमस्तवैरिवर्गेण कामाक्षाप्रसादासादितकुन्तीपुरेण शुद्धोद्धतोद्धतपतिनिपातपटुतरवारिधारेण उद्धतपुरनारीनयन-नीरनिरन्तरसाधारणी[4]-समाप्यायितशौर्यतरुवरेण भीष्मपुरजयानीतानेकराजकन्यारत्नेन अजिपुरमर्द्दन[5]-दर्शितशौर्येण कल्याणपुरजयाजितजामदग्न्येन[6] स्थानवलयितानेकदरीपरि-सरपरित्रासितमनीरवीरेण श्रीपुरग्रहणसंवर्धितयशोभरेण वाटिकाचलग्रहणजनितकीर्तिपुर-पराजिताचलनायकेन राजपुरीविध्वंसनचारुचापरचितेन सुवर्णगिरिखण्डनावनिवज्रहस्तेन नवसारी[7]घनदेवीयुवतीजनवदनयामिनीनाथसिंहिकासुतायमानकरालवालेन पाटलीरण धरणिधीरधनुर्धोकारमुखरितत्रिभुवनेन तारापुरप्रज्वालनसमुद्भूतधूममलिनीकृतसकल-वैरिवदनेन कुङ्कमपुरजयदर्शितसिंहविक्रमेण संज्ञापुरोपार्जितरत्नेन वेदिकागिरि-निर्दलनदारुणेन कुरङ्गगिरिकोटविघट्टनलम्पटोरुनाशीरेण पुण्यस्तम्भो[8]-द्धूलनोद्भूताद्भुतधैर्येण संगमनीरदुर्गोद्धरणोद्धृतसकलमण्डलाधीश्वरेण शुक्लपुरसमूलोन्मूलनप्राप्तजयश्रिया गिरिपुर-डुङ्गरग्रहणसार्थीकृतोग्राग्रहेण दमनपुरविध्वंसनबन्दीकृतयवनीनिचयेन आमर्दकगिरिशिखरो-परिभावितशकनिकरेण महिषमेरुजयाजेयविभवेन शाकम्भरीरमणपरिशीलनपरिप्राप्तशाक-म्भरीपरितोषितशाकम्भरीप्रमुखशक्तित्रयेण निजभुजशौर्य[9]-वशीकृत-बग्गुलराजप्रमुखमहा-निधानेन बेद्दुर[10]भूपालराजकृतसंस्थापनेन [11]नराणरणकर्म-कर्मठेन[12] तुजारखान[13] मानमर्द्दनगृहीतराज्यलक्ष्मीसकलभाण्डागारनिचयेन अलङ्गगिरिगहन गह्वरकुहरविहारिवैरिवीर-सिन्धुरमर्दननिर्दयकण्ठीरवेण अष्टादशगिरिशिखर-परिवारिताञ्जनाद्रिविजयविख्यातवीर्य-गर्वेण[14] सप्तविंशतिसहस्रमहाराष्ट्रधराविधूननप्रबलप्रभञ्जनेन सप्ततिसहस्रगुर्जराम्भोधि-माथ[15]-मन्थमहीधरेण महदम्बमातृकापुरोद्धूलनधर्षिता(त)महोरगपुरेण पलायमान-अजीमखान[16]-सकलगृहीतजयश्रिया जाङ्गलस्थलजलधितरतुङ्गतरङ्गनिकरसंरम्भकुम्भसंभवेन वस्तिसोपारकलहकलितकुन्तजनितकुन्दावदातकीर्तिधवलितदिगन्तरेण शशकगिरिलुण्ठनपटुतरेण श्रीवनदेवस्वामि-प्रासाद[17]-रचनापरपरमेश्वरेण श्रीत्र्यम्बकेश्वरसन्निधिनिर्मितकीर्तिस्तम्भोन्नत-

१. A. जगदीश्वर। २. A. प्रख्यातं। ३. A. अधिष्ठात्रि। ४. A. सारणी। ५. K. मदन (प्रेस की भूल हो सकती है)। ६. A. जामदग्नेन। ७. K. सबलारी। ८. A. स्तम्बो। ९. K. भुजवीर्य। १०. K. बोद्धुर। ११. K. नराणराण। १२. B. कर्म। १३. K. बुजारखान। १४. K. वर्गेण। १५. K. नाथ। १६. K. खान। १७. K. प्रसाद।

जयस्तम्भेन श्रीब्रह्मगिरिभौमस्वर्गतायथार्थीकरणरचितचारुतरुपथेन श्रीकामाक्षागिरिनवीन-निर्मितिपराजितसुमेरुणा श्रीमहिषाचलो[1]परिश्रीहरिशरणरचिताचलदुर्गेण रायगुरु-वायंगुरु-सेलगुरु[2]-रायाञ्चापरमगुरुवागाङ्गला-रायाञ्चामुहवनराय-हिंसल्लराय-माचल्ल-पूर्वपश्चिमो-त्तरदक्षिण-चतुर्दिशां-रायाञ्चाग्रांबुला-इत्यादि-बिरुदावलीविराजमानेन अध्युष्टतमनरेश्वरेण सबलराज-सम्मूलनाचार्येण[3] दुर्बलराजसंस्थापनाचार्येण पितृवैरिसमुद्भूतरोषपोषणमहीपतिमत्त-मातङ्गमस्तकाङ्कुशेन अभिनवभार्गवेण राजभुजबलभीमेन हिन्दूकराजगजपतिना आसनसिंहा-सनसितातपत्रमाणिक्यमालामण्डितवातान्दोलितजयपताका-कनकदण्डचन्द्रा[4]-वदातचलचामर-युगलमकरध्वजादिराजराजालङ्करणावलोकनमत्सरितमानसेतरनृपालमौलिनिहितवामचरणेन नलनहुषधुन्धुमारभरतभगीरथमान्धातृमेधातिथिप्रभृतिवीरराजरत्नोदात्तचरितेन[5] सर्वदा त्र्यम्बका[6]-दिगोदाविमुक्तिसमस्तामुक्तिप्रवितीर्णमुक्तिमुक्ताकलापेन श्रीब्रह्मगिरिसन्निधिकृत-युगधर्मानुवर्त्तिब्रह्मवृन्दाधिष्ठितानेकयज्ञाद्यखिलसुकृतकृतसत्सलोकेन[7] परमभागवतेन अभिनव-भरताचार्येण संगीत-मीमांसा[8]निर्माणापरप्रभाकरेण प्रबन्धराजश्रीगीतगोविन्दनिर्माणपरितोषित-राधामाधवेन कामाक्षास्तुतिकरणाराधितकामेश्वरीचरणकमलेन श्रीगीतगोविन्दटीकारचना-वर्णितसाङ्गशृङ्गाररसेन सकलराजवाग्गेयकारतोडरमल्लेन सकलकविराजचक्रचूडामणिना वीणावादनप्रवीणेन सुशारीरशालिना पद्मनगरजनस्थानगोदावरी[9]-विराजमानम्लेच्छोच्छेदित-चिरकालधर्मसंस्थापनेन संस्कृतभाषा-महाराष्ट्रभाषा-तैलङ्ग[10]कर्णाटक-भाषाचतुष्टयरचित-नाटकराजचतुष्टयेन याचकजनकल्पनाकल्पद्रुमेण वसन्तसमयसमागतसमस्तसामन्तसीमन्तिनी-सीमन्त[11]-सिन्दूरपूरदूरोद्धूलनप्रकटितप्रौढप्रतापेन निसर्गदुर्ग्रहदुर्गवर्गदुर्गमप्राकारपरिखा-परिपातपरिखिद्यमानपरिशङ्कितपरिजनपरिवीतप्रत्यर्थिनितम्बिनी[12]लुण्ठाकार्गलादीर्घभुजायुग-लेन धीरोदात्तधीरशान्तधीरोद्धत-धीरललित चतुर्विधनायकगुणग्रामविचारचातुरीचतुराननेन अष्टविधनायिका[13] - हावभाव - विवेको[14] - द्दामोद्दीपितस्मरविलोकनानुभूयमानशृङ्गाररस-सान्तरनिरन्तरान्तरानन्देन[15] नाटकनाटिकाख्याना[16]-ख्यायिका-प्रहेलिका-कलाकलापकौश-ल्येन[17] भारतीयरसदृष्टिभावदृष्टिभावितभावनाभिनवभरताचार्येण नन्दिकेश्वरमतनुवर्त्तना-राधित-त्रिनयनेन परमपराक्रमार्जुनेन अथ बृहन्नटेन सतताराधितधर्मेण अथ वृकोदरेण

---

१. A. श्रीमहिखाचल। २. K. मेलगुरु। ३. A. सन्मूलनाचार्य। ४. K. चण्डाव-दात। ५. A. में 'सर्वदा' से पूर्व 'वेदमार्गस्थापनचतुराननेन' विशेषण और है। ६. K. अम्बका। ७. K. सल्लोकेन। ८. A. मिमांसा। ९. A. B. गोदावरीं। १०. A. तेलंग। ११. A. सिमंत। १२. K. लुण्टार्गला। १३. A. नायका। १४ A. ०कोद्दोमो। विवेक के स्थान पर विव्वोक पाठ अधिक संगत लगता है। (सं०) १५ K. नन्दनेन। १६. A. B. ख्याधिका। १७. A. कौशलेयेन। B. में 'न' नहीं है।

श्रीसरस्वतीरससमुद्भूतकैरवोद्याननायकेन यवनकुलाकालकालरात्रिरूपेण सततवराभूत-[१] समागतसूर्यवंशीन्द्रसेन[२]-राजराज्यसंस्थापनदृढाङ्गीकारेण गुर्जर-[३]राजग्रधराधीशमहमदसुलतानधीरत्वोन्मूलनप्रचण्डपवनेन श्रीविसन्ध्य[४]-क्षेत्रसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन अरिराजमत्तमातङ्गपञ्चाननेन प्ररूढपत्रयवनदवदहनदावानलेन प्रत्यर्थिपृथ्वीपतितिमिरततिनिराकरणप्रौढप्रतापमार्तण्डेन वैरिवनितावैधव्यदीक्षादानदक्षोद्दण्ड-कोदण्डमण्डिताखण्डभुजादण्डेन भूमण्डलाखण्डलेन [५]गजनरतुरङ्गाधीशराजत्रितयतोडरमल्लेन[५] वन्सुधरोद्धरणादिवराहेण भवानीपतिप्रसादाप्तापसा(स)द[६]-वरप्रसादेन अनन्यमल्लीकगर्वखण्डनमुशल[७]-हस्तबलभद्रपराक्रमेण महाराजाधिराजमहाराणा-श्रीमृगाङ्कुतामराजनन्दनेन[८] महाराज्ञी-सौभाग्यवती[९] जसमाम्बिकाहृदयनन्दनेन विविधविज्ञानविज्ञचमत्कार[१०]-चातुरीधुरीण-सकलसीमन्तिनीधुरीणाशिरोमणिरूपलावण्य-लज्जालक्ष्मीनिधानशृंगारसरसीशतराजकन्याप्रवरनिकुम्भराजन्यवंशावतंस-महाराज्ञी श्रीकर्मवतीलखु-मा[११]देवीहृदयाधिनाथेन श्रीमहाराजाधिराज-[१२]महीमहेन्द्रश्रीकालसेनेन विरचिते संगीतराजे षोडशसाहस्र्यां संगीत-मीमांसायां[१३] पाठ्यरत्नकोशे अलङ्कारोल्लासे दोषगुणोल्लासः (दोषगुणपरीक्षणम्) ॥

पाठ्यरत्नकोषश्च समाप्ति समगात् ।
इति वितत[१४]मतीनामभिमत[१५]-सिद्धिरस्तु ॥

---

१. A. परांभूत । २. A. वशीद्रशेन । ३. B. गुर्ज । ४. K. श्रीत्रिसंध्याक्षेत्र । B. संध्यक्षेत्र । ५-५. K. में 'तुरंग' से पूर्व 'नर' नहीं है । ६. K. प्रसादाप्तासाद । ७. K. मुसल । ८. A. राजेन्द्रनन्दनेन । ९. A. श्रीसौभाग्यवती । १०. A. B. चमत्कारी । ११. A. B. लखुमा । १२. A. महाराजा॰ । B. इति महाराजा॰ । १३. A. मिमांसा । १४. A. B. विनत । १५. B. में 'मत' नहीं है ।

पद्यानुक्रमणिका

शुद्धिपत्रक

पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	६	निजकीर्त्तबीज०	निजकीर्त्तेर्बीज०
६		पद्यांक ४५, ४६, ४७, ४८	४६, ४७, ४८, ४९
२०	२	आरूपत्र०	आरूढपत्र०
	५	वेदमाग०	वेदमार्ग०
	१८	कीर्त्तिस्तस्भोन्नत०	कीर्त्तिस्तम्भोन्नत०
	२२	तामराजनेन्दनेन	तामराजनन्दनेन
२४	१४	षोडशसाहस्यां	षोडशसाहस्र्यां
२६	१९	श्रीकालतेनेन	श्रीकालसेनेन
३०	१	मृदुसज्ञकश्च	मृदुसंज्ञकश्च
	१२	सहस्थास्नुकम	सहस्थास्नुकम्
३४	१४	त्रय	त्रयं
३९	१७	षाडव	षाडवं
४७	७	अह्लयादिसंयुते	अंह्लयादिसंयुते
	१४	द्वितायांशादिक:	द्वितीयांशादिक:
	१६	शंभा:	शम्भो:
५४	१८	सख्याघाताद्	संख्याघाताद्
५५	६	ले	न्ले
६४	७	रचिताचलदुग	रजिताचलदुर्गेण
	,,	वीणवादनप्रवीणेनं	वीणावादनप्रवीणेन
७५	१७	परिकीर्त्ति ता	परिकीर्त्तिता
७६	२	४४	५४
८३	१३	सधिसंधानयुक्तं	सन्धिसन्धानयुक्तं
८४	११	धनुर्धोकार०	धनुर्धोकार०
	१२	कंकुमपुर	कुंकुमपुर
	१७	वशौकृत	वशीकृत
	१९	वैरिवोर०	वैरीवीर०
	२५	श्रीत्र्यबकेश्वर०	श्रीत्र्यम्बकेश्वर०
८५	१९	लुण्ठाकार्गल०	लुण्टाकार्गल०
	२३	मतनुवर्त्तना–	मतानुवर्त्तना०
८६	४	प्रत्यथि०	प्रत्यर्थि०
	६	वन्सुधरोद्धरणा०	वसुन्धरोद्धरणा०